A Daily News Magazine
इंदौर
शनिवार, 08 नवम्बर, 2025

सुबह सवेरे

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित
वर्ष 11 अंक 46, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

हरियाणा में कांग्रेस क्या वाकई 'वोट चोरी' के चलते हारी?

नीरज कुमार दुबे

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने हरियाणा विधानसभा चुनावों में भाजपा की जीत को वोटों की चोरी और हेरफेर का परिणाम बताया है। राहुल गांधी ने सवाल उठाते हुए कहा है कि कांग्रेस की स्पष्ट चुनावी जीत की संभावना के बीच भाजपा आखिर कैसे स्पष्ट बहुमत हासिल कर सकती है? राहुल गांधी ने भारतीय निर्वाचन आयोग और भाजपा पर जो सवाल उठाये हैं उससे पहले उन्हें इस बात का जवाब देना चाहिए कि आखिर क्यों कांग्रेस को हरियाणा विधानसभा में विपक्ष का नेता नियुक्त करने में एक साल का समय लग गया? आखिर क्यों कांग्रेस हरियाणा में हुड्डा परिवार से बाहर के किसी नेता को नेतृत्व नहीं सौंप पाती? राहुल गांधी को समझना होगा कि समस्या मतदाता सूची में नहीं बल्कि उसके राज्य नेतृत्व में है। सवाल उठता है कि हरियाणा की जिस जनता ने विधानसभा चुनावों से कुछ माह पहले लोकसभा चुनावों के दौरान कांग्रेस को अच्छा जन समर्थन दिया था उसने विधानसभा चुनावों में पार्टी से क्यों मुँह मोड़ लिया? सबसे पहली बात जो धरातल पर नजर आ रही थी वह यह थी कि कांग्रेस की हवा सिर्फ मीडिया में है जमीन पर नहीं। दूसरी बात यह थी कि हुड्डा गुट ने जिस तरह पूरी कांग्रेस पर कब्जा किया हुआ था उससे पार्टी के अन्य गुट बेहद नाराज थे। खासकर टिकटों के बंटवारे, चुनाव प्रचार में भूमिका आदि के मामले में जिस तरह कुमारी शैलजा के साथ कांग्रेस नेतृत्व ने भेदभाव किया था उसके चलते गुस्सा सिर्फ कांग्रेस कार्यकर्ताओं के मन में ही नहीं बल्कि समाज के भीतर भी दिख रहा था। खुद कुमारी शैलजा जिस तरह चुनावों के बीच नाराज चल रही थीं, उससे हुड्डा गुट के प्रति गुस्सा उभर रहा था। कई सीटों पर कांग्रेस के उम्मीदवार अपने प्रतिद्वंद्वी के खिलाफ सिर्फ चुनाव नहीं लड़ रहे थे बल्कि वह पार्टी के भीतर मौजूद दूसरे गुटों से भिड़ने में ज्यादा समय लगा रहे थे। उनके चुनाव कार्यालय में बैठे लोग अपने प्रतिद्वंद्वी से ज्यादा पार्टी के ही नेताओं के खिलाफ बयानबाजी करने में मशगूल रहते थे।

इसके अलावा, कांग्रेस ने कई ऐसे प्रत्याशियों को मैदान में उतारा था जो अपने पैसे के बलबूते ही जीत की उम्मीद कर रहे थे। मैंने अपनी आंखों से देखा कि ऐसे दो कांग्रेस उम्मीदवारों का सारा जोर सिर्फ फिल्मी सितारों से प्रचार करवाने में है। एक दो सभा के बाद वह अपनी आरामगाह में चले जाते थे और फिर शाम को ही प्रचार के लिए निकलते थे। प्रचार के लिए निकलने से पहले मुद्दों को समझने की बजाय उनका ज्यादा जोर 'अच्छा दिखने' पर रहता था। एक कांग्रेस उम्मीदवार तो ऐसे भी दिखे जोकि दिन में ही होश में नहीं रहते थे, ऐसे में प्रचार की कमान उनके बेटे ने संभाल रखी थी। एक कांग्रेस उम्मीदवार का सारा जोर सिर्फ इसी बात पर था कि मतदाताओं को कैसे 'खुश' किया जाये। हालांकि बातचीत में वह यह तक नहीं बता पा रहे थे कि उनके क्षेत्र की समस्याएं क्या हैं और उनकी पार्टी ने जो घोषणापत्र जारी किया है उसमें क्या वादे किये गये हैं।

कई विधानसभा क्षेत्रों में कांग्रेस उम्मीदवारों की सभाओं में बच्चों की अच्छी खासी संख्या दिखती थी। पूछने पर बच्चे बताते थे कि उनके परिजन तो भाजपा को वोट देंगे। यही नहीं, एक कांग्रेस उम्मीदवार की रैली में उम्मीदवार का जोरदार अंदाज में स्वागत करने वाली गांव की सरदारी ने भी मुझसे बातचीत में कहा कि गांव तो भाजपा को वोट देगा लेकिन सबका सम्मान करना हमारी परम्परा और संस्कृति है इसलिए किसी को निराश नहीं करते। इसके अलावा, हरियाणा में एक कांग्रेस उम्मीदवार ने पार्टी की सरकार बनने पर सरकारी नौकरियों के आवंटन को लेकर विवादित बयान दे डाला था जिससे कांग्रेस बैकफुट पर आ गयी थी। साथ ही एक बात पूरे हरियाणा में देखने को मिल रही थी कि हुड्डा पिता-पुत्र की रैलियों या रोड शो में आये कार्यकर्ता जिस तरह का हुड़दंग कर रहे थे उसके चलते लोगों के मन में खासतौर पर पिछड़ी जातियों के मन में खौफ पैदा हो रहा था। इस सबके अलावा, कांग्रेस हरियाणा में उसी अति-आत्मविश्वास की शिकार हुई जिसने 2024 के लोकसभा चुनाव में भाजपा को बड़ा नुकसान पहुँचाया था।

वहीं हरियाणा विधानसभा चुनावों में भाजपा की जीत के कारणों को देखें तो सबसे बड़ा और अहम कारण आरएसएस और भाजपा के बीच बेहतर समन्वय था। पूरे हरियाणा में कोई ऐसा विधानसभा क्षेत्र नहीं था जहां भाजपा के प्रवासी कार्यकर्ताओं की टोली चुनाव प्रबंधन से जुड़े कार्य नहीं संभाल रही हो। भाजपा उम्मीदवारों के चुनाव कार्यालय में पार्टी कार्यकर्ता सिर्फ इसी बात में मशगूल दिखते थे कि मतदाता पर्चियां मतदाताओं तक और बस्ते बूथ एजेंटों तक समय से पहुँच जायें। इसके अलावा, हरियाणा में लगभग सवा नौ साल तक मुख्यमंत्री रहे मनोहर लाल खट्टर के खिलाफ उपजी नाराजगी को भांप कर भाजपा नेतृत्व ने भले उन्हें मुख्यमंत्री पद से हटा कर दिल्ली की राजनीति में स्थापित कर दिया था लेकिन खट्टर का मन हरियाणा में ही लगा देख कर ऐन चुनावों के समय एक और बड़ा निर्णय लेते हुए पूरे चुनाव प्रचार अभियान से खट्टर का नाम और उनकी तस्वीर गायब कर दी गयी। भाजपा ने साधारण लोगों की तस्वीरों का इस्तेमाल चुनाव प्रचार सामग्री में किया। किसानों की तस्वीरों के साथ लिखा गया कि भाजपा के शीर्ष नेतृत्व ने प्रचार के अंतिम 10 दिनों में अपनी पूरी ताकत झोंक दी थी। पूरे चुनाव प्रचार के दौरान कांग्रेस ने 70 से ज्यादा रैलियां और जनसभाएं कीं। जवाब में भाजपा ने 150 सभाएं और रैलियां कर माहौल को पूरी तरह बदल दिया।

हरियाणा में कांग्रेस ने जमीन तक इस बात को पहुँचाने में सफलता हासिल कर ली थी कि 'कांग्रेस आ रही है, भाजपा जा रही है।' भाजपा ने इस हवा को धीमा करने के लिए परिवारवाद को मुद्दा बनाया और भूपिंदर सिंह हुड्डा के पिछले शासन की याद दिलाई जिससे माहौल बदलने लगा। कांग्रेस नेतृत्व ने भी बार-बार हुड्डा को ही कमान सौंपने के संकेत दिये जिससे फायदा होने की बजाय नुकसान होता दिखा क्योंकि हुड्डा को अपने पिछले कार्यकाल में सिर्फ रोहतक का सीएम माना जाता था। इसके अलावा, भाजपा ने जिस एकजुटता और रणनीति के साथ हरियाणा में काम किया उससे पार्टी चुनावी मुकाबले में तेजी से वापसी करती दिखी। ऐन चुनावों से पहले नायब सिंह सैनी की सरकार ने लोगों को बसों में फ्री पास की सुविधा समेत जो लाभ दिये या अपने घोषणापत्र में जो लुभावने वादे किये उससे भी जनता भाजपा की ओर आकर्षित हुई।

(प्रभासाक्षी डॉट कॉम पर प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

बिहार के लोग नहीं चाहते अब जंगलराज की वापसी

● अनुग्रह और जगदेव बाबू को नमन कर बोले पीएम मोदी

औरंगाबाद में प्रधानमंत्री ने बोला लालू-कांग्रेस पर हमला

औरंगाबाद (एजेंसी)। बिहार विधानसभा चुनाव के प्रचार के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शुक्रवार को औरंगाबाद पहुंचे। उन्होंने यहां एक विशाल जनसभा को संबोधित करते हुए अपने भाषण की शुरुआत स्वतंत्रता सेनानी अनुग्रह बाबू और जगदेव बाबू को नमन से की। प्रधानमंत्री ने कहा कि औरंगाबाद त्याग और बलिदान की धरती है। इस मिट्टी ने देश को कई महान व्यक्तित्व दिए हैं। उन्होंने कहा,यहां के लोगों के पक्के इरादों का ही परिणाम है कि दशरथ मांझी जैसे प्रेरणा स्रोत यहीं से निकले। पीएम मोदी ने इस क्षेत्र की सभी महान विभूतियों को श्रद्धा से नमन किया। पीएम मोदी ने कहा कि बिहार के लोगों ने विधासभा चुनाव के पहले चरण में अब तक का सबसे अधिक मतदान किया है। करीब 65 प्रतिशत मतदान यह दिखाता है कि जनता ने एनडीए की वापसी का बीड़ा खुद उठा लिया है। उन्होंने कहा, यह स्पष्ट संदेश है कि बिहार के लोग अब किसी भी कीमत पर जंगलराज की वापसी नहीं चाहते।

बिहार का नौजवान एनडीए के ईमानदार इरादों पर वोट दे रहा है

प्रधानमंत्री ने विपक्ष पर निशाना साधते हुए कहा कि राजद और कांग्रेस झूठे वादों से जनता को गुमराह कर रहे हैं, लेकिन बिहार का युवा अब जाग चुका है। उन्होंने कहा कि बिहार का नौजवान एनडीए के विकास और ईमानदार इरादों पर भरोसा करता है, न कि आरजेडी के पुराने झूठों पर। पीएम मोदी ने दावा किया कि पहले चरण के मतदान ने साफ कर दिया है कि फिर एक बार, एनडीए सरकार।

● **कांग्रेस और आरजेडी वाले सत्ता के लिए किसी को भी धोखा दे सकते हैं**- पीएम मोदी ने कहा कि कांग्रेस और आरजेडी वाले सत्ता के लिए किसी को भी धोखा दे सकते हैं। औरंगाबाद इसका सबसे बड़ा साक्षी है। यहां जो कुछ हुआ, उसे पूरा बिहार देख चुका है। कांग्रेस के प्रदेशाध्यक्ष का आरजेडी ने अपमान किया। आरजेडी ने कांग्रेस को वही सीटें दीं, जिन्हें वो पिछले 35-40 वर्षों से जीत नहीं पाई है। आरजेडी ने कांग्रेस के कनपटी पर कट्टा रखकर मुख्यमंत्री की उम्मीदवारी छीन ली। जो लोग अपने साथियों को धोखा दे सकते हैं, क्या वो बिहार की जनता के सगे हो सकते हैं प्रधानमंत्री ने कहा कि एनडीए सरकार हर जिले के लिए उसकी ताकत और जरूरत के हिसाब से योजना बना रही है। कहीं फूड प्रोसेसिंग इंडस्ट्री को बढ़ावा दिया जा रहा है, तो कहीं पर्यटन, टेक्नॉलॉजी और मैन्युफैक्चरिंग के क्षेत्र में नए अवसर बनाए जा रहे हैं। उन्होंने कहा, जहां जैसी क्षमता है, वहां उसी अनुसार इंडस्ट्री विकसित की जा रही है ताकि स्थानीय युवाओं को रोजगार मिल सके।

पूर्व डीजीपी मुस्तफा के खिलाफ होगी सीबीआई जांच

अकील, मृतक

चंडीगढ़ (एजेंसी)। यूपी के रहने वाले पंजाब के पूर्व पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) मोहम्मद मुस्तफा, मलेरकोटला से तीन बार की विधायक व पूर्व मंत्री रही उनकी पत्नी रजिया सुल्ताना, उनकी बेटी एवं पुत्रवधु के खिलाफ अब सीबीआई जांच करेगी। इनके खिलाफ सीबीआई ने हत्या एवं आपराधिक साजिश रचने की धारा के तहत एफआईआर दर्ज की है। इन चारों पर अकील अख्तर की हत्या का आरोप है। बता दें कि अकील की 16 अक्टूबर की देर रात पंचकूला में मौत हो गई थी। परिवार ने बताया था कि दवाइयों की ओवरडोज की वजह से मौत हुई। सहारनपुर में अंतिम संस्कार किया गया था। अंतिम संस्कार के बाद एक वीडियो सामने आया था। यह वीडियो 27 अगस्त का बताया गया था। वीडियो में अकील यह कहते दिखाई दिए कि परिवार के लोग उसे मारने के लिए साजिशें रच रहे हैं।

वंदे मातरम् ने देश में आजादी का जगाया अलख : मुख्यमंत्री

बंकिमचंद्र चटर्जी की आनंद मठ की रचना से हुआ क्रांति का शंखनाद

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि वंदे मातरम् हर भारतीय की चेतना का स्वर है। यह सिर्फ राष्ट्रगीत नहीं, हमारा प्राण गीत भी है। वंदे मातरम् वह उद्घोष है जिसने पराधीन भारत की धमनियों में स्वाभिमान का रक्त प्रवाहित किया। वंदे मातरम् ने देश में आजादी का अलख जगाया। वर्ष 1875 में स्वतंत्रता सेनानी बंकिमचंद्र चटर्जी की कलम से अमर गीत वंदे मातरम् की रचना हुई। उनके उपन्यास 'आनंद मठ' की इस रचना से क्रांति का शंखनाद हुआ। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की कल्पनाशीलता से आज वंदे मातरम् के 150वें स्मरणोत्सव के विशेष आयोजन हो रहे हैं। विभिन्न जिलों में प्रदेशवासी भी स्मरणोत्सव में भाग लेकर मातृभूमि के प्रति देशभक्ति और कृतज्ञता की भावना को अभिव्यक्त कर रहे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव राष्ट्रगीत वंदे मातरम् के 150वें स्मरणोत्सव पर शौर्य स्मारक में आयोजित राज्य स्तरीय समारोह को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कार्यक्रम का दीप प्रज्ज्वलित कर शुभारंभ किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने पुनर्मुद्रित पुस्तिका 'वंदे मातरम्-एक क्रांति गीत का साहित्येतिहासिक अध्ययन' का विमोचन किया। कार्यक्रम में पुलिस बैंड ने देशभक्ति गीत 'कदम-कदम बढ़ाए जा' की धुन प्रस्तुत की। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में नई दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डॉ. यादव भोपाल से वर्चुअली शामिल हुए। उन्होंने प्रधानमंत्री श्री मोदी के उद्बोधन का शौर्य स्मारक के राज्य स्तरीय कार्यक्रम से श्रवण किया। कार्यक्रम में वंदे मातरम् गीत की 120 साल प्राचीन दुर्लभ रिकॉर्डिंग प्रसारित की गई। इस अवसर पर हार्मनी ग्रुप के 150 कलाकारों ने वंदे मातरम् गीत के मूल स्वरूप के साथ ही तमिल, मलयालम तथा अन्य भारतीय भाषाओं में सांगीतिक प्रस्तुति दी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने इस अवसर पर उपस्थित जन समुदाय को स्वदेशी की शपथ दिलाई। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि हर देश का आजादी के संघर्ष का अपना इतिहास है। दुनिया के अधिकतर राष्ट्र गीत देशों के संघर्ष के समय पैदा हुए, चाहे फ्रांस हो या अमेरिका राष्ट्रगीतों की उत्पति कठिन समय में ही हुई। स्वतंत्रता सेनानी बंकिमचंद्र चटर्जी ने राष्ट्र गीत वंदे मातरम् में भारतीय संस्कृति के गौरवशाली अतीत को समाहित किया। इससे देशवासियों के मन में भारत माता के प्रति गर्व की अनुभूति और स्वयं की पहचान को अभिव्यक्त करने की क्षमता उत्पन्न हुई। वंदे मातरम् के शब्दों में भारत माता की तुलना तीन प्रमुख देवियों मां लक्ष्मी, मां सरस्वती और मां दुर्गा से की गई है। मां दुर्गा अन्याय और दासता के विनाश का प्रतीक है। माता लक्ष्मी भारत माता की समृद्धि और मां सरस्वती वैचारिक और आध्यात्मिक प्रकाश को प्रकट करती है। वंदे मातरम् में स्वतंत्रता सेनानी बंकिमचंद्र चटर्जी ने भारत को देवी त्रिमूर्ति के रूप में चित्रित किया। 19वीं सदी में लिखे गए इस गीत में भारत की सदियों पुरानी चेतना विद्यमान है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने जब 1896 में पहली बार इस गीत को स्वर दिया, तो वंदे मातरम् केवल गीत नहीं रहा, वह राष्ट्र की पुकार बन गया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने शहीद भगत सिंह, क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद के संघर्ष और शहादत का पुण्य स्मरण किया। उन्होंने कहा कि आजदी के साथ जब राष्ट्रगीत को अपनाने का समय आया तो देश को भ्रमित करने की कोशिश की गई। वंदे मातरम् के इतिहास को गहनता से जांचने की आवश्यकता है। स्वतंत्रता सेनानी और देश के पहले गृह मंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल ने कहा था कि हमें राष्ट्रगान के साथ राष्ट्रगीत वंदे मातरम् को भी महत्व देने की आवश्यकता है।

यह सिर्फ राष्ट्रगीत नहीं, हमारा प्राण गीत भी

शरद की सुबह

रुख़्सत हुआ तो आँख मिला कर नहीं गया
वो क्यूँ गया है ये भी बता कर नहीं गया
वो यूँ गया कि बाद-ए-सबा याद आ गई
एहसास तक भी हम को दिला कर नहीं गया
यूँ लग रहा है जैसे अभी लौट आएगा
जाते हुए चराग़ बुझा कर नहीं गया
बस इक लकीर खींच गया दरमियान में
दीवार रास्ते में बना कर नहीं गया
शायद वो मिल ही जाए मगर जुस्तुजू है शर्त
वो अपने नक़्श-ए-पा तो मिटा कर नहीं गया
घर में है आज तक वही ख़ुश्बू बसी हुई
लगता है यूँ कि जैसे वो आ कर नहीं गया
तब तक तो फूल जैसी ही ताज़ा थी उस की याद
जब तक वो पत्तियों को जुदा कर नहीं गया
रहने दिया न उस ने किसी काम का मुझे
और ख़ाक में भी मुझ को मिला कर नहीं गया
वैसी ही बे-तलब है अभी मेरी ज़िंदगी
वो ख़ार-ओ-ख़स में आग लगा कर नहीं गया
'शहज़ाद' ये गिला ही रहा उस की ज़ात से
जाते हुए वो कोई गिला कर नहीं गया।

- शहज़ाद अहमद

'सुप्रीम' आदेश, स्कूल-अस्पताल से हटाएं आवारा कुत्ते

● नसबंदी करके शेल्टर होम में रखें, जहां से पकड़ें वहीं न छोड़ें

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने आवारा कुत्तों को स्कूल, कॉलेज, अस्पताल और बस स्टैंड से दूर रखने के आदेश दिए हैं। कोर्ट ने शुक्रवार को कहा कि स्कूल-कॉलेज और अस्पतालों में बाड़ लगाई जाए, ताकि आवारा कुत्ते वहां न पहुंच सकें। कोर्ट ने कहा कि पकड़े गए आवारा कुत्तों को उसी जगह पर वापस नहीं छोड़ा जाएगा, जहां से उन्हें उठाया गया था। उन्हें शेल्टर होम में रखा जाएगा। कोर्ट ने सभी नेशनल और स्टेट हाईवे से आवारा पशु हटाने का आदेश भी दिया। सर्वोच्च अदालत ने सभी राज्यों के मुख्य सचिव इन आदेशों का सख्ती से पालन कराने को कहा है। इस मामले में 3 हफ्ते में स्टेटस रिपोर्ट और हलफनामा मांगने को कहा है। अगली सुनवाई 13 जनवरी को होगी। राजस्थान हाईकोर्ट ने 3 महीने पहले सरकारी एजेंसियों को सड़कों से आवारा जानवरों को हटाने का आदेश दिया था। कार्रवाई को प्रभावित करने वालों के खिलाफ एफआईआर के आदेश भी दिए थे। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि राजस्थान हाईकोर्ट का फैसला पूरे देश में लागू होगा।

याचिका लगाने वालों ने कहा- आदेश बेहद कठोर

सुप्रीम कोर्ट ने कहा था-सरकारी कैंपस में कुत्तों को खाना खिलाने के नियम बनेंगे सुप्रीम कोर्ट ने 3 नवंबर को कहा था कि वह सरकारी बिल्डिंग्स के कैम्पस में कुत्तों को खाना खिलाने के नियम के लिए निर्देश जारी करेगा। कोर्ट ने सभी राज्यों के मुख्य सचिव को व्यक्तिगत रूप से कोर्ट में पेश होने से भी राहत दी थी लेकिन चेतावनी दी थी कि हलफनामे में चूक हुई, तो उन्हें पेश होना पड़ेगा। यह मामला सुप्रीम कोर्ट ने 28 जुलाई को एक मीडिया रिपोर्ट पर स्वयं नोटिस में लिया था। इसमें दिल्ली में खासकर बच्चों के बीच,आवारा कुत्तों के काटने और उससे होने वाले रेबीज के मामलों की जानकारी दी गई थी।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 30 °c
न्यूनतम 25°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ शनिवार, 08 नवंबर 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

इजरायल की बादशाहत को तोड़ेगी सऊदी वायुसेना!

'अदृश्य' फाइटर जेट लेकर बनेगा पहला अरब देश

रियाद (एजेंसी)। खाड़ी का सबसे प्रभावशाली सुन्नी मुस्लिम सऊदी अरब पहला अरब देश बन सकता है जो अमेरिका से पांचवीं पीढ़ी का एफ-35 स्टील्थ फाइटर जेट खरीद सकता है। सऊदी प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान अमेरिका के दौरे पर जा रहे हैं और डोनाल्ड ट्रंप से इसको लेकर बातचीत होनी है। सऊदी प्रिंस ने ट्रंप से एफ-35 जेट मांगा है जिसका इस्तेमाल इजरायली वायुसेना ने ईरान में तबाही मचाने के लिए किया था। ईरान के साथ लड़ाई में इजरायली वायुसेना पूरी तरह से

भारी पड़ी थी और उसने जहां चाहा वहां हमले को अंजाम दिया था। ईरानी रडार बुरी तरह से फेल हुए थे। इसके बाद से अब अरब देशों में इसको लेकर मांग तेज हो गई है। तुर्की पहले से ही प्रयास कर रहा है कि एफ-35 उसे मिल जाए, वहीं कतर को लेकर भी चर्चा तेज हो गई है। मिडिल ईस्ट में अभी केवल इजरायल ही वह देश है जिसके पास यह दुनिया का सबसे आधुनिक फाइटर जेट है।

लालू का बेटा शहाबुद्दीन अमर रहे के नारे लगा रहा

भागलपुर में शाह बोले-ओसामा जीत गया तो दंगे होंगे

भागलपुर (एजेंसी)। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने भागलपुर में सभा को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि, क्या आप चाहते हैं कि फिर से जंगलराज आए। एक बार फिर से ये लोग चेहरा बदलकर वापसी करना चाहते हैं। यहां लालू का बेटा खुद ही शहाबुद्दीन अमर रहे के नारे लगा रहा है। एनडीए के खिलाफ जो ठगबंधन है वो बिखरा हुआ है। वो आपस में ही लड़ रहे हैं, लेकिन एनडीए मोदी-नीतिश के नेतृत्व में चुनाव लड़ रहा है। हम बिहार को बाढ़ मुक्त बनाएंगे। इससे पहले उन्होंने जमुई

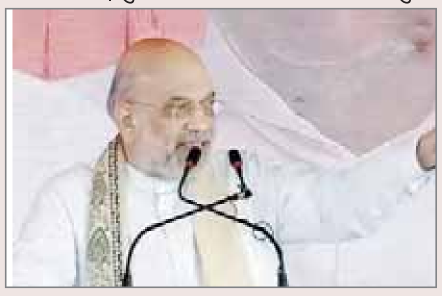

की सभा में कहा था कि,अगर वोट डालने में जरा भी गलती हुई। तीर या कमल छाप से जरा भी इधर-उधर गए तो फिर से जंगलराज आने वाला है। कल ही पहला फेज हुआ है। लालू-राबड़ी की पार्टी का सूपड़ा साफ हो गया है। पहले फेज में जनता ने डंके की चोट पर ऐलान कर दिया है, जंगलराज वेष बदलकर आना चाहता है, हम आने नहीं देंगे। अपने 30 मिनट के भाषण में शाह ने जंगलराज की याद दिलाई। लालू-तेजस्वी और सोनिया-राहुल पर जमकर हमला किया। शाह ने कहा, महिलाओं को 10 हजार रुपए रोजगार के लिए दे रहे हैं।

आरजेडी-कांग्रेस वाले बिहार में फिर जंगलराज लाना चाहते हैं

मोतिहारी में सीएम योगी बोले-पहले चारा खाया अब राशन खा जाएंगे

रक्सौल, मोतिहारी (एजेंसी)। यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ ने पूर्वी चंपारण के रक्सौल में सभा की। उन्होंने कहा कि, मैं युवाओं से कहूंगा कि किसी के बहकावे में आने की आवश्यकता नहीं है। ये नौकरी क्या देंगे जिन्होंने आपकी जमीन हड़प ली। ये लोग क्या नौकरी देंगे जो पशुओं का चारा खा जाते हों। ये केवल गरीब का राशन हड़पने के लिए धोखा देने का काम

महागठबंधन करने जा रहा है। योगी ने कहा कि, पहले फेज की वोटिंग में बिहार की जनता ने एकतरफा एनडीए के पक्ष में मतदान किया। बिहार में फिर से जंगलराज की वापसी नहीं होनी चाहिए। बिहार का गौरवशाली इतिहास है। भगवान बुद्ध को इस धरती पर ही ज्ञान मिला था। ये लोग फिर से लालटेन लेकर आए हैं। ये लालटेन नहीं है डकैती डालने का एक सर्टिफिकेट था। ये वही लोग हैं जिन लोगों ने लालटेन की धुंधली लाइट में जातीय संघर्ष कराया था। 2005 के पहले इन्होंने चारा हजम किया। अब आपका राशन हजम करने आए है। ये कभी नहीं होने देना है।

रोबोट आर्मी बनाएंगे मस्क, इससे गरीबी मिटाने का दावा

1 ट्रिलियन डॉलर वेतन पैकेज को शर्तों के साथ मंजूरी, रोबोट के साथ डांस किया

वॉशिंगटन (एजेंसी)। टेस्ला के शेयरधारकों ने सीईओ इलॉन मस्क के लिए अब तक का सबसे बड़ा वेतन पैकेज शर्तों के साथ मंजूर कर दिया है। यह पैकेज 1 ट्रिलियन डॉलर (लगभग 83 लाख करोड़) का है। ये पैकेज अब उन्हें दुनिया का पहला ट्रिलियनेयर बना सकता है। वोटिंग में 75 फीसदी से ज्यादा शेयरधारकों ने हां कहा, जिसमें मस्क के 15 फीसदी शेयर्स शामिल नहीं थे। वेतन पैकेज मंजूर होने के बाद मस्क ने शेयरधारकों को थैंक किया और स्टेज पर डांस भी किया। उन्होंने कहा,ये टेस्ला का नया चैप्टर नहीं, बल्कि नई बुक है। इलॉन मस्क का मिला ट्रिलियन डॉलर का पैकेज उन्हें 2018 में मिले 56 बिलियन डॉलर के पैकेज से करीब 16 गुना ज्यादा है। नया पैकेज 10 साल के लिए है। रोबोट्स पर बात करते हुए मस्क ने कहा, ये सबसे बड़ा प्रोडक्ट होगा, सेल फोन्स से भी बड़ा... हर इंसान को अपना पर्सनल रोबोट चाहिए होगा। उन्होंने दावा किया कि रोबोट्स सर्जन्स रिप्लेस कर देंगे, ग्लोबल पॉवर्टी खत्म करेंगे, इकोनॉमी रीशेप करेंगे। ऑप्टिमस टेस्ला का ह्यूमनॉइड रोबोट है, जो 2021 में अनाउंस हुआ और 2022 में पहला प्रोटोटाइप दिखाया गया। इसका मकसद फैक्ट्री वर्क, घरेलू काम या वो जॉब्स करना है जो इंसान नहीं करना चाहते। टेस्ला का फोकस अब रोबोट और ऑटोनॉमस कार्स पर ही है।

ऑप्टिमस रोबोट से गरीबी मिटाने का दावा किया था

बीते दिनों उन्होंने टेस्ला के तिमाही नतीजों की घोषणा के दौरान उनके ऑप्टिमस रोबोट की मदद से गरीबी मिटाने का दावा किया। उन्होंने कहा- ये गरीबी को खत्म करने और एडवांस्ड हेल्थकेयर को सबके लिए आसानी से उपलब्ध बनाने में बड़ा रोल निभा सकता है। रोबोट्स और ऑटोमेशन इंसानों के कंधों से मेहनत का बोझ हटा लेंगे, ताकि समाज हाई-वैल्यू वाले कामों पर ध्यान दे सके। मस्क ने कहा कि ऑप्टिमस एक दिन कमाल का सर्जन बन सकता है, और ये उनकी लॉन्ग-टर्म सोच का हिस्सा है। मस्क ने कहा भले ही ये दावे अभी सिर्फ कल्पना ही लगते हैं, लेकिन ये बातें दिखाती हैं कि टेस्ला इलेक्ट्रिक व्हीकल्स के बाद रोबोटिक्स को अपना अगला बड़ा प्रोडक्ट बना रही है।

भारत के खेल से खट्टे होंगे 'दुश्मन' के दांत

● 'चिकन नेक' की रक्षा के बना दिए 3 नए गढ़ ● पाक और बांग्लादेश गठजोड़ की निकलेगी हवा

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत ने बांग्लादेश के साथ अपनी संवेदनशील और लंबी सीमा पर सुरक्षा को मजबूत करने की दिशा में एक बड़ा कदम उठाया है। भारत ने शुक्रवार को तीन नई सैन्य छावनियों (गैरीसन) का उद्घाटन किया है। ये छावनियां असम के धुबरी के पास बामुनी, बिहार के किशनगंज, और पश्चिम बंगाल के चोपड़ा में स्थित हैं। ये तीनों गढ़ अब पूरी तरह से ऑपरेशनल हैं। इन्हें भारतीय सेना व सीमा सुरक्षा बल के लिए फोर्स मल्टीप्लायर यानी शक्ति में बढ़ोत्तरी माना जा रहा है। इन नई छावनियों का उद्देश्य 4096 किलोमीटर लंबी भारत-बांग्लादेश सीमा में मौजूद रणनीतिक कमजोरियों को दूर करना और किसी भी संभावित घुसपैठ या आपात स्थिति में तेजी से जवाब देने की क्षमता बढ़ाना है। इस कदम का एक अहम भू-राजनीतिक पहलू भी है।

नई दिल्ली की रणनीतिक तैयारी तेज

रक्षा सूत्रों के अनुसार, इन छावनियों के साथ भारत ने सीमा पर आधुनिक उपकरणों, सड़क नेटवर्क और निगरानी प्रणालियों की तैनाती भी बढ़ा दी है। यह सब भारत की बॉर्डर मॉडर्नाइजेशन ड्राइव के तहत किया जा रहा है। एक वरिष्ठ सैन्य अधिकारी ने कहा कि नई छावनियां न केवल हमारी तैनाती को मजबूत करेंगी बल्कि घुसपैठ या बाहरी गतिविधियों पर तुरंत प्रतिक्रिया देने में भी मददगार होंगी।

ढाका-रावलपिंडी समीकरण पर नजर

इस सामरिक सुदृढ़ीकरण की टाइमिंग भी बेहद अहम मानी जा रही है। कुछ ही हफ्ते पहले, बांग्लादेश के अंतरिम मुख्य सलाहकार प्रो. मोहम्मद यूनुस ने पाकिस्तान के शीर्ष सैन्य अधिकारियों की मेजबानी की थी। पाकिस्तान के ज्वाइंट चीफ्स ऑफ स्टाफ कमेटी के अध्यक्ष जनरल साहिर शामशाद मिर्जा ने ढाका पहुंचकर यूनुस से उनके जमुना निवास पर मुलाकात की। दोनों के बीच क्षेत्रीय कनेक्टिविटी और द्विपक्षीय सहयोग पर चर्चा हुई। हालांकि, भारतीय सुरक्षा हलकों में इस मुलाकात को सिर्फ कूटनीतिक औपचारिकता से कहीं अधिक माना जा रहा है। सूत्रों के अनुसार, ढाका और रावलपिंडी के बीच ऐसे और संवाद आने वाले हफ्तों में जारी रह सकते हैं, जिससे दिल्ली की सतर्कता और बढ़ गई है। भारत की ओर से सीमा पर नए गढ़ों का निर्माण न केवल सुरक्षा दृष्टिकोण से बल्कि राजनीतिक संदेश के रूप में भी देखा जा रहा है। विश्लेषकों का मानना है कि यह कदम स्पष्ट करता है कि भारत अपने पूर्वी मोर्चे पर किसी भी भू-राजनीतिक अस्थिरता या पड़ोसी देशों के बदलते समीकरणों को लेकर चुपचाप लेकिन सख्त तैयारी में जुटा हुआ है।

दबाव में नहीं आएंगे, सही वक्त पर होगा फैसला

● अमेरिका-पाकिस्तान के परमाणु परीक्षण पर राजनाथ सिंह की खरी-खरी

नई दिल्ली (एजेंसी)। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा दावा किया गया कि पाकिस्तान, चीन और रूस समेत कई देश परमाणु परीक्षण कर रहे हैं। दावे के साथ ही उन्होंने अमेरिकी सेना को भी परमाणु परीक्षण करने की मंजूरी दे दी। इसके साथ ही दुनियाभर में परमाणु परीक्षण करने की एक बार फिर रेस शुरू हो गई है। इस बीच रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि है भारत राष्ट्रीय सुरक्षा या परमाणु परीक्षण के मामलों में किसी अन्य देश के दबाव में नहीं आएगा। सरकार राष्ट्रहित को ध्यान में रखकर फैसले लेगी। अमेरिका और पाकिस्तान के संभावित परमाणु परीक्षण की चर्चाओं पर राजनाथ सिंह ने भारत का रुख स्पष्ट करते हुए कहा कि भारत किसी भी दबाव में नहीं आएगा। उन्होंने कहा कि भारत वही करेगा, जो उसे सही लगेगा , वह सही समय पर सही कदम उठाएगा। न्यूज-18 को दिए गए इंटरव्यू में राजनाथ सिंह ने ऑपरेशन सिंदूर के बारे जिक्र करते हुए कहा कि यह ऑपरेशन तभी रोका गया जब भारत ने नियंत्रण रेखा पर अपने सभी लक्ष्यों को हासिल कर लिया था। उन्होंने बताया कि भारतीय सेना की कार्रवाई के बाद पाकिस्तान के डीजीएमओ द्वारा भारत के डीजीएमओ को बार-बार सीजफायर की कॉल आ रही थी। सेना ने जब अपना ऑपरेशन पूरा कर लिया तो सीजफायर किया गया। उन्होंने कहा कि यदि आगे जरूरत पड़ती है तो भारत इसे फिर से करेगा। पाकिस्तान द्वारा ऑपरेशन सिंदूर के दौरान नागरिकों को नुकसान पहुंचाने के आरोप पर उन्होंने कहा कि भारत ने आतंकी ठिकानों को निशाना बनाया।

देश में कोई भी नहीं मानता है कि पायलट की गलती है

कैप्टन सुमित के पिता से बोला एससी, नोटिस जारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को एयर इंडिया बोइंग 787-8 ड्रीमलाइनर के पायलट-इन-कमांड, दिवंगत कैप्टन सुमीत सभरवाल के पिता से कहा कि देश में कोई भी यह नहीं मानता कि यह पायलट की गलती थी। जस्टिस सूर्यकांत और उज्जल भुइयां की पीठ ने यह टिप्पणी 91 वर्षीय पिता पुष्कर सभरवाल द्वारा दायर याचिका पर सुनवाई करते हुए की। सभरवाल ने इस दुर्घटना की स्वतंत्र और तकनीकी रूप से ठोस जांच की मांग की है, जिसकी निगरानी सुप्रीम कोर्ट के एक सेवानिवृत्त न्यायाधीश द्वारा की जाए। अहमदाबाद में हुए इस क्रैश में 260 लोगों की जान गई थी, जिसमें 241 यात्री और चालक दल के सदस्य शामिल थे। इस विमान हादसे की जांच को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को केंद्र सरकार, नागरिक उड्डयन महानिदेशालय, एयरक्राफ्ट एक्सीडेंट इन्वेस्टीगेशन ब्यूरो और अन्य संबंधित पक्षों को नोटिस जारी किया है। यह नोटिस दिवंगत कैप्टन सुमित सभरवाल के पिता पुष्कराज सभरवाल की याचिका पर जारी किया गया।

राहुल के वोट चोरी का जवाब होगा 'वोट जिहाद'

महाराष्ट्र में बीजेपी की नई रणनीति, 'खेला' की तैयारी

मुंबई (एजेंसी)। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने हरियाणा और महाराष्ट्र विधानसभा चुनावों में वोट चोरी के आरोप लगाए हैं। हाल ही में उन्होंने एक और प्रेस कॉन्फ्रेंस में हरियाणा को लेकर भी ऐसे ही दावे किए। इस बीच महाराष्ट्र में बीजेपी एक नई रणनीति पर काम कर रही है। इस रणनीति के तहत वोट चोरी के आरोपों का काउंटर करने के लिए 'वोट जिहाद' मुहिम शुरू की जा रही है। पार्टी के एक कैंपेन मैनेजर ने कहा, पिछले लोकसभा चुनाव में महा विकास आघाड़ी के संविधान-विरोधी नैरेटिव को हमने हल्के में लिया था, जिसका भारी नुकसान हुआ। अब हम विपक्ष के हर मुद्दे का जवाब देंगे और 'वोट जिहाद' मुहिम को जमीनी स्तर तक पहुंचाएंगे। जानकारी के मुताबिक, पिछले लोकसभा चुनाव में बीजेपी को महाराष्ट्र की 48 सीटों में से केवल 9 सीटों पर जीत मिली थी, जबकि 2019 में पार्टी ने 23 सीटें जीती थीं। अब अपनी नई मुहिम को धार देने के लिए बीजेपी राज्य की सभी 288 विधानसभा सीटों पर तालुका स्तर तक कार्यकर्ता नियुक्त करने की योजना बना रही है। इस अभियान में पूर्व मुंबई अध्यक्ष आशीष शेलार अहम भूमिका निभाएंगे।

'वोट जिहाद' पर विवाद तेज

बीजेपी की इस नई रणनीति पर आशीष शेलार ने कहा कि महा विकास आघाड़ी सिर्फ मराठी और हिंदू डुप्लीकेट वोटों की बात करती है। विपक्ष मुसलमानों के डुप्लीकेट वोटों पर चुप क्यों है। हमारे पास सबूत हैं कि कर्जत-जामखेड, मुंब्रा, कल्याण, मलाड वेस्ट और धारावी जैसे इलाकों में हजारों डुप्लीकेट मुस्लिम वोट हैं। राज्यभर में ऐसे लगभग 10.6 लाख वोट हो सकते हैं। बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष रविंद्र चवन ने भी इस पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा, जब वोट चोरी के आरोप सामने आए थे, बीजेपी ने सबसे पहले इस पर चिंता जताई थी और मतदाता सूची (इलेक्टोरल रोल) में संशोधन की मांग की थी। लेकिन विपक्ष ने जानबूझकर एक फर्जी नैरेटिव चलाकर बीजेपी की छवि को नुकसान पहुंचाने की कोशिश की।

वंदे मातरम् के विभाजन ने बोए विभाजन के बीज

● पीएम मोदी ने कहा-यह हर दौर में प्रासंगिक है, 1937 में इसके टुकड़े किए गए ● पीएम बोले-वंदे मातरम् भारत की आजादी का उद्घोष था, इसका एक हिस्सा हटा

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा- वंदे मातरम् भारत की आजादी का उद्घोष था। यह हर दौर में प्रासंगिक है। 1937 में वंदे मातरम् का एक हिस्सा हटा दिया गया था। उसके टुकड़े कर दिए थे। वंदे मातरम् के इस विभाजन ने देश के विभाजन के बीज बोए थे। राष्ट्र निर्माण के इस महामंत्र के साथ ये अन्याय क्यों हुआ। वही विभाजनकारी सोच आज भी देश के लिए चुनौती बनी हुई है। प्रधानमंत्री मोदी राष्ट्रगीत वंदे मातरम् के 150 साल पूरे होने के मौके पर नई दिल्ली के इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम में कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा- वंदे मातरम् के मूल रूप में लिखा है कि भारत माता सरस्वती, लक्ष्मी और दुर्गा हैं। जब दुश्मन ने आतंक के लिए जरिए भारत की सुरक्षा और सम्मान पर हमला करने का दुस्साहस किया, तो पूरी दुनिया ने देखा, नया भारत आतंक के विनाश के लिए दुर्गा भी बनना जानता है। प्रधानमंत्री ने राष्ट्र गीत के 150 साल पूरे होने के मौके पर एक डाक टिकट और सिक्का जारी किया। उन्होंने साल भर चलने वाले स्मरण समारोह का उद्घाटन किया और एक वेबसाइट भी लॉन्च की। पीएम ने वंदे मातरम् के सामूहिक गायन कार्यक्रम में भी भाग लिया। प्रधानमंत्री ने कहा- रवींद्रनाथ टैगोर ने एक बार कहा था कि बंकिमचंद्र का आनंदमठ सिर्फ एक उपन्यास नहीं है। यह स्वतंत्र भारत का एक सपना है। बंकिम बाबू के लिखे हर शब्द का गहरा मतलब है।

फर्जी बैंक खाते उपलब्ध कराने वाला पकड़ाया

इंदौर। क्राइम ब्रांच की ईओडब्ल्यू टीम ने एडवाइजरी ठगी और वित्तीय अपराधों की रोकथाम हेतु चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत एक बड़े गिरोह का पर्दाफाश किया। टीम ने विनायक मेहता (28) को फर्जी बैंक अकाउंट उपलब्ध कराने के आरोप में गिरफ्तार किया। जांच में खुलासा हुआ कि आरोपी विभिन्न फेक बैंक खातों की व्यवस्था कर ठगी के नेटवर्क को सक्रिय रूप से सहयोग दे रहा था। ये अकाउंट 'होनेस्ट टेक एडवाइजरी' नामक कंपनी द्वारा उपयोग किए जा रहे थे, जिनके माध्यम से ठगी की राशि का लेनदेन और प्रबंधन किया जाता था। आरोपी विनायक इन खातों के बदले 3 प्रतिशत कमीशन प्राप्त करता था। पुलिस ने आरोपी से रिमांड लेकर उसके सहयोगियों, बैंक खातों और डिजिटल नेटवर्क की जांच शुरू कर दी है।

6 पेटी अंग्रेजी शराब जब्त की गई

इंदौर। वैवाहिक सीजन में अवैध शराब की खरीद फरोख्त रोकने आबकारी विभाग ने कमर कस ली। वृत्त आंतरिक क्षेत्र-1 के प्रभारी आशीष जैन की टीम ने 5 नवंबर को प्राप्त गोपनीय सूचना के आधार पर घेराबंदी करते हुए एक तीन पहिया वाहन (ऑटो) क्रमांक एमपी-09-आरए-8722 को रोका। जांच के दौरान वाहन से 6 पेटी विदेशी मदिरा बरामद की गई, जिसे परिवहन किया जा रहा था। मौके पर ही आरोपी दिलीप पिता उमराव को गिरफ्तार कर लिया गया। आबकारी विभाग ने मदिरा और वाहन को जप्त करते हुए आरोपी के खिलाफ धारा 34(1)(क) एवं (2) के तहत प्रकरण दर्ज किया है। जब्त माल का कुल अनुमानित बाजार मूल्य 2,40,828 रुपए बताया गया है। आबकारी विभाग ने बताया कि यह कार्रवाई अवैध शराब के परिवहन, भंडारण और विक्रय पर रोक लगाने के लिए चलाए जा रहे विशेष अभियान का हिस्सा है। विभाग द्वारा आगे भी ऐसे मामलों पर सख्त निगरानी और कार्रवाई जारी रखी जाएगी।

26 बार तोड़े ट्रैफिक नियम, वाहन जब्त

इंदौर। ट्रैफिक नियमों का कड़ाई से पालन करने लगातार वाहन चालकों को जागरूक किया जा रहा है। इसके बावजूद वाहन चालक न सिर्फ नियमों को तोड़ रहे हैं, बल्कि चालान बनने पर राशि जमा करने से भी बचते हैं। रेडिसन चौराहे पर यातायात विभाग का अमला चेकिंग अभियान में लगा था। इसी दौरान उपनिरीक्षक बलराम सिंह तोमर ने चौराहे पर बिना हेलमेट वाहन चला रहे बाइक सवार को रोका। जांच के दौरान पता चला कि वाहन (एमपी-09-एक्सएल-7920) के चालक ने अब तक 26 बार यातायात नियमों का उल्लंघन किया है और किसी भी चालान का जुमार्ना जमा नहीं किया था। बार-बार नियम तोड़ने और चालान न भरने पर पुलिस ने बाइक को मौके पर ही जप्त कर यातायात थाना परिसर में खड़ा करवाया। बता दें, इस तरह के कई मामले सामने आ चुके हैं। सड़क पर कई वाहन ऐसे दौड़ रहे हैं जिनके कई चालान बन चुके हैं। यातायात विभाग के अनुसार, कुछ वाहनों के इतने चालान जनरेट हो जाते हैं, उनकी राशि वसूली के दौरान वाहन की मूल कीमत भी कम पड़ जाती है। वाहन की कीमत से अधिक चालान राशि होने पर चालक से बची हुई राशि नकद ली जाती है।

बेटे ने संपत्ति विवाद में पिता को पीटा

इंदौर। संपत्ति विवाद में बेटे ने अपने दोस्तों के साथ मिलकर पिता को जमकर पीटा। वहीं एक अन्य घटना में महिला के साथ युवक ने बेल्ट से मारपीट की। हीरानगर पुलिस को फरियादी विनोद (50) पिता रमेश गिरी निवासी आमरापुरी कॉलोनी भानगढ़ रोड ने बताया कि उसके बेटे अंकित गिरी, अंकित के दोस्त दोस्त लक्ष्मण सिंह और रोहित ने घर पर आए और गाली-गलौज करना शुरू कर दी। गाली-गलौज करने से मना किया तो मामला बढ़ गया और बात मारपीट तक पहुंच गई। दूसरी घटना जूनी इंदौर थाना क्षेत्र में हुई। पुलिस के मुताबिक दीपिका नामक महिला ने मामले में शुभम बामनिया के खिलाफ केस दर्ज कराया है। महिला ने बताया कि वह घर के बाहर खड़ी थी, तभी इलाके में रहने वाला शुभम और उसका भाई संदीप किसी बात पर बहस कर रहे थे। इस पर महिला ने उन्हें कहा कि जो भी बात करना है अपने घर के बाहर करो। इसी बात पर से शुभम ने महिला के साथ गाली-गलौज शुरू कर दी। मना करने पर उसने बेल्ट निकाला और महिला के साथ बेल्ट से मारपीट कर दी। जिससे महिला को पसली, कमर और दोनों कंधों पर अंदरूनी चोटें आई। महिला की शिकायत के बाद पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है।

चौकीदार को वाहन ने टक्कर मारी, मौत

इंदौर। शहर में रोज अनियंत्रित वाहन चलाने से लगातार सड़क हादसे हो रहे हैं। इसी क्रम में अस्पताल में भानजे को टिफिन देने जा रहे चौकीदार की हादसे में मौत हो गई। उनकी बाइक को अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दी थी। घटना कनाड़िया थाना क्षेत्र की है। मृतक की पहचान रामविलास (45 वर्ष) पिता मिश्रीलाल निवासी देवास नाका के रूप में हुई है। टक्कर इतनी भीषण थी कि रामविलास ने मौके पर ही दम तोड़ दिया। हादसे के बाद चालक वाहन सहित मौके से फरार हो गया। पुलिस ने मृतक का शव पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है और अज्ञात वाहन चालक के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है। पुलिस आसपास के सीसीटीवी फुटेज खंगालकर फरार चालक और वाहन की तलाश कर रही है। जूनी इंदौर थाना क्षेत्र में दर्दनाक हादसा हो गया, जहां बाइक फिसलने के कारण युवक की मौके पर ही मौत हो गई। पुलिस ने मामला दर्ज कर शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भिजवाया है। मृतक की पहचान इंदर पिता मुकेश (36) निवासी भोलाराम उस्ताद मार्ग के रूप में हुई है। वे अपनी बाइक से जूनी इंदौर इलाके से गुजर रहे थे। इसी दौरान उनकी बाइक अचानक फिसल गई, जिससे इंदर गंभीर रूप से घायल हो गए। आसपास के लोगों ने उन्हें तुरंत अस्पताल पहुंचाने की कोशिश की, लेकिन सिर में गंभीर चोट लगने के कारण रास्ते में ही उनकी मौत हो गई। पुलिस ने दोनों मामलों में मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है।

दहेज को लेकर भिड़े दूल्हा-दुल्हन के परिजन, फेरे से पहले लौट गई बारात

महंगी गाड़ी और विलासिता वाली सामग्री मांगी, थाने में रिपोर्ट दर्ज

इंदौर। शादी में दहेज नहीं मिला तो दूल्हे के नाराज परिजनों ने जमकर हंगामा किया। इस दौरान स्थिति इतनी बिगड़ गई कि दूल्हा और दुल्हन के परिजनों ने एक-दूसरे से जमकर मारपीट की, इसके बाद बारात बिना फेरे के ही लौट गई। दूल्हे के परिजन दहेज में महंगी गाड़ी और विलासिता पूर्ण सामग्री की मांग कर रहा था। यह सामग्री देने से दुल्हन के पिता ने इनकार किया तो विवाद हो गया। एमजी रोड पुलिस ने बताया कि कल्याण पिता श्रीकृष्णा गजोरे निवासी बाबू घनश्याम दास नगर केशरबाग रोड की बेटी की सगाई 14 जुलाई 2024 को हुई थी। सगाई में दुल्हन पक्ष की ओर से दूल्हे को सोने की अंगूठी और टीके में 51000 रुपए दिए थे। इसी बीच दोनों पक्षों में सहमति बनी थी कि वे बिना किसी दहेज के शादी करेंगे। मंगलवार को नंदलालपुरा स्थित कोष्ठी समाज धर्मशाला में बारात आई। बरात आने के बाद दुल्हन पक्ष की ओर से दूल्हे पक्ष का जोरदार स्वागत किया गया। शादी की रस्में चल रही थीं। दूल्हा-दुल्हन को स्टेज पर मेहमान आशीर्वाद दे रहे थे। तभी अचानक दूल्हे की मां ने दुल्हन के परिजनों से दहेज की बात कही। इस पर दुल्हन पक्ष के लोगों ने कहा कि दहेज नहीं लेने की बात आपके द्वारा कही गई थी फिर भी हैसियत के हिसाब से बेटी को दहेज दिया है। दूल्हे की मां ने दुल्हन पक्ष की एक भी बात नहीं सुनी और वह जिद पर अड़ी रही है कि दहेज नहीं मिला तो वह बारात लेकर वापस लौट जाएंगे।

स्कूल बसों में 'स्पीड गवर्नर सिस्टम' अनिवार्य

गति सीमा 40 किमी प्रति घंटा से अधिक न हो

बच्चों की सुरक्षा को लेकर स्कूल संचालकों ट्रांसपोर्ट अफसरों को सख्त हिदायत दी

इंदौर। पुलिस कमिश्नर स्कूल प्रशासकों, ट्रांसपोर्ट अधिकारियों के साथ हुई बैठक में स्कूल बसों की सुरक्षा पर सख्त हुए। उन्होंने कहा कि बच्चों की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता है। निर्देश दिए गए कि सभी स्कूल बसों में स्पीड गर्वनर सिस्टम लगवाया जाए। उनकी गति सीमा 40 किमी प्रति घंटा से अधिक न हो। बैठक में स्टूडेंट्स और लोगों की सुरक्षा को पहली प्राथमिकता देते हुए रोड पर बसों के सुरक्षित संचालन से जुड़े कई पहलुओं पर चर्चा की। पुलिस कमिश्नर संतोष कुमार सिंह ने स्कूल प्रशासकों और ट्रांसपोर्ट अधिकारियों से कहा कि स्कूल के बच्चों और लोगों की सुरक्षा और सुरक्षित यातायात हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता और जिम्मेदारी है। इसके लिए सुप्रीम कोर्ट द्वारा स्कूल प्रबंधन/बस चालकों एवं संचालकों के लिए जारी दिशा-निर्देश का पालन करें और सुरक्षित रूप से बसों का परिचालन करें। उन्होंने सभी को किसी भी प्रकार की घटना/दुर्घटना के बचाव के लिए दिशा-निर्देश दिए हैं।

ये दिशा-निर्देश दिए गए

- स्कूल नियमों के अनुसार अपनी बसों में जीपीएस ट्रैकिंग सिस्टम और सीसीटीवी कैमरे लगाना अनिवार्य रूप से सुनिश्चित करें।
- बसों में किसी भी आपात स्थिति के समय आवश्यक उपकरण जैसे- अग्निशमन यंत्र, फर्स्ट एड बॉक्स व अन्य जरूरी सामान आवश्यक रूप से हो।
- बसों में एक इमरजेंसी गेट जरूर हो, इसका भी ध्यान रखा जाए।
- बसों के फिटनेस और निर्धारित मानकों की मॉनिटरिंग की जाए, किसी भी स्थिति में खराब वाहनों का संचालन न किया जाए।
- ड्राइवरों के पास वैध और भारी वाहन चलाने के लिए उपयुक्त लाइसेंस हो, जिसकी वैधता की जांच भी की जाए।
- ड्राइवरों की शारीरिक स्थिति (आंखों की जांच आदि) की भी समय-समय पर जांच हो और उन्हें प्रशिक्षित भी किया जाए।
- चालक और परिचालक आपराधिक पृष्ठभूमि के तो नहीं हैं, इसके लिए पुलिस वेरिफिकेशन भी करवाया जाएं। वो नशा करके वाहन तो नहीं चलाते, इसकी भी निगरानी की जाए। पुलिस कमिश्नर ने सभी संबंधितों से इन निर्देशों का जिम्मेदारी पूर्वक पालन कर, सहयोग करने के की अपेक्षा की है। बैठक के दौरान बसों के सुरक्षित चलाने के लिए यातायात प्रबंधन पुलिस द्वारा एक चेक लिस्ट तैयार की गई है, जिसमें स्कूल संचालकों एवं बस के चालक व परिचालकों के लिए कुछ सामान्य निर्देश हैं, वो सभी को दी गई और इन निर्देशों का पालन किया जा रहा है, इसके लिए एक शपथ पत्र भी सभी से लिया गया है। यातायात पुलिस द्वारा अभियान चलाकर स्कूल बसों के सुरक्षित परिचालन के संबंध में जागरूकता व कार्रवाई की जाएगी। स्कूलों के ट्रांसपोर्ट अधिकारियों व प्रशासकों ने भी अपनी बात रखी और उक्त निर्देशों के पालन में पूर्ण सहयोग करने का आश्वासन भी दिया।

एमआर-9 से एमआईजी लिंक रोड के लिए 182 जगह बुलडोजर चला

28 बेघर परिवारों को प्रधानमंत्री आवासों में शिफ्ट किया गया

इंदौर। शहर में नगर निगम ने फिर एक बड़ी कार्रवाई की। गुरुवार को एमआर-9 से एलआईजी लिंक रोड चौड़ीकरण के तहत फिर बड़े पैमाने पर बुलडोजर से कार्रवाई की गई। निगम का अमला, पुलिस बल और भारी मशीनरी मालवीय नगर गली नंबर 2 क्षेत्र में पहुंची। अमले ने पहले दिए नोटिसों के चलते कई मकान मालिकों ने रिमूवल कार्रवाई से पहले ही खुद ही एक्शन लिया। घरों की दीवारें और बढ़े हुए हिस्से को तोड़ना शुरू किया। अधिकांश परिवारों ने रात में ही अपना सामान सुरक्षित जगह शिफ्ट कर दिया था, ताकि कार्रवाई के दौरान किसी तरह की परेशानी न हो। निगम अधिकारियों के अनुसार जिस हिस्से में कार्रवाई की गई वह लंबे समय से सड़क चौड़ीकरण में बाधक था। मास्टर प्लान के अनुरूप एमआर-9 से एलआईजी लिंक रोड को चौड़ा करने की योजना 35 वर्षों से लंबित थी, जिसे अब तेज़ी से पूरा किया जा रहा है। इससे पहले मंगलवार को इसी मार्ग की दूसरी दिशा में 140 से अधिक मकानों पर कार्रवाई की गई थी। गुरुवार को निगम की टीम 5 जेसीबी और 5 पोकलेन मशीनों के साथ क्षेत्र में पहुंची और मार्किंग के अनुसार निर्माणों को हटाने का काम शुरू किया। दोपहर तक कई मकानों के हिस्से गिरा दिए गए और बाकी पर रिमूवल की कार्रवाई जारी रही। निगम का कहना है कि काम पूरा होने के बाद मलबा हटाकर सड़क निर्माण की प्रक्रिया आगे बढ़ाई जाएगी।

28 परिवारों को शिफ्ट किया

सड़क चौड़ीकरण की जद में आए 28 परिवारों को प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत नए आवास में शिफ्ट किया गया है। निगम अधिकारियों ने बताया कि जिन परिवारों को शिफ्ट किया गया उनकी सूची पहले ही तैयार कर ली गई थी और उन्हें वैकल्पिक आवास की सुविधा उपलब्ध करा दी गई है। नगर निगम आयुक्त दिलीप कुमार यादव के निर्देश पर ये कार्रवाई की जा रही है। इस कार्रवाई के दौरान अपर आयुक्त रोहित सिसोनिया, भवन अधिकारी विनोद अग्रवाल, भवन निरीक्षक सचिन गहलोत, रिमूवल अधिकारी बबलू कल्याणे, निगम का रिमूवल अमला और पुलिस बल मौजूद रहा।

बरौनी-अहमदाबाद के बीच दो फेरे स्पेशल ट्रेन का परिचालन

बरौनी से 11-12, अहमदाबाद से 13-14 को चलेगी

इंदौर। त्योहारों के दौरान यात्रियों को सुविधा देने के उद्देश्य से तथा अतिरिक्त यात्रियों को समायोजित करने के लिए पश्चिम रेलवे रतलाम मंडल से होकर बरौनी से अहमदाबाद के मध्य स्पेशल ट्रेन का परिचालन किया जाएगा। गाड़ी संख्या 05261/05262 बरौनी-अहमदाबाद-बरौनी स्पेशल दोनों दिशाओं में 2-2 फेरे चलेगी। गाड़ी संख्या 05261 बरौनी अहमदाबाद स्पेशल, बरौनी से 11 एवं 12 नवंबर 2025 क्रमशः मंगलवार एवं बुधवार को 22.00 बजे चलेगी तथा तीसरे दिन 08.00 बजे अहमदाबाद रेलवे स्टेशन पहुँचेगी। इस ट्रेन का रतलाम मंडल के उज्जैन (00.25/00.30 गुरुवार एवं शुक्रवार), नागदा (01.10/01.12) एवं रतलाम (02.00/02.10) बजे आगमन/प्रस्थान होगा। इसी प्रकार वापसी में गाड़ी संख्या 05262 अहमदाबाद बरौनी स्पेशल, अहमदाबाद से 13 एवं 14 नवंबर 2025 क्रमशः गुरुवार एवं शुक्रवार को 14.20 बजे चलेगी तथा दूसरे दिन 19.30 बजे बरौनी रेलवे स्टेशन पहुँचेगी।

इस ट्रेन का रतलाम मंडल के रतलाम (20.20/20.25, गुरुवार एवं शुक्रवार), नागदा (21.00/21.02) एवं उज्जैन (22.00/22.05) बजे आगमन/प्रस्थान होगा। इस ट्रेन का दोनों दिशाओं में समस्तीपुर, हाजीपुर, पाटलिपुत्र, दानापुर, आरा, बक्सर, पं. दीनदयाल उपाध्याय, प्रयागराज छिवकी, मानिकपुर, सतना, कटनी मुड़वारा, दमोह, सागर, बीना, संत हिरदाराम नगर, उज्जैन, नागदा, रतलाम, गोधरा, छायापुरी एवं आनंद स्टेशनों पर ठहराव दिया गया है। यह ट्रेन थर्ड एसी इकोनॉमी, स्लीपर एवं सामान्य श्रेणी कोच के साथ चलेगी।

ऑनलाइन पेमेंट लेकर करता था ड्रग्स सप्लाय, 22 ग्राम ड्रग जब्त

इंदौर। पुलिस द्वारा चलाया गया नशे से दूरी है जरूरी अभियान पूरी तरह विफल साबित हो गया है। रोजाना शहर में मादक पदार्थ बिक रहा है। पुलिस चंद तस्करों पर कार्रवाई कर वाहवाही लूटने में लगी रहती है। क्राइम ब्रांच ने ऐसे तस्कर को गिरफ्तार किया है, जो आनलाइन पेमेंट लेने के बाद ड्रग्स उपलब्ध कराता था। उसके कब्जे से 22 ग्राम एमडी ड्रग्स बरामद की है। वह टीन शेड की दुकान की आड़ में मादक पदार्थ बेचता था। एडिशनल डीसीपी क्राइम ब्रांच राजेश दंडोतिया ने बताया कि पहले शहीम पिता सलीम खान और मोहम्मद शारिक पिता मोहम्मद शकील निवासी बेटमा को गिरफ्तार किया गया था। इनके पास से बरामद 22 ग्राम ड्रग्स (कीमत करीब तीन लाख रुपए) बरामद की थी। पूछताछ में दोनों ने बताया था कि यह ड्रग्स परवेज खान के माध्यम से मिलती थी। इसके बाद पुलिस ने धार निवासी परवेज खान को गिरफ्तार किया। आरोपी जावरा से ड्रग्स दिलवाता था और इसके बदले में उसे अच्छा कमीशन मिलता था। पुलिस ने पिछले दिनों बाणगंगा थाना क्षेत्र में भागीरथपुरा निवासी नीरज यादव को 10.23 ग्राम ब्राउन शुगर के साथ गिरफ्तार किया था। आरोपी पर पहले से सात आपराधिक मामले दर्ज हैं। रावजी बाजार पुलिस ने तनमय निवासी नंदानगर को 12.23 ग्राम ब्राउन शुगर के साथ पकड़ा था। उसके खिलाफ एक दर्जन आपराधिक मामले पंजीकृत हैं, जिनमें हत्या और हत्या के प्रयास शामिल हैं।

बाइक टकराने के बाद विवाद, चाकू मारा

इंदौर। धरमपुरी रोड पर आपस में बाइक टकराने के बाद विवाद में बदमाशों ने युवक पर चाकू से हमला कर दिया। युवक को कमर और गले में गंभीर चोट आई है। सांवेर पुलिस के अनुसार, घटना 4 नवंबर को दोपहर करीब 12.30 बजे धरमपुरी रोड पर हुई। घायल युवक की पहचान विनोद चौधरी (38) के रूप में हुई। घायल ने बताया कि वह अपने दोस्त संतोष के साथ बाइक से सांवेर से जनरेटर लेकर इंदौर लौट रहा था। जब वह शक्तिमान चौराहा धरमपुरी पहुंचा, तभी पीछे से आए दो अज्ञात नकाबपोश आरोपियों ने उनकी बाइक को जानबूझकर टक्कर मार दी। जब विनोद ने टक्कर मारने का कारण पूछा तो पीछे बैठे आरोपी ने तुरंत चाकू निकाल लिया। यह देखकर विनोद का दोस्त संतोष डरकर मौके से कूदकर भाग गया। इससे पहले कि विनोद कुछ समझ पाता, आरोपी ने उस पर चाकू से वार कर दिए।

सीएम हेल्पलाइन की संभाग में 54 हजार शिकायतें लंबित, जीरो पेंडेंसी के निर्देश

पहली कलेक्टर्स कांफ्रेंस में कमिश्नर की हिदायत, कई विभागों की समीक्षा

इंदौर। कमिश्नर डॉ सुदाम खाडे की अध्यक्षता में गुरुवार को पहली कलेक्टर्स कॉन्फ्रेंस आयोजित हुई, जिसमें सीएम हेल्पलाइन की लंबित 54 हजार शिकायतों पर विशेष चर्चा की गई। डॉ. खाडे ने निर्देश दिए कि सभी कलेक्टर्स शिकायतों को जीरो पेंडेंसी पर लाने के लिए विशेष प्रयास करें और बेहतर प्रदर्शन करने वाले जिलों को अतिरिक्त अंक दिए जाएंगे।

बैठक में बताया गया कि इंदौर संभाग में नामांतरण के 11,713, सीमांकन के 24,291 और बंटवारे के 11,736 प्रकरणों का निराकरण किया गया है। झाबुआ जिले में नामांतरण के सर्वाधिक 88त्न प्रकरण निपटाए गए। फार्मर रजिस्ट्री में 10 लाख से अधिक किसानों का पंजीयन हो चुका है। भू-अर्जन और पुनर्वास के 446 प्रकरणों में से 246 में अवार्ड पारित कर 25,940.69 लाख रुपये मुआवजा दिया गया। कमिश्नर ने तहसीलदारों को सप्ताह में दो दिन फील्ड विजिट करने और लंबित राजस्व प्रकरणों का समयसीमा में निराकरण करने के निर्देश दिए। साथ ही नर्मदा विकास प्राधिकरण से जुड़े डूब प्रभावितों के पट्टों की रजिस्ट्री शीघ्र प्रारंभ करने के लिए एसडीएमों को अधिकृत किया गया। बैठक में महिला सुरक्षा, नशामुक्त अभियान, बोर्ड परीक्षा परिणाम सुधार, जल जीवन मिशन, ई-ऑफिस संचालन, प्राकृतिक खेती और सिंहस्थ-2028 से जुड़ी योजनाओं की भी समीक्षा की गई। कॉन्फ्रेंस में सभी जिलों के कलेक्टर्स, सीईओ, और विभिन्न विभागों के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

बिना हेलमेट वालों के 300 दिन में पौने 56 हजार के चालान बने

नागरिकों को दे चुके समझाइश, अब 8 नवंबर से सख्ती

इंदौर। सड़क सुरक्षा को लेकर यातायात पुलिस लगातार जागरूकता अभियान चला रही है। नागरिकों को यातायात नियमों का पालन कराने और दुर्घटनाओं से बचाव के उद्देश्य से विभिन्न जनजागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इसी क्रम में जनवरी से अक्टूबर तक 300 दिनों में यातायात पुलिस ने बिना हेलमेट दोपहिया वाहन चलाने पर 55,873 चालकों पर चालानी कार्रवाई की। यह अभियान 'हेलमेट पहने सुरक्षित रहें' अभियान के तहत चलाया गया था। इसमें दो पहिया चालकों को हेलमेट के महत्व और सड़क सुरक्षा के प्रति जिम्मेदारी समझाई गई।

पुलिस का कहना है कि दोपहिया वाहन चलाते समय हेलमेट पहनना न केवल कानून की मांग है, बल्कि यह जीवन की सुरक्षा के लिए भी आवश्यक है। सड़क दुर्घटनाओं में होने वाली मौतों का बड़ा कारण सिर पर लगने वाली चोटें होती हैं, जिन्हें हेलमेट पहनकर काफी हद तक रोका जा सकता है। हेलमेट पहनना इसलिए जरूरी है कि हेलमेट सिर को गंभीर चोटों से बचाता है। इससे दुर्घटना होने पर मृत्यु की संभावना लगभग 70त्न तक कम हो जाती है। यह सड़क सुरक्षा नियमों का पालन और जिम्मेदार नागरिक होने का प्रतीक है। परिवार और समाज के लिए आपकी सुरक्षा सबसे महत्वपूर्ण है।

फिर शुरू होगी मुहिम

शासन के आदेश पर एक बार फिर हेलमेट को लेकर पुलिस ने मुहिम शुरू कर दी है। इस बार मुहिम के तहत आज शुक्रवार 7 नवंबर तक समझाइश का क्रम चलेगा। इसके बाद कल 8 नवंबर से पुलिस फिर मुहिम का श्रीगणेश करेगी। दोबारा शुरू होने वाली मुहिम में वाहन के पीछे बैठने वालों को भी हेलमेट लगाना अनिवार्य रहेगा। यह मुहिम रेडिसन चौराहा, विजयनगर, बड़ा गणपति और भंवरकुआ में प्रारंभिक रुप से चलाई जाएगी। इसके बाद पूरे शहर में सुबह से रात तक अभियान चलेगा। मनोज कुमार खत्री, सहायक पुलिस आयुक्त, ट्रैफिक विभाग। 7 नवंबर तक हेलमेट की अनिवार्यता को लेकर समझाइश का दौर चलेगा। इसके बाद 8 नवंबर से यह मुहिम तेजी से शुरू होगी।

मोहल्ला मीटिंग, नागरिक संवाद में बदमाशों की जानकारी की अपील

धरपकड़ में 29 गुंडों और 21 चाकूबाजों को पकड़ा गया

इंदौर। अपराधियों की जानकारी लेने पुलिस लगातार आमजनों के बीच पहुंच रही है। इसी क्रम में गुरुवार को जोन 2 में मोहल्ला मीटिंग के साथ नागरिक संवाद कार्यक्रम आयोजित किया। इस दौरान कई बदमाशों को पकड़ा भी गया। अभियान के दौरान अब तक 29 गुंडों, 21 चाकूबाजों और 18 निगरानी में रखे गए बदमाशों की जांच की गई। संदिग्धों को थाने लाया गया, जिनमें 4 पर कार्रवाई की गई और चिन्हित अपराधियों पर कुल 5 कार्रवाई हुई। इसके अलावा 31 हॉटस्पॉट और 25 शैडो एरिया की निगरानी की गई। शराब पीकर वाहन चलाने वालों के खिलाफ 32 वाहनों को जब्त किया गया, 29 वाहनों के अन्य उल्लंघनों पर कार्रवाई की गई और सार्वजनिक स्थानों पर शराब पीने व नशा करने वाले 10 व्यक्तियों को पकड़ा गया। जोन 2 के सभी थाना क्षेत्रों में ड्रोन पेट्रोलिंग से संदिग्ध गतिविधियों पर रियल-टाइम निगरानी की जा रही है। इस दौरान थाना लसूडिया, खजराना, विजय नगर, एमआईजी और परदेशीपुरा क्षेत्र के हॉटस्पॉट और सुनसान इलाकों में पुलिस ने विशेष निगरानी रखी और कई संदिग्धों से पूछताछ की। खुले में नशा करने वाले लोगों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की गई। मोहल्ला स्तर पर जनसंवाद और मोहल्ला समितियों की बैठकें आयोजित की गईं। वरिष्ठ पुलिस अधिकारी सीधे जनता से मिलकर अपराध नियंत्रण, नशे के दुष्प्रभाव और अवैध गतिविधियों की सूचना देने के तरीकों के बारे में जागरूक कर रहे हैं। इस दौरान जनता को क्राइम वॉच हेल्पलाइन नंबर 70491-08283 सहित अन्य हेल्पलाइन नंबरों की जानकारी भी दी गई।

संपादकीय

ममदानी के सामने चुनौतियां

भारतवंशी और समाजवादी विचारों के जोहरान ममदानी ने दुनिया के सबसे बड़े शहरों में से एक न्यूयॉर्क के मेयर का चुनाव तो शानदार तरीके से जीत लिया है, लेकिन दो माह बाद पद संभालने के बाद उनके सामने कई चुनौतियां होंगी, जिनसे वो कैसे निपटते हैं, यह देखने की बात है। जोहरान भारतीय मूल के होने के साथ-साथ अमेरिका की आर्थिक राजधानी न्यूयॉर्क के सबसे युवा और पहले मुस्लिम मेयर भी हैं। डेमोक्रेटिक पार्टी के प्रत्याशी के रूप में 34 साल के ममदानी ने राष्ट्रपति ट्रंप की पार्टी के कर्टिस स्लिवा को तीसरे स्थान पर धकेलते हुए चुनाव में 50.4 फीसदी वोट हासिल किए। दूसरे नंबर पर निर्दलीय एंड्रू कुओमो रहे। जोहरान का जीतना ट्रंप के लिए तगड़ा झटका है। उन्हें एशियाई वोटरों का समर्थन तो मिला ही, साथ ही राष्ट्रपति चुनाव में डेमोक्रेटिक पार्टी की हार के बाद यह डेमोक्रेटों के बढ़ते जनसमर्थन का भी संकेत है। गौरतलब है कि जोहरान क्वामे ममदानी का जन्म साल 1991 में युगांडा की राजधानी कंपाला में हुआ था। ममदानी के पिता ने उन्हें एक क्रांतिकारी और घाना के पहले प्रधानमंत्री क्वामे एन्क्रूमा के नाम पर मिडिल नेम क्वामे दिया था। जोहरान मशहूर भारतीय-अमेरिकी फ़िल्म निर्देशक मीरा नायर और कोलंबिया यूनिवर्सिटी के जाने-माने प्रोफ़ेसर महमूद ममदानी के बेटे हैं। युगांडा की राजधानी कंपाला में उन्होंने अपने शुरुआती दिन बिताए और फिर पांच साल की उम्र में दक्षिण अफ्रीका आ गए। सात साल की उम्र में वे न्यूयॉर्क आ गए। उन्होंने ब्रॉन्क्स हाई स्कूल ऑफ़ साइंस से पढ़ाई की। 2014 में उन्होंने बोडन कॉलेज से 'बैचलर इन अफ्रीकन स्टडीज़' में ग्रेजुएशन की डिग्री हासिल की। फिर उन्होने अमेरिकी नागरिकता हासिल कर ली। जोहरान ने सक्रिय राजनीति में क़दम रखने से पहले एक सामाजिक कार्यकर्ता के तौर पर काम किया। वे क्वींस, न्यूयॉर्क में बतौर फॉरक्लोज़र काउंसलर (घर ज़ब्ती मामलों में सलाहकार) काम करते थे। ममदानी कम आय वाले परिवारों की मदद करते थे जो, आर्थिक तंगी के कारण अपने घर खोने की कगार पर थे। उन्होंने देखा कि जिन परिवारों की मदद वह कर रहे थे, उनकी दिक्कतें केवल आर्थिक नहीं बल्कि नीतिगत भी थीं। इसी अनुभव ने उन्हें सक्रिय राजनीति की ओर प्रेरित किया ताकि वह नीतियां बदल सकें जो आम लोगों को प्रभावित करती हैं। 2020 में उन्होंने पहला चुनाव न्यूयॉर्क असेंबली के 36वें डिस्ट्रिक्ट (एस्टोरिया, क्वींस) से डेमोक्रेटिक सोशलिस्ट पार्टी के टिकट पर लड़ा। ज़ोहरान ममदानी पहली बार में ही जीत गए और न्यूयॉर्क स्टेट असेंबली में पहले दक्षिण एशियाई और पहले सोशलिस्ट प्रतिनिधि बने। यकीनन जोहरान की जीत ऐतिहासिक है। खासकर तब कि जब ट्रंप ने खुलेआम जोहरान की आलोचना करते हुए उन्हें कम्युनिस्ट बताया था और कहा था कि अगर जोहरान जीते तो वो न्यूयॉर्क की आर्थिक मदद रोक देंगे। वैचारिक दृष्टि से उन्हें प्रगतिशील और वामपंथी विचारों का अनुयायी माना जाता है। ममदानी जो वादे करके सत्ता में आए हैं, उन्हें पूरा करना बड़ी चुनौती होगी, क्योंकि ट्रंप प्रशासन उनके काम में अड़ंगे डाल सकता है। वैसे न्यूयॉर्क का मेयर काफी शक्तिशाली होता है। 120 अरब डॉलर का बजट उनके पास होगा तथा 3 लाख कर्मचारी होंगे। जिनमें 30 हजार पुलिस कर्मी भी शामिल हैं। जोहरान ने गरीबों के लिए मकान, किराए कम करने, फ्री में बस यात्रा तथा निर्धन लोगों की मदद करने जैसे कई वादे किए हैं। शायद इसीलिए उन्हें निम्न और मध्यह वर्ग का भारी समर्थन मिला है। लेकिन अमेरिका जैसे पूंजीवादी देश में इन वादों को पूरा करना आसान नहीं है। हो सकता है कि ममदानी का सीधे ट्रंप से टकराव हो। अगर ममदानी अपने वादे पूरे करने में कामयाब हो जाते हैं तो अमेरिका में वो नया इतिहास रच देंगे।

सीमांचल से चंपारण तक दूसरे चरण का दारोमदार

कांग्रेस की ओर से राहुल गांधी आज औरंगाबाद तथा वजीरगंज में जनसभा को संबोधित कर रहे हैं। वे बेरोजगारी, महंगाई और किसानों की समस्याओं को प्रमुखता से उठा रहे हैं, विपक्ष की सरकार बनने पर बदलाव की संभावना को हवा दे रहे हैं। बिहार के नेता विपक्ष तेजस्वी यादव भी आज पश्चिम चंपारण, पूर्वी चंपारण, शिवहर और सीतामढ़ी समेत कई स्थानों पर जनसभाएं कर रहे हैं। उनकी हर रैली में रोजगार, शिक्षा, और सामाजिक-आर्थिक न्याय के वादे गूंज रहे हैं। महागठबंधन की ओर से जनसभा का फोकस युवाओं, किसानों और पिछड़े वर्ग के मतदाताओं पर है।

नजरिया

अजय कुमार
लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

बिहार विधान सभा के लिये प्रथम चरण के मतदान के बीच नेताओं ने 11 नवंबर को दूसरे चरण के मतदान के लिए भी बिसात बिछा दी है। दूसरे चरण के मतदान के लिये आज सभी राजनैतिक दल चुनावी मैदान में प्रचार के लिये दिग्गज नेताओं के साथ जनता के बीच उतर रहे हैं। चुनाव प्रचार ने रफ्तार पकड़ ली है, हर ओर जनसभाएं, रैलियां और नेताओं के काफिलों की हलचल है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अररिया जिले के फारबिसगंज और भागलपुर के हवाई अड्डा मैदान में विशाल जनसभाओं को संबोधित किया हैं। इन सभाओं में मोदी मतदाताओं से लोकतंत्र को मजबूत करने, एनडीए सरकार के विकास कार्यों और राष्ट्रहित के मुद्दों को सामने रखते हुए मतदान की अपील कर रहे हैं। इसके अलावा वे सीमांचल और पूर्वी बिहार के मतदाताओं को जोड़ने के लिए इस रणनीतिक दौरे को महत्व दे रहे हैं। मोदी अगले दो दिनों में भभुआ, औरंगाबाद, सीतामढ़ी और पश्चिमी चंपारण में भी सभाएं करने वाले हैं, जिससे सत्ता पक्ष की चुनावी रणनीति स्पष्ट दिख रही है।

कांग्रेस की ओर से राहुल गांधी आज औरंगाबाद तथा वजीरगंज में जनसभा को संबोधित कर रहे हैं। वे बेरोजगारी, महंगाई और किसानों की समस्याओं को प्रमुखता से उठा रहे हैं, विपक्ष की सरकार बनने पर बदलाव की संभावना को हवा दे रहे हैं। बिहार के नेता विपक्ष तेजस्वी यादव भी आज पश्चिम चंपारण, पूर्वी चंपारण, शिवहर और सीतामढ़ी समेत कई स्थानों पर जनसभाएं कर रहे हैं। उनकी हर रैली में रोजगार, शिक्षा, और सामाजिक-आर्थिक न्याय के वादे गूंज रहे हैं। महागठबंधन की ओर से जनसभा का फोकस युवाओं, किसानों और पिछड़े वर्ग के मतदाताओं पर है।

बसपा प्रमुख मायावती भी आज यूपी से सटी सीमांत सीटों पर रैलियां कर रही हैं। उनका पूरा जोर दलित वोटरों को साधने, पूर्व सरकारों की विफलताओं और बसपा की बिना प्रचार खर्च, सत्ता पर भरोसे की रणनीति के इर्द-गिर्द घूम रहा है। एनडीए के ओर से गृह मंत्री अमित शाह पश्चिम चंपारण और पूर्वी चंपारण में हुंकार भर रहे हैं, वहीं जेडीयू नेता व मुख्यमंत्री नीतीश कुमार भी लगातार सभाएं कर रहे हैं, मुख्य रूप से अपने सुशासन मॉडल और सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का बखान कर रहे हैं। बीजेपी अध्यक्ष जेपी नड्डा भी चंपारण और मधुबनी में सभाएं कर एनडीए सरकार की उपलब्धियां गिना रहे हैं, जबकि विपक्ष उनके शासनकाल में हुई अराजकता, बेरोजगारी और पलायन के मुद्दों पर कटघरे में खड़ा कर रहा है।

ऐसा पहली बार हो रहा है जब चुनाव के दूसरे चरण में इतने बड़े-बड़े नेता एक ही दिन, अलग-अलग जिलों में जनता के बीच जाकर संवाद कर रहे हैं। हर रैली, हर जनसभा मतदाताओं को रिझाने की होड़ को दिखाती है। गांव, कस्बों से लेकर शहरों तक, चौपालों और मैदानों में लोग सुबह से नेताओं की रैलियों का बेसब्री से इंतजार करते हैं। महिलाएं, युवा, किसान, अल्पसंख्यक हर वर्ग की हिस्सेदारी इन सभाओं में देखी जा सकती है तथा उनके सवालों और वोटों का महत्व सभी दल अच्छे से समझ रहे हैं।

दूसरे चरण की वोटिंग में जिन प्रमुख नेताओं के भाग्य का फैसला होना है, उनमें अनेक बड़े चेहरे शामिल हैं। एनडीए से कई मंत्री, पूर्व मंत्री और ताकतवर विधायक, महागठबंधन से वरिष्ठ विधायक, नवोदित युवा उम्मीदवार और पूर्व आईएएस, आईपीएस अधिकारी तक इस बार मैदान में हैं। खासकर सीमांचल, मिथिलांचल, कोशी, चंपारण, मगध अंचल की सीटों पर भाजपा-जदयू, आरजेडी, कांग्रेस, बसपा, वाम दल, एआईएमआईएम जैसी पार्टियों के बड़े चेहरों की प्रतिष्ठा दांव पर लगी है। बिहार में दूसरे चरण में 20 जिलों की 122 सीटों पर वोट डाले जाएंगे जिनमें 1300 से ज्यादा उम्मीदवार अपनी किस्मत आजमा रहे हैं। इनमें से कई विधायक, पूर्व विधायक, मंत्री, सांसद की सीटें भी हैं। यह भी दिलचस्प है कि दूसरे चरण के चुनावी रण में 43 फीसदी उम्मीदवार करोड़पति बताये जा रहे हैं, जबकि लगभग 32 फीसदी पर आपराधिक मामले दर्ज हैं। लगभग 133 महिलाएं भी मैदान में हैं, जिससे मुकाबला त्रिकोणीय और कई स्थानों पर सीधा होता दिख रहा है।

भाजपा-जदयू और राजद-कांग्रेस के बीच सीधी टक्कर वाली सीटों पर परिणाम न सिर्फ उम्मीदवार, बल्कि शीर्ष नेताओं की प्रतिष्ठा से भी जुड़ जाते हैं। इसलिए सभी दलों ने प्रचार के आखिरी दिनों में अपनी पूरी ताकत झोंक दी है। पार्टी के स्थानीय प्रत्याशी और प्रदेश स्तर के नेता भी केंद्रीय नेताओं की रैलियों के साथ जनसंपर्क में व्यस्त हैं, ताकि मतदाताओं के मन में अंतिम वक्त में पार्टी के हक में माहौल बनाया जा सके। लोगों को डराने-धमकाने या बरगलाने के आरोप भी एक-दूसरे पर लग रहे हैं। चुनाव आयोग ने भी कई विवादास्पद बयानों, रोड शो और भीड़ नियंत्रण को लेकर नेताओं पर आचार संहिता के उल्लंघन के मामलों में संज्ञान लिया है। सोशल मीडिया पर आरोप-प्रत्यारोप, जनसभा के वीडियो और वादों की गूंज हर तरफ है। ज्यादा से ज्यादा मतदान कराने और शांति बनाए रखने की अपील नेताओं और प्रशासन की तरफ से लगातार की जा रही है। वोटर लिस्ट से लेकर मतदान केंद्रों में बेहतर व्यवस्था का दावा किया जा रहा है।

मतदाताओं की नजर खासकर उन सीटों पर है जहां से कोई बड़ा मंत्री, पूर्व मुख्यमंत्री या विपक्ष के नेता चुनाव लड़ रहे हैं। इसी कारण से सभी प्रमुख दल अपने प्रमुख चेहरों को आज ज्यादा से ज्यादा सीटों पर ले जा रहे हैं। रोड शो, नुक्कड़ सभा, मीडिया को बयान, सभाओं में क्षेत्रीय मुद्दों पर फोकस, हर तरफ राजनीति की गहरी हलचल साफ दिख रही है। कुल मिलाकर आज का चुनावी समर नेताओं की रैली, जनता की प्रतिक्रियाओं और सबसे अहम- मतदान के प्रति जागरूकता पर निर्भर है। जनता के हाथ में सत्ता की चाबी है और कौन नेता आज अपने भाषण, वादों, मुद्दों, और जनसंपर्क से यह भरोसा जगा पाता है, इसका फैसला मतदान के अगले चरणों में साफ हो जाएगा। यह चुनाव न सिर्फ प्रत्याशियों की जीत-हार बल्कि बिहार की राजनीति की दिशा भी तय करेगा।

पांडुलिपियों का डिजिटलीकरण

भारत की बौद्धिक अस्मिता का संकल्प

डॉ. सत्यवान सौरभ
लेखक स्तंभकार हैं।

भारत एक ऐसा देश है जिसकी पहचान उसकी सभ्यता और सांस्कृतिक परंपरा से होती है। यहाँ हजारों वर्षों से ज्ञान की धारा निरंतर बहती रही है। वेदों और उपनिषदों से लेकर आयुर्वेद, गणित, खगोल, साहित्य और संगीत तक, हमारी पांडुलिपियों ने विश्व को वह दिया है जो आज भी अद्वितीय और अनुपम है। किंतु इस धरोहर को व्यवस्थित ढंग से सुरक्षित करने और दुनिया तक पहुँचाने में हम बार-बार चूकते रहे। यही कारण है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का हालिया कथन कि पांडुलिपियों का डिजिटलीकरण 'बौद्धिक चोरी' को रोकेगा, अत्यंत प्रासंगिक और दूरदर्शी है। यह कथन केवल तकनीकी समाधान की ओर इशारा नहीं करता, बल्कि हमारी सांस्कृतिक अस्मिता की रक्षा का संकल्प भी है।

भारतीय पांडुलिपियाँ केवल कागज़ या ताड़पत्र पर लिखे शब्द नहीं हैं। वे समाज की स्मृति हैं, परंपराओं की कहानी हैं और ज्ञान की धरोहर हैं। इनमें विज्ञान, चिकित्सा, खगोल, दर्शन और कला से लेकर जीवनशैली तक का संपूर्ण अनुभव सुरक्षित है। आयुर्वेद की पांडुलिपियों में आज भी ऐसी औषधियों और चिकित्सा विधियों का उल्लेख मिलता है जिनकी प्रासंगिकता आधुनिक चिकित्सा विज्ञान भी मानता है। गणित और खगोल से संबंधित पांडुलिपियों में शून्य, दशमलव और ग्रह-नक्षत्रों की गति का इतना विस्तृत विवरण है कि पश्चिमी जगत ने उनसे प्रेरणा लेकर अपने वैज्ञानिक शोध को दिशा दी। संगीत और नृत्य की पांडुलिपियाँ हमारी कलात्मक परंपरा को जीवित रखने का आधार हैं।

दुर्भाग्य यह रहा कि इन पांडुलिपियों की रक्षा के मामले में हम लापरवाह साबित हुए। उपनिवेशकाल में अंग्रेज और अन्य यूरोपीय विद्वान यहाँ से अनगिनत ग्रंथ ले गए। उन्होंने उनका अध्ययन किया और कई बार उनके अनुवाद अपने नाम से प्रकाशित कर दिए। योग और ध्यान की पद्धतियाँ, जो भारत की आत्मा हैं, विदेशों में अलग रूप में प्रस्तुत की गईं और उनसे भारी व्यावसायिक लाभ उठाया गया। आयुर्वेदिक नुस्खों और औषधीय पौधों पर विदेशी पेटेंट दर्ज हुए। हल्दी और नीम जैसे सामान्य ज्ञान पर भी कंपनियों ने अपना अधिकार जताने का प्रयास किया। यह सब हमारे लिए चेतावनी है कि यदि हम अपने ज्ञान की रक्षा नहीं करेंगे, तो दुनिया उसे हड़प लेगी।

यही वह संदर्भ है जिसमें डिजिटलीकरण का महत्व बढ़ जाता है। जब कोई पांडुलिपि डिजिटल रूप में दर्ज होगी तो उसका स्रोत और स्वामित्व स्थायी रूप से भारत के नाम पर रहेगा। यह बौद्धिक चोरी को रोकने का सबसे प्रभावी साधन होगा। इसके अतिरिक्त, डिजिटलीकरण से पांडुलिपियाँ सुरक्षित रहेंगी। समय, नमी, कीड़े और तापमान परिवर्तन से कागज़ व ताड़पत्र पर लिखी पांडुलिपियाँ क्षरण का शिकार होती हैं। डिजिटलीकरण उन्हें पीढ़ी-दर-पीढ़ी संरक्षित रखेगा। सबसे बड़ी बात यह है कि डिजिटलीकृत सामग्री दुनिया भर के शोधकर्ताओं और विद्यार्थियों को उपलब्ध होगी। भारत का ज्ञान केवल संग्रहालयों की अलमारियों में बंद न रहकर वैश्विक मंच पर जीवंत रूप में सामने आएगा।

यह कार्य आसान नहीं है। भारत में अनुमानतः पचास लाख से अधिक पांडुलिपियाँ हैं। वे अलग-अलग भाषाओं और लिपियों में लिखी गई हैं–संस्कृत, पाली, प्राकृत, तमिल, तेलुगु, मलयालम, उर्दू, अरबी, फ़ारसी और अन्य भाषाओं में। कई लिपियाँ अब प्रचलन से बाहर हैं। उन्हें पढ़ना, समझना और डिजिटलीकरण करना विशेषज्ञता की मांग करता है। प्रामाणिकता बनाए रखना भी चुनौती है। अनुवाद या डिजिटल स्कैनिंग के दौरान यदि त्रुटियाँ रह गईं तो मूल ज्ञान विकृत हो सकता है। इसके अतिरिक्त, इतने बड़े कार्य के लिए वित्तीय संसाधन, प्रशिक्षित विशेषज्ञ और आधुनिक तकनीक की भी भारी आवश्यकता होगी।

सरकार ने राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन जैसी पहल की है, जो सराहनीय कदम है। परंतु यह कार्य केवल सरकारी संस्थानों तक सीमित नहीं रहना चाहिए। विश्वविद्यालयों, शोध संस्थानों, निजी संगठनों और तकनीकी विशेषज्ञों को भी इसमें भागीदारी करनी होगी। आधुनिक तकनीक का पूरा उपयोग करना होगा। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग और ब्लॉकचेन जैसी तकनीकें न केवल डिजिटलीकरण को आसान बना सकती हैं, बल्कि डेटा की सुरक्षा और खोजने की प्रक्रिया को भी विश्वसनीय बना सकती हैं।

यहाँ हमें वैश्विक अनुभव से भी सीखना चाहिए। यूरोप में "Europeana" परियोजना के तहत लाखों दस्तावेज और कला कृतियाँ ऑनलाइन उपलब्ध कराई गईं। अमेरिका और जापान ने भी अपनी सांस्कृतिक धरोहर का डिजिटलीकरण कर उसे वैश्विक स्तर पर साझा किया। इन प्रयासों ने उन देशों की बौद्धिक और सांस्कृतिक पहचान को मजबूत किया। भारत यदि इस दिशा में तेजी से कदम बढ़ाता है, तो वह न केवल अपनी धरोहर को बचा सकेगा बल्कि विश्व को यह दिखा सकेगा कि ज्ञान की वास्तविक जन्मभूमि कहाँ है।

प्रधानमंत्री ने इस अवसर पर भूपेन हजारिका का भी स्मरण किया। यह स्मरण केवल औपचारिकता नहीं, बल्कि गहरी प्रतीकात्मकता रखता है। हजारिका ने अपने गीतों और संगीत के माध्यम से असम और भारत की आत्मा को स्वर दिया। उनकी रचनाएँ केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि सांस्कृतिक चेतना का स्रोत थीं। वे हमें यह बताते हैं कि संस्कृति जीवित रहे तो समाज जीवित रहता है। जिस प्रकार हजारिका की रचनाएँ आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा देंगी, उसी प्रकार पांडुलिपियों का डिजिटलीकरण हमारी बौद्धिक स्मृतियों को अमर बनाएगा।

इस संदर्भ में यह भी समझना होगा कि डिजिटलीकरण केवल संरक्षण का कार्य नहीं है। यह राष्ट्रीय पुनर्जागरण का अभियान है। जब हम अपने ज्ञान को आधुनिक तकनीक से जोड़ेंगे, तब हम आत्मनिर्भर भारत के उस स्वप्न को साकार करेंगे, जिसमें परंपरा और नवाचार दोनों साथ चलते हैं। यह न केवल हमारी पहचान को सुदृढ़ करेगा बल्कि हमें वैश्विक मंच पर ज्ञान के वास्तविक स्वामी के रूप में स्थापित करेगा। यह ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था की ओर भी बड़ा कदम होगा।

आज की दुनिया में प्रतिस्पर्धा केवल आर्थिक संसाधनों या सैन्य शक्ति की नहीं है। प्रतिस्पर्धा इस बात की भी है कि किसके पास अधिक मौलिक ज्ञान और बौद्धिक संपदा है। यदि भारत अपनी पांडुलिपियों को डिजिटलीकृत कर उनका पेटेंट और स्वामित्व सुरक्षित कर लेता है, तो वह बौद्धिक संपदा की इस वैश्विक प्रतिस्पर्धा में अग्रणी बन सकता है। इसके अलावा, यह हमारी युवा पीढ़ी को अपनी जड़ों से जोड़ने का भी साधन बनेगा। जो पीढ़ी आज इंटरनेट और मोबाइल की दुनिया में पल रही है, उसे तभी अपनी परंपरा से वास्तविक परिचय मिलेगा जब वह उसे डिजिटल रूप में देखेगी, पढ़ेगी और समझेगी।

पांडुलिपियाँ केवल अतीत का बोझ नहीं, बल्कि भविष्य का मार्गदर्शन हैं। वे हमें यह सिखाती हैं कि ज्ञान कभी स्थिर नहीं रहता। उसे समयानुकूल सुरक्षित, संरक्षित और साझा करना आवश्यक है। यदि हम ऐसा नहीं करेंगे तो हमारी धरोहर केवल संग्रहालयों में बंद रह जाएगी और दुनिया उससे वंचित रह जाएगी। डिजिटलीकरण उस सेतु का काम करेगा जो अतीत की गहराई को भविष्य की संभावनाओं से जोड़ता है।

निस्संदेह, पांडुलिपियों का डिजिटलीकरण एक लंबा और कठिन कार्य है। परंतु यह वही कार्य है जिससे हमारी सांस्कृतिक अस्मिता और बौद्धिक स्वाभिमान जुड़ा हुआ है। यह केवल किताबों और कागज़ों को सुरक्षित रखने का प्रश्न नहीं है, बल्कि हमारी आत्मा और पहचान को बचाने का संकल्प है। प्रधानमंत्री मोदी का यह कथन कि डिजिटलीकरण 'बौद्धिक चोरी' को रोकेगा, समय की पुकार है। आज आवश्यकता इस बात की है कि सरकार, समाज और तकनीकी विशेषज्ञ मिलकर इसे राष्ट्रीय आंदोलन का रूप दें।

पांडुलिपियाँ हमारी स्मृति हैं। उनका डिजिटलीकरण हमें यह विश्वास दिलाता है कि भारत केवल अतीत की भूमि नहीं है, बल्कि भविष्य की दिशा भी है। जब हम अपने ज्ञान को संरक्षित करेंगे और उसे आधुनिक तकनीक से दुनिया तक पहुँचाएँगे, तब सचमुच भारत उस स्थान पर पहुँचेगा जहाँ वह सदियों से होना चाहिए था–ज्ञान का वैश्विक नेतृत्वकर्ता।

कनकदास : हरि के राग में जाति की जंजीरें टूटीं

जयंती पर विशेष

लीलू कुमारी
लेखिका एच.के.बी.के. डिग्री कॉलेज, कर्नाटक में सहायक आचार्य हैं।

कनकदास, कर्नाटक के भक्ति आंदोलन के प्रमुख हरिदास (दास) और संत-कवि थे। उनका जन्म 1509 ई. में शिवमोग्गा जिले के बाडा ग्राम (आज का हावेरी जिला) में हुआ था। इनका मूल नाम थिम्मप्पा नायक था, जो एक कुरुबा (चरवाहा) समुदाय से थे। कनकदास (जिन्हें दासश्रेष्ठ) के नाम से भी जाना जाता है) वर्तमान कर्नाटक, भारत के एक हरिदास संत और द्वैत वेदांत के दार्शनिक थे। वे योद्धा भी थे और विजयनगर साम्राज्य के सेनापति भी, लेकिन एक युद्ध में घायल होने के बाद, उन्होंने भक्ति मार्ग अपनाया। कर्नाटक सरकार ने वर्ष 2008 में उनके जन्मदिन को एक राजकीय उत्सव के रूप में घोषित किया है। कनकदास को उनकी आध्यात्मिक और सामाजिक विरासत के लिए सम्मानित किया जाता है। कनकदास ने कन्नड़ भाषा में कई सरल, भावपूर्ण रचनाएँ कीं। उनकी सबसे प्रसिद्ध रचना 'कृष्ण नी बेगने बारो' (कृष्ण, जल्दी आओ) मानी जाती है। अन्य प्रमुख रचनाओं में रामधन्य चरित्रे (भगवान राम को धान चढ़ाने की कथा), मोहन तरंगिणी, हरिभक्तिसार आदि हैं। वे द्वैत वेदांत के प्रचारक थे और माधवाचार्य के द्वैत वेदांत के अनुयायी। उन्होंने ईश्वर और जीव के बीच पंचभेद (पाँच अंतर) को सरल भाषा में समझाया। भक्ति को सगुण उपासना का माध्यम बनाया। वे द्वैत वेदांत के अनुयायी और व्यासतीर्थ के शिष्य थे। उनका जन्म थिम्मप्पा नाम से हुआ था और उनके गुरु ने बाद में उन्हें 'कनकदास' नाम दिया।

इनके गुरु इन्हें थिम्मप्पा के बजाय तिम्मरस भी कहते थे। इस का अर्थ है तिम्मराजा। इन के हृदय में गुरुजनों और देवताओं के प्रति असीम श्रद्धा थी। वे प्रतिदिन केशव के मंदिर में जाकर उनकी मूर्ति को टकटकी लगा कर देखते रहते थे। उनके मन में विचार उठते, मैं कहाँ से आया हूँ? आगे मुझे कहाँ जाना है? यहाँ कब तक रहना है। एक दिन मध्वाचार्य के कुछ शिष्य इस विषय पर परस्पर चर्चा कर रहे थे कि ईश्वर को कौन प्राप्त कर सकता है। सभी के अलग-अलग मत थे और किसी भी एक मत पर सहमति नहीं हो पा रही थी। अंततोगत्वा, सभी ने कनकदास से पूछने का निश्चय किया। शिष्यों में से एक शिष्यों ने सर्वप्रथम कनकदास से प्रश्न किया तो कनकदास ने उत्तर दिया- ईश्वर प्राप्ति के लिए अहंकार ('मैं' और 'मेरा') का त्याग आवश्यक है। कनकदास ने शिष्यों को यही सिखाया कि मोह-अहंकार मिटे बिना अद्वैत संभव नहीं। कनकदास केवल समाज सुधारक और संगीतकार ही नहीं थे; वे मुख्यतः भगवान नारायण के भक्त थे। वे उडुपी के व्यासराज के भी शिष्य थे। वे उडुपी कृष्ण मंदिर जाकर भगवान के दर्शन करने के लिए हमेशा लालायित रहते थे, लेकिन संकीर्ण सोच वाले पुजारी उन्हें मंदिर के अंदर नहीं जाने देते थे क्योंकि वे उन्हें निम्न कुल का मानते थे। ऐसा कहा जाता है कि दर्शन के लिए कनकदास व्याकुल हो गए और उन्होंने श्रीकृष्ण से अपनी व्यथा कही। तुरन्त ही मंदिर की दीवार एक ओर से ढह गई, गर्भगृह में एक दरार आ गई, श्रीकृष्ण की मूर्ति उनकी ओर मुड़ गई और वे प्रत्यक्ष दर्शन करने में सक्षम हो गए। बाद में इस दीवार का पुनर्निर्माण किया गया, लेकिन वहाँ एक छोटी सी खिड़की बनाई गई जो उस स्थान को चिह्नित करती है जहाँ श्री कृष्ण ने अपने दुःखी भक्त को दर्शन दिए थे। इस खिड़की को कनकना (कनक की खिड़की) कहा जाता है। आज भी, भक्त गर्भगृह के मुख्य द्वार पर जाने से पहले इसी खिड़की से भगवान के दर्शन करते हैं। कनकदास एक क्रांतिकारी कवि भी थे, और उनके कीर्तन और उगाभोग आज भी कर्नाटक संगीत में पारंपरिक गायन का हिस्सा है। इसका एक उदाहरण देखिये - 'एनु धन्यलादेनु/ एनु धन्यलादेनु/ निन्न दर्शनदिंदय्या/ कनकदासनिगे नी कोट्ट/ दर्शनवे साकय्या।।' (कितनी धन्य हो गई मैं, तेरे दर्शन से, कनकदास को जो दर्शन दिया, वही काफी है। कृष्ण के प्रति उनका प्रेम अद्भुत था। वे कहते हैं - 'कंदु कंदु कंडे/ कंदु कंदु कंडे निन्न/ उदुपिय श्री कृष्णन॥/ मंदार मालेय मडदियल्लि/ गोपियर संगदल्लि॥ (देखा, देखा, मैंने देखा तुझे, उडुपी के श्रीकृष्ण को, मंदार माला पहने, गोपियों के संग में।) इन्होंने राग-तान में कीर्तन गायन की परंपरा शुरू की। वे तंबूरी (एक तार वाला वाद्य) बजाते थे। उनकी रचनाएँ आज भी कर्नाटक शास्त्रीय संगीत में गायी जाती हैं। उन्होंने जाति व्यवस्था की भी निंदा की और अपनी कविताओं व गीतों के माध्यम से इसे चुनौती दी। वह सभी वर्गों के लोगों के बीच ज्ञान का प्रसार करने के लिए व्यक्तिगत रूप से यात्रा करते थे, जिससे उन्हें 'सभी के लिए शिक्षा' लाने वाले के रूप में जाना जाता था। उनकी कविताओं का एक और उदाहरण देखिये - 'नानू होदरे होदे, नीनु बरबेकु कृष्णा' (मैं जा रहा हूँ, तुम्हें आना होगा कृष्णा) उनकी यह कविताएँ भक्ति की गहराई का प्रमाण है। उन्होंने अनेक भक्ति-केंद्रित कविताएँ लिखीं - एन्न काल गळिगे कंकणविल्ल/ एन्न कैगळिगे वलयविल्ल।।/ आदरू निन्न नामवेम्ब/ आभरणवन्नु धरिसिरुवेनय्या॥ (मेरे पैरों में घुंघरू नहीं, मेरे हाथों में चूड़ियाँ नहीं, फिर भी तेरे नाम रूपी आभूषण को धारण किया है मैंने।) इन्होंने सभी के लिए शिक्षा, ज्ञान और भक्ति का समान अधिकार बताया। साथ ही कर्नाटक में हरिदास साहित्य की नींव रखी। जाति-भेद के विरुद्ध आवाज़ उठाई। कनक दास ने कन्नड़ भाषा में कई कविताएँ और भक्ति रचनाएँ लिखीं, जिनका अनुवाद हिंदी में भी उपलब्ध है। उनकी प्रमुख रचनाओं में रामध्यानचरित्र (जिसमें अमीर-गरीब के विभाजन को दर्शाया गया है), नलचरित (नल और दमयंती की कथा का पुनर्कथन) और नरसिंहस्तव (श्री नरसिंह पर) शामिल हैं। उनकी कविताओं में सामाजिक सरोकार, भक्ति और मानवता का सम्मान झलकता है। इन्होंने सन् 1564 ईस्वी में तिरुपति में देह त्याग किया।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।
प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

तपेली में तरी ही बची थी...

भूपेन्द्र भारतीय
लेखक व्यंग्यकार हैं।

मंगल के साथ पिछले दिनों बड़ा धोखा हो गया। धोखा क्या कहूँ, मंगल की भाषा में यह एक तरह से सेवा का शिकार होने जैसा है। या कहे;- ये वहीं धोखा था जो एक आम राजनीतिक कार्यकर्ता के साथ चुनाव के बाद जीतने वाला दल करता है। वैसे ही जैसे बड़े बाबू चपरासी व कार्यालय के अन्य छोटे बाबूओं के साथ करते हैं, रिश्वत में आया अधिकांश माल बड़े बाबू निगल लेते है और अन्य के पास सिर्फ पतली तरी बचती है। 'सिर्फ दाल का पानी ही पानी, उस तपेली में चम्मच हिलाते रहो।' ऐसा ही पीछले दिनों मंगल के साथ हुआ। वह पीछले दिनों अपनी जाति के प्रतिभा सम्मान आयोजन में गया था। जिसे बड़ी होशियारी से समाजवादी ढंग में सामाजिक आयोजन कहा गया था। पहले आयोजन में सामाजिक नेताओं के द्वारा भाषणबाजी, प्रतिभाओं को जैसे जबरन पकड़कर सम्मानित किया गया हो। उनके उज्जवल भविष्य के लिए जातिगत नेताओं द्वारा दो शब्द कहे गए। वे दो शब्द स्वयं की प्रशंसा में ज्यादा थे।

मंगल इस आयोजन में कार्यकर्ता की भूमिका में था। उसे किसी ने बोला नहीं था। ना ही चुनावी उम्मीदवारों की सूची जैसी किसी सूची में उसका नाम था और ना ही इसके लिए उसने कोई याचिका लगाई थी। वह भावुकता में चला गया। उसे सेवा करने का भी कुछ मन हुआ था। जैसे आजकल सब तरफ सेवा के लिए लोग जाते हैं। नेतागण देश की सेवा के लिए पागल हो रहे हैं। युवा अलग तरह से सेवा करना चाहता है। जैसे राष्ट्रीय स्तर पर इस देश का युवा देश सेवा के लिए गलाकाट प्रतियोगी परीक्षा पास करता है और फिर कुछ ही वर्षों में सेवा के नाम पर भ्रष्टाचार के मामलों से देश के अखबारों में बड़ी बड़ी हेडलाइन बनाता है। कभी कभी इन प्रतियोगिताओं के दबाव में आकर आत्महत्या करके देश सेवा करता है। वहीं संसदीय व विधायी समितियों में जनप्रतिनिधि देश सेवा व नवाचार के नाम पर चार पांच देशों की यात्रा करते है और जनप्रतिनिधि होने का कर्तव्य निभाते हैं। वैसे ही मंगल भी उस आयोजन में सेवा के लिए चला गया। जैसे युवा शुरू शुरू में राजनीतिक-सामाजिक आंदोलनों में जाता है और भीड़ का शिकार हो या तो भावुकता में प्राण गंवा देता है या फिर पुलिस थाने के रजिस्टर में अपना नाम दर्ज कराकर राजनीति का स्थाई खिलाड़ी बन जाता है।

मंगल को भी लगा कि बड़े आयोजन में उसके हाथ कुछ तो आऐगा। उसके जीवन में भी कुछ मंगल हो जाऐगा। जैसे कर्मठ कार्यकर्ताओं की सेवा से मंत्रीजी जनसेवा करते हैं। उसे भी नेतृत्व की अग्रिम पंक्ति में आने का रोग चढ़ा। उसे भी लगा समाज सेवा करने पर गाढ़ी तरी व साग दोनों का आनंद मिलेगा। वह भी अब नया कुर्ता-पयजामा पहनकर समाज सेवा की तपेली में अपनी सेवा रूपी चम्मच हिलाने गया था। उसने पढ़ा था इस सेवा के लिए आजादी से पूर्व व उसके बाद बड़े बड़े लोगों ने अपनी जमी जमाई वकालत, व्यापार, जागीरदारी आदि छोड़कर इस सेवा में कूद पड़े थे। तो भला मंगल अपने समाज के आयोजन में टाटपट्टी बिछाना से लेकर भोजन परोसगारी क्यों नहीं कर सकता? आगे मंच व माईक भी मिलेगा। पूर्व में तो उसके जैसे कार्यकर्ताओं द्वारा समाजसेवा के लिए प्राण तक न्यौछावर कर दिये। क्या उन्होंने कम तरी व साग का आनंद उठाया। कैसे मालामाल हो गए। जैसे वह इस सेवा के लिए ही बना हो।

मंगल की माने तो उस आयोजन में वह समाज सेवा के भाव से गया था। लेकिन उसका भाव वहीं था जो अधिकांश सामाजिक संगठनों का रहता है। समाज में दबे कुचले लोगों की सेवा के नाम पर सरकार से अनुदान की तरी व साग दोनों का आनंद उठाते हैं। मंगल सबको साग व तरी परोसता है। उसे लगा यह सब मुझे भी मिलेगा। उसे भी दूसरे कार्यकर्ता तरी वाली साग परोसने आएंगे। जैसे मतदाता पांच साल में एक बार मतदान करने जाता है तो उसे लगता है कि देश अब उसके मत से चलेगा। लेकिन चुनाव होते ही परिणाम देखकर कुछ दिनों में उसका मत बदल जाता है। ओर देश की राजनीति अपने मद में चलने लगती है। सत्ता के हाथी की चाल में उसकी आवाज दब जाती है। कहाँ तो वह दबे-कुचलों की आवाज उठाने आया था और चुनाव बाद वह स्वयं दब-कुचला सा हो जाता है।' धीरे धीरे वह तरी व साग की सच्चाई जानने लगता है। कौन तरी खा रहा है और किसके हिस्से साग आती हैं और अंत में बढ़ी संख्या को सिर्फ साग के पतले पानी ही से संतुष्ट होना पड़ता है। जैसे उस दिन मंगल ने बहुत मेहनत की थी। भाग भाग कर सबको भोजन कराया। आयोजन को सफल बनाने में निस्वार्थ भाव से सेवा की। जैसे चुनावों के समय कुछ कार्यकर्ता निःस्वार्थ भाव से दल की सेवा करते हैं और चुनाव जीतने के बाद मेवा किसी ओर के हाथ लगता है। उसी तरह आखिर में मंगल जैसों की थाली में सिर्फ पतली तरी नुमा पानी रह जाती है।

रजत सितारे

डॉ. मनीष जैसल

फिल्म समीक्षक और मीडिया प्राध्यापक, आईटीएम विवि ग्वालियर

कैमरे के फ्रेम से करुणा दर्ज करने वाले ऋत्विक घटक

ऋत्विक घटक का जन्म 4 नवंबर 1925 को पूर्व बंगाल (अब बांग्लादेश) में हुआ। बचपन में उन्होंने देश के विभाजन की त्रासदी देखी, लाखों लोग अपने घर, ज़मीन और पहचान से बेघर हो गए। यह अनुभव उनके भीतर हमेशा जलता रहा और बाद में उनकी फिल्मों का मुख्य विषय बन गया। घटक ने अपने जीवन की शुरुआत भारतीय जन नाट्य संघ (इप्टा) से की। वहाँ उन्होंने महसूस किया कि कला का असली उद्देश्य समाज से संवाद करना है। उनके समकालीन सत्यजीत रे और मृणाल सेन की तरह वे भी यथार्थवादी फिल्मकार थे, लेकिन उनका सिनेमा सबसे अलग था। जहाँ रे का सिनेमा शांति और सौंदर्य की भाषा में बोलता था, वहीं घटक का सिनेमा दर्द और विद्रोह की आवाज़ था।

हाल में ही बंगला फिल्मों के मशहूर फिल्मकार ऋत्विक घटक का जन्मदिन बीता हैं, वे हमारे बीच होते तो हम उनकी सौवीं वर्षगांठ मना रहे होते। ऋत्विक कुमार घटक की सिनेमाई आवाज़ आज भी उतनी ही तीखी और ज़रूरी लगती है जितनी उनके समय में थी। चार नवंबर 1925 को जन्मे ऋत्विक परंपरा और आधुनिकता, घर और उसकी जद्दोजहद, संगीत और चीख के इन विरोधाभासों को पर्दे पर इस तरह उभारा कि हर दृश्य किसी बहती हुई नदी की तरह भीतर तक बहकर आता है। घटक ने सिनेमा को केवल कहानी सुनाने का यंत्र नहीं माना, बल्कि उनकी नज़रों में सिनेमा समाज की पुकार था। एक ऐसी पुकार जो दर्शक के सीने में प्रश्न और असहजता दोनों जगा दे। इस नजरिए को वह खुद भी खुलकर कहते थे: 'मैं फिल्में नहीं बनाता, मैं पुकारता हूँ' और इस पुकार में उनकी जड़ें विभाजन, विस्थापन और गाँव-शहर के टूटे रिश्तों से बहुत गहरे जुड़ी हैं।

ऋत्विक घटक का जन्म 4 नवंबर 1925 को पूर्व बंगाल (अब बांग्लादेश) में हुआ। बचपन में उन्होंने देश के विभाजन की त्रासदी देखी, लाखों लोग अपने घर, ज़मीन और पहचान से बेघर हो गए। यह अनुभव उनके भीतर हमेशा जलता रहा और बाद में उनकी फिल्मों का मुख्य विषय बन गया।

घटक ने अपने जीवन की शुरुआत भारतीय जन नाट्य संघ (इप्टा) से की। वहाँ उन्होंने महसूस किया कि कला का असली उद्देश्य समाज से संवाद करना है। उनके समकालीन सत्यजीत रे और मृणाल सेन की तरह वे भी यथार्थवादी फिल्मकार थे, लेकिन उनका सिनेमा सबसे अलग था। जहाँ रे का सिनेमा शांति और सौंदर्य की भाषा में बोलता था, वहीं घटक का सिनेमा दर्द और विद्रोह की आवाज़ था।

उनकी फिल्मों के केंद्र में घर और उसके खोने की कहानी हमें दिखाई पड़ती है । मेघे ढाका तारा (1960), कोमल गंधार (1961), सुवर्णरेखा (1962), तीताश एकती नदीर नाम (1973) और युक्ति तर्क और गप्पो (1974) जैसी फिल्मों में बार-बार वही प्रश्न उठता है कि घर क्या है, उसकी पहचान कहाँ से बनती है और जब जड़ें छिटक जाएँ तो मनुष्य का क्या होता है। इन फिल्मों में पात्र केवल पात्र नहीं; वे एक समय, एक पीड़ा और एक सांस्कृतिक स्मृति के वाहक हैं।

ऋत्विक घटक की फिल्मों को एक साथ देखने पर लगता है मानो हम किसी एक लंबी कहानी के अलग-अलग अध्याय पढ़ रहे हों, एक ऐसी कहानी जो विभाजन, विस्थापन, घर, संस्कृति और पहचान की तलाश से बुनी गई है। उनकी फ़िल्में जैसे मेघे ढाका तारा, कोमल गंधार, सुवर्णरेखा, तीताश एकती नदीर नाम और युक्ति तर्क और गप्पो अलग-अलग विषयों पर हैं, लेकिन सबका आधार एक ही हैहैं। टूटे हुए समाज में मनुष्य की जड़ों की खोज।

घटक के सिनेमा को समझने का सबसे सही तरीका उसके सिंटैग्मैटिक विश्लेषण से है, यानी फिल्म के दृश्य, ध्वनि, प्रतीक और संगीत के क्रम को पढ़ना, जिससे अर्थ धीरे-धीरे खुलता है। मेघे ढाका तारा (1960) में नीता का संघर्ष सिर्फ एक स्त्री की त्रासदी नहीं, बल्कि विभाजन के बाद बिखर गए परिवारों की सामूहिक पीड़ा है। यहाँ बारिश की आवाज़, टूटती दीवारें और शंख-ध्वनि ये सब केवल वातावरण नहीं, बल्कि पात्रों की भावनाओं के प्रतीक हैं। जब नीता कहती है, 'दादा, मैं जीना चाहती हूँ,' तो यह संवाद दृश्य और ध्वनि दोनों के मेल से एक सामाजिक चीख बन जाता है। कोमल गंधार (1961) में घटक ने IPTA के अनुभवों को कलात्मक तरीके से पिरोया। यहाँ सिनेमाई संरचना में नाट्य-शैली का प्रयोग, समूह दृश्यों की कोरियोग्राफी और गीतों का सामूहिक रूप दर्शाता है कि कला व्यक्तिगत नहीं, सामूहिक अनुभव है। घटक यहाँ 'अलगाव' के विचार को केवल कथा में नहीं, बल्कि संपादन और फ्रेमिंग में भी दिखाते हैं, पात्र अक्सर एक-दूसरे से कटे हुए फ्रेम में दिखाई देते हैं, जो उनके वैचारिक विखंडन का प्रतीक बनता है। सुवर्णरेखा (1962) में नदी का प्रवाह और पात्रों की नियति एक-दूसरे से जुड़ते हैं। घटक का कैमरा नदी को केवल पृष्ठभूमि नहीं मानता; वह जीवन और समय की धारा है जो सब कुछ बहाकर ले जाती है। फिल्म का रंग-रूप और ध्वनि एक गहरी उदासी रचते हैं, यह सिनेमाई 'मेटाफर' है जो दर्शक को कहानी से आगे सोचने को मजबूर करता है। तीताश एकती नदीर नाम

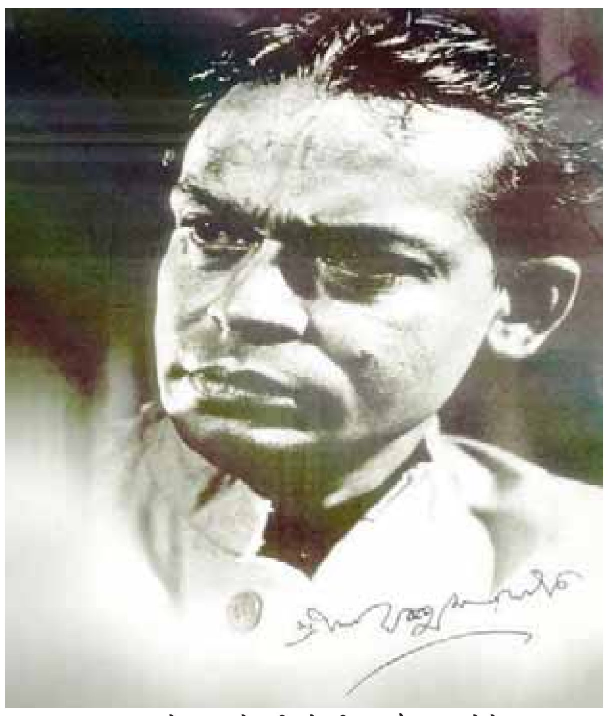

(1973) में घटक ने नदी को जीवन और मृत्यु दोनों का प्रतीक बनाया। नदी का बहना यहाँ इतिहास का बहना है, यानि समुदाय का खो जाना, सभ्यता का मिटना है। सिन्तैग्मैटिक रूप से यह फिल्म दृश्य-ध्वनि के संयोजन से 'स्मृति' को जीवंत करती है, एक ऐसा सिनेमाई समय जहाँ वर्तमान, अतीत और भविष्य एक साथ बहते हैं। कैमरा कभी स्थिर नहीं रहता; वह नदी की तरह चलायमान है, जिससे दृश्य में निरंतर प्रवाह की अनुभूति होती है। उनकी आख़िरी फिल्म युक्ति तर्क और गप्पो (1974) इस समूचे सिनेमाई चिंतन का निष्कर्ष है। यहाँ घटक स्वयं स्क्रीन पर हैं, एक बौद्धिक जो शराब, निराशा और समाज के नैतिक पतन से जूझ रहा है। फिल्म की संरचना असंबद्ध है, पर वही 'विखंडन' इस युग के बिखराव का रूपक बन जाता है। घटक संवाद, ध्वनि और मौन तीनों को बराबर महत्व देते हैं । उनके संवाद अक्सर अधूरे लगते हैं, लेकिन कैमरा और संगीत उन्हें पूरा करते हैं। इन सभी फिल्मों में है भावनात्मक और संरचनात्मक विस्थापन की एक साझा विशेषता जो कथा, पात्र और सिनेमा की भाषा तीनों में गहराई से उतरता है। उनकी फिल्मों को देखने का मतलब है, इतिहास को महसूस करना, समाज को सुनना और खुद से सवाल करना।

कई बार कहा जाता है कि घटक की फिल्मों में मेलोड्रामा और राजनीतिक चिंतन साथ चलते हैं, यह मिलन उनकी सबसे बड़ी ताकत भी है और कुछ दर्शकों के लिए चुनौती भी। घटक ने पारंपरिक मेलोड्रामेटिक उपकरणों का उपयोग लोक-थिएटर के शैलीगत स्वाभाव के साथ किया ताकि व्यापक जनता तक भावनात्मक पहुंच बनी रहे, परंतु उसी समय उन्होंने उन उपकरणों को समझौते के लिए नहीं बल्कि आलोचना के लिए मोड़ा। इससे उनकी फिल्में 'लोकप्रिय' भी बनीं और 'विचारोत्तेजक' भी; यही वजह है कि आज उनके काम पर मल्टी डिसिप्लिनरी अध्ययन हो रहे हैं—नारीवाद, पोस्ट-कोलोनियल अध्ययन, संगीत और सिनेमा सिद्धांत सभी घटक के काम से संवाद कर रहे हैं।

आज जब हम रित्विक घटक की सौवीं जयंती मना रहे हैं, तब उनकी फिल्मों का पुनःपाठ इसलिए अनिवार्य हो जाता है क्योंकि उनकी फिल्में केवल अतीत की स्मृतियों का संग्रह नहीं; वे समकालीन प्रवास, पहचान-संघर्ष और सामुदायिक टूटन के मामलों से सीधे संवाद करती हैं। उनका सिनेमा हमें बताता है कि कला कैसे ऐतिहासिक आघात को संवेदनशील, समृद्ध और आलोचनात्मक भाषा में बदल सकती है।

उनका सिनेमा हमें यह याद दिलाता है कि कला तब तक जीवित रहती है जब तक उसमें समाज की धड़कन सुनाई देती है। आज जब फिल्मों का बड़ा हिस्सा तकनीक, बाज़ार और ग्लैमर की चकाचौंध में डूब गया है, घटक हमें सिखाते हैं कि सिनेमा का असली अर्थ 'मनुष्य को समझना' है। उनकी फिल्मों में जो पीड़ा, विस्थापन और संघर्ष है, वह आज के समय से अलग नहीं बल्कि और अधिक प्रासंगिक हो गया है। जब एक तरफ समाज लगातार विभाजित हो रहा है और लोग अपनी पहचान के लिए जूझ रहे हैं, तब मेघे ढाका तारा की नीत्या, सुवर्णरेखा की नदी और युक्ति तर्क और गप्पो का थका हुआ बुद्धिजीवी हम सबकी सामूहिक कहानी बन जाते हैं। रित्विक घटक हमें सिखाते हैं कि कला का उद्देश्य सिर्फ सुंदर दिखना नहीं, बल्कि असुविधाजनक सच्चाई को व्यक्त करना है।

सिनेमा के विद्यार्थियों के लिए घटक की फिल्में एक जीवंत पाठशाला हैं, जहाँ दृश्य, ध्वनि, प्रतीक और भावना मिलकर अर्थ बनाते हैं। उनका सिनेमा बताता है कि फिल्म बनाना केवल कैमरा चलाना नहीं, बल्कि सोच और संवेदना की एक यात्रा है। समाज के लिए वे इसलिए ज़रूरी हैं क्योंकि उन्होंने उन लोगों को आवाज़ दी जिन्हें इतिहास ने भुला दिया था, शरणार्थी, श्रमिक, स्त्रियाँ, और टूटते हुए घर-परिवार आज सिनेमा के परदे से गायब हो रहे हैं । और विद्यार्थियों के लिए इसलिए ज़रूरी हैं क्योंकि वे सिखाते हैं कि सिनेमा का अध्ययन केवल तकनीक का नहीं, बल्कि मनुष्य की आत्मा को समझने का अभ्यास है। इसलिए ऋत्विक घटक को याद करना, उनकी फिल्मों को फिर से देखना, दरअसल अपने समय से संवाद करने जैसा है। क्योंकि जब समाज अपनी संवेदना खोने लगे, तो ऋत्विक घटक जैसे फिल्मकार हमें फिर से 'देखना' सिखाते हैं न केवल परदे को, बल्कि खुद को भी।

दृष्टिकोण

ध्रुव शुक्ल

लेखक साहित्यकार हैं।

कौन संवारे लोकतंत्र को?

श्री राहुल गांधी की प्रेस वार्ता सुनते हुए लगा कि जैसे कई सालों से अपने मतदान के लिए किसी लम्बी कतार में खड़ा हूं और इस दान का परिणाम संदिग्ध है। फिर भी कोई उम्मीद बॉंधे खड़ा हूँ। अपने आगे-पीछे खड़े कुछ मतदाताओं की खुसुर-फुसुर से यह अंदाज़ लग रहा है कि अब एक पार्टी प्रतिबद्ध वोटर भी पैदा हो गया है। सिर्फ़ इतना ही नहीं, वह एक-दूसरे के प्रति बैर से भरा है। उसके मन में किसी दल को जिताने की भाग-दौड़ चल रही है, भले ही देश हार जाये। बीते समय में ऐसा नहीं था। चुनाव के पहले खूब आमसभाएं होती थीं। सभी दलों के नेतागण घर- घर जाकर जनसम्पर्क करते थे। वे खूब जाने-पहचाने और बहुत करीब के लगते थे। उनके दामन पर दाग़ नहीं दिखते थे। हम उनकी बात सुनकर सहज रूप से तय करते थे कि किसे चुनना चाहिए।

वे ऐसे नेता थे जो जनता का मन जीतते रहते थे। राह चलते मिल जायें तो सबकी बात सुनते थे और शिकायत दूर करने के उपाय भी करते थे। उनमें सादगी खूब थी, वे सजावटी नहीं थे। वे किसी भी दल के हों उनका पहनावा खादी का ही होता था। कोई भी जीते-हारे पर हर राजनीतिक दल के बीच सद्भाव बना रहता था। वे मिलकर देशहित के बारे में सोच सकते थे। उनकी रुचि केवल सत्ता पाने में नहीं, लोकतंत्र के सत्य को बचाये रखने में भी थी।

अब ज़माना बदल गया है। नेता जनता से दूर खड़े दिखायी देते हैं। खूब सज-संवरकर मीडिया चैनलों के स्क्रीन पर ऐसे दिखते हैं जैसे वोटरों के बाज़ार में जनमत की बोली लगाकर उसे मनमाने दाम पर खरीदने आये हों। मैं सोचने लगा कि जो लोग लोकतंत्र के पक्ष में मत का दान करने इस कतार में घण्टों खड़े रहते हैं क्या वे अपना वोट भी बेच सकते हैं? क्या वे किसी और के नाम का फर्जी वोट भी डाल सकते हैं? क्या वे हर बार अपनी जाति, मज़हब और सम्प्रदाय के लोगों को ही चुनेंगे या लोकतंत्र में सद्भाव, समृद्धि, सुरक्षा, स्वास्थ्य और शिक्षा के विकास के लिए अपने मत का दान करेंगे? पुरखे कह गये हैं कि अपना स्वार्थ साधने के लिए किये गये दान का कोई फल नहीं मिलता। लोकतंत्र में प्रत्येक व्यक्ति को मतदान का अधिकार केवल अपना तात्कालिक हित साधने के लिए नहीं, सबका दीर्घकालिक हित साधने के लिए दिया गया है

आजकल टीवी चैनलों का तो धन्धा ही यही रह गया है कि वे चुनाव से पहले ही मतदाताओं के मन में मज़हबी पाखण्ड और जात-पॉंत के बिखराव की इतनी गाठें लगा देते हैं कि मतदान का दिन उगने तक वोटरों की बस्तियों में भ्रमों और मुफ़्त लालच का अंधेरा फैला रहे और प्रत्येक वोटर लोकहित को भूलकर अपने ही लोभ-लालच के पक्ष में वोट देने को बाध्य हो जाये। चुनाव से पहले झूठी हार-जीत के सर्वेक्षण दिखाकर और जनमत को विभेदकारी बहसों में इतना उलझाकर रखा जाये कि जनता अपना प्रतिनिधि चुनने का विवेक ही खो दे। मीडिया खुद दल हित में ढोल बजाकर देश हित को भूल गया है।

जो लोग इस आपाधापी और कनफोड़ शोर में भी अपने चुनने का विवेक नहीं खोते, वे अब भी अपना प्रतिनिधि चुनने की कामना से भरकर मतदान की कतारों में खड़े होते होंगे पर उनके सामने सबसे बड़ी समस्या विकल्प की है। हर दल के वही चुनावी लड़वैया ही मैदान में खड़े दिखायी देते हैं जिनके पास इफरात पैसा और बाहुबल है। इसके बिना कोई भला आदमी चुनाव लड़ने की सोच भी नहीं सकता। अगर लड़ बैठे तो उसकी हार ही होती होती है। चुनाव अब विचारधारा और राजनीतिक शील के आधार पर नहीं, एक-दूसरे को नीचा दिखाकर कुतर्कों से भरे प्रचार का भयानक शोर मचाकर जीते जाते हैं।

मतदान करके घर लौटते हुए लोगों के चेहरों की ओर देखकर लगता है कि वे अपना मत देकर संतुष्ट नहीं हैं। बस अपने वोटर होने का लोकाचार भर निभा रहे हैं। वे मन ही मन अच्छी तरह जानते हैं कि किसी भी दल की हो वही सरकार बनेगी जो अब तक बनती आयी है। जीवन में कुछ नहीं बदलेगा। बस कुछ लोग बदलेंगे और एक-दूसरे से बदला लेने में पॉंच साल गंवा देंगे। क्या यह हालत देखकर कोई नये विकल्प के बारे में सोच रहा होगा? क्या संदेहों से परे वह मतदाता सूची कभी बन पायेगी जिसके आधार पर लोग अपने प्रतिनिधि चुनते हैं। उन लोगों को हम कब तक चुनते रहेंगे जिनके दोष अब तक छिपाये जाते रहे हैं?

क्या जनता की ऐसी कोई सभा बुलायी जा सकती है जिसमें लोकहित को साधने वाली अर्थनीति, समाजनीति और राजनीति पर गहन विचार करने वाले महानुभावों की तलाश की जा सके? क्या डेढ़ सौ करोड़ आबादी के देश में ऐसे लोग नहीं खोजे जा सकते जिनके अंतःकरण का आयतन संक्षिप्त न हो और जो लोकतंत्र को सॅंवार सकें।

विश्व रेडियोग्राफी दिवस पर विशेष

श्वेता गोयल

लेखक शिक्षक हैं।

अदृश्य किरणों की रोशनी में चिकित्सा का नया युग

रोएंटजेन की इस खोज ने सर्जरी और चिकित्सा विज्ञान की सीमाएं बदल दी। अब डॉक्टर बिना शरीर को काटे अंदरूनी संरचना देख सकते थे। फैक्चर, संक्रमण, ट्यूमर या फेफड़ों की बीमारियों जैसी स्थितियों का सटीक निदान संभव हो गया। धीरे-धीरे एक्स-रे के साथ-साथ सीटी स्कैन, एमआरआई और अल्ट्रासाउंड जैसी उन्नत इमेजिंग तकनीकें विकसित हुई और रेडियोलॉजी आधुनिक चिकित्सा का अभिन्न अंग बन गई। 'विश्व रेडियोग्राफी दिवस' पहली बार 2004 में मनाया गया और तब से यह दिन हर वर्ष रेडियोग्राफरों तथा रेडियोलॉजिकल टेक्नोलॉजिस्ट्स के योगदान को सम्मान देने का अवसर बन गया। यह दिन हमें यह याद दिलाता है कि चिकित्सा क्षेत्र में केवल डॉक्टर या सर्जन ही नहीं बल्कि वे तकनीकी विशेषज्ञ भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं, जो इन इमेजिंग प्रणालियों को संचालित करते हैं और रोगियों के सही निदान व उपचार में निर्णायक भूमिका निभाते हैं।

दुनियाभर में हर साल 8 नवंबर को 'विश्व रेडियोग्राफी दिवस' मनाया जाता है, जो चिकित्सा जगत में उस महान वैज्ञानिक उपलब्धि का प्रतीक है, जिसने आधुनिक स्वास्थ्य सेवा की दिशा ही बदल दी। 1895 में जर्मन भौतिक विज्ञानी विल्हेम कॉनराड रोएंटजेन द्वारा एक्स-रे की खोज केवल विज्ञान की एक उपलब्धि नहीं थी बल्कि मानव जीवन को बचाने वाली उन सबसे महत्वपूर्ण खोजों में से एक थी, जिसने चिकित्सा क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया। रोएंटजेन ने 8 नवंबर 1895 को जब कैथोड किरणों पर प्रयोग करते हुए अनजाने में एक चमकती हुई स्क्रीन देखी, तब उन्होंने महसूस किया कि उनके प्रयोग उपकरणों से कोई अदृश्य ऊर्जा निकल रही है। उत्सुकतावश उन्होंने अपने हाथ को किरणों के सामने रखा और जब उन्होंने अपनी हड्डियों का साया देखा तो विज्ञान का एक नया अध्याय आरंभ हुआ। इस अद्भुत किरण को उन्होंने 'एक्स-रे' नाम दिया, 'एक्स' जिसका अर्थ है 'अज्ञात'। यही किरणें बाद में चिकित्सा निदान की रीढ़ बन गई और विश्वभर में रेडियोलॉजी के क्षेत्र की नींव रखी।

रोएंटजेन की इस खोज ने सर्जरी और चिकित्सा विज्ञान की सीमाएं बदल दी। अब डॉक्टर बिना शरीर को काटे अंदरूनी संरचना देख सकते थे। फ्रैक्चर, संक्रमण, ट्यूमर या फेफड़ों की बीमारियों जैसी स्थितियों का सटीक निदान संभव हो गया। धीरे-धीरे एक्स-रे के साथ-साथ सीटी स्कैन, एमआरआई और अल्ट्रासाउंड जैसी उन्नत इमेजिंग तकनीकें विकसित हुई और रेडियोलॉजी आधुनिक चिकित्सा का अभिन्न अंग बन गई। 'विश्व रेडियोग्राफी दिवस' पहली बार 2004 में मनाया गया और तब से यह दिन हर वर्ष रेडियोग्राफरों तथा रेडियोलॉजिकल टेक्नोलॉजिस्ट्स के योगदान को सम्मान देने का अवसर बन गया। यह दिन हमें यह याद दिलाता है कि चिकित्सा क्षेत्र में केवल डॉक्टर या सर्जन ही नहीं बल्कि वे तकनीकी विशेषज्ञ भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं, जो इन इमेजिंग प्रणालियों को संचालित करते हैं और रोगियों के सही निदान व उपचार में निर्णायक भूमिका निभाते हैं।

रेडियोलॉजी आज स्वास्थ्य सेवा का वह स्तंभ है, जिस पर आधुनिक चिकित्सा प्रणाली टिकी हुई है। इसके बिना किसी भी गंभीर बीमारी का सही और समय पर निदान असंभव है। चाहे वह कैंसर हो, हृदय रोग, फेफड़ों का संक्रमण या हड्डियों की टूट-फूट, हर बीमारी की पुष्टि के लिए इमेजिंग तकनीकें अपरिहार्य हैं। एक्स-रे शरीर के अंदरूनी हिस्सों की झलक देता है, एमआरआई मस्तिष्क और स्नायु तंत्र के जटिल ढांचे को उजागर करता है, सीटी स्कैन सूक्ष्म स्तर पर रोग की स्थिति बताता है और अल्ट्रासाउंड भ्रूण विकास से लेकर आंतरिक अंगों की कार्यप्रणाली तक की जानकारी देता है। इन सभी प्रक्रियाओं के पीछे रेडियोग्राफरों की कुशलता और तकनीकी दक्षता होती है। वे केवल मशीनें नहीं चलाते बल्कि यह सुनिश्चित करते हैं कि रोगी को न्यूनतम विकिरण मिले, छवि की गुणवत्ता सर्वोत्तम हो और डॉक्टर को ऐसा परिणाम मिले, जो निदान में निर्णायक सिद्ध हो। उनकी जिम्मेदारी रोगी की सुरक्षा से लेकर भावनात्मक सहजता तक फैली होती है। कैंसर विज्ञान के क्षेत्र में एक्स-रे ने चिकित्सा इतिहास को बदल दिया है। सबसे प्रमुख उदाहरण है मैमोग्राफी, जो स्तन कैंसर की प्रारंभिक अवस्था में पहचान का सबसे प्रभावी माध्यम है। यह इमेजिंग तकनीक अक्सर ऐसे ट्यूमर की पहचान कर लेती है, जो लक्षण दिखने से पहले ही शरीर में मौजूद होते हैं। इसी तरह, छाती का एक्स-रे फेफड़ों के कैंसर, टीबी या निमोनिया का प्रारंभिक पता लगाने में मदद करता है। पाचन तंत्र में बेरियम एक्स-रे का उपयोग ग्रासनली, पेट या आंतों के कैंसर की पहचान के लिए किया जाता है।

रोगी द्वारा निगला गया कंट्रास्ट पदार्थ एक्स-रे के माध्यम से उन असामान्य आकृतियों को स्पष्ट करता है, जिनसे कैंसर या अन्य रोगों की संभावना का पता चलता है। एक्स-रे का महत्व केवल निदान तक सीमित नहीं है, इसका उपयोग विकिरण चिकित्सा में भी होता है, जो कैंसर के उपचार की प्रमुख विधियों में से एक है। रैखिक त्वरक जैसी आधुनिक तकनीकें एक्स-रे किरणों को इतनी सटीकता से ट्यूमर पर केंद्रित करती हैं कि कैंसर कोशिकाएं नष्ट हो जाती हैं और आसपास के स्वस्थ ऊतक सुरक्षित रहते हैं। इस प्रकार एक्स-रे न केवल रोग की पहचान करता है बल्कि उसे समाप्त करने का माध्यम भी बनता है।

हर वर्ष की तरह इस बार भी यह दिवस एक सार्थक थीम 'रेडियोग्राफरः अदृश्य को देखना' के साथ मनाया जा रहा है। यह थीम उस अदृश्य संसार की झलक है, जिसे केवल रेडियोग्राफर अपनी विशेषज्ञता और तकनीकी ज्ञान से देखने में सक्षम होते हैं। रोगी के शरीर के भीतर क्या चल रहा है, उसकी झलक इन्हीं के माध्यम से चिकित्सकों तक पहुंचती है। यह थीम उस संवेदनशील भूमिका की भी याद दिलाती है, जो रेडियोग्राफर निभाते हैं। वे केवल छवियां नहीं बनाते बल्कि उन अदृश्य खतरों को उजागर करते हैं, जो यदि समय पर न देखे जाएं तो जीवन के लिए संकट बन सकते हैं। उनकी हर छवि जीवन बचाने की दिशा में एक कदम होती है। रेडियोग्राफर स्वास्थ्य सेवा प्रणाली के ऐसे योद्धा हैं, जो अक्सर पर्दे के पीछे रहते हैं। वे हर उस मरीज से जुड़ते हैं, जो जांच के डर और असमंजस में होता है और उसे सहज कर उसकी जांच को सफल बनाते हैं। वे विकिरण सुरक्षा, उपकरण संचालन, छवि विश्लेषण और डेटा प्रबंधन में प्रशिक्षित होते हैं। उनका कार्य केवल तकनीकी नहीं बल्कि नैतिक भी है क्योंकि वे उस अदृश्य खतरे से रोगी को बचाते हैं, जो गलत विकिरण या असावधानी से उत्पन्न हो सकता है। यही कारण है कि विश्व स्वास्थ्य संगठन और इंटरनेशनल सोसाइटी ऑफ रेडियोग्राफर्स एंड रेडियोलॉजिकल टेक्नोलॉजिस्ट्स रेडियोग्राफी को उच्चतम पेशेवर मानकों और सतत् शिक्षा से जोड़ने पर बल देती हैं।

रेडियोग्राफी दिवस का सबसे प्रमुख उद्देश्य आम जनता में रेडियोलॉजी और रेडियोग्राफरों की भूमिका के प्रति जागरूकता फैलाना है। अधिकांश लोग अस्पताल में केवल डॉक्टर को देखते हैं परंतु डॉक्टर के निर्णय का आधा हिस्सा उन रिपोर्टों पर आधारित होता है, जो रेडियोग्राफर तैयार करते हैं। उनके बिना निदान अधूरा है। इमेजिंग तकनीकें निरंतर विकसित हो रही हैं, एआई आधारित निदान, 3डी इमेजिंग, रोबोटिक रेडियोलॉजी और विकिरण न्यूनकरण प्रणालियां भविष्य की दिशा तय कर रही हैं। इसलिए इस पेशे में सतत् शिक्षा और प्रशिक्षण अनिवार्य है। रेडियोग्राफर वे लोग हैं, जो 'अदृश्य को देखने' की क्षमता रखते हैं, वे शरीर के भीतर झांककर जीवन बचाने की राह दिखाते हैं। रोएंटजेन की खोज जिस 'अदृश्य दुनिया- को प्रकाश में लेकर आई, आज वही चिकित्सा विज्ञान का प्रकाश स्तंभ बन चुकी है। यह वह किरण है, जो हर रोग के अंधकार में जीवन की नई रोशनी जगाती है।

जयंती पर विशेष
कुमार सिद्धार्थ
लेखक स्तंभकार हैं।

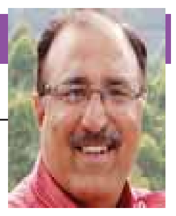

चंद्रकांत देवताले : मनुष्य की गरिमा और प्रतिरोध की कविता

चंद्रकांत देवताले का जन्म 7 नवम्बर 1936 को मध्यप्रदेश के बैतूल जिले के जौलखेड़ा गाँव में हुआ। गाँव उनके लिए सिर्फ जन्मभूमि नहीं था; वह कविता की मिट्टी, उसकी गंध और उसकी सांस था। खेत, पगडंडियाँ, घरों की धुँधली रोशनियाँ और काम से थके श्रमिकों के चेहरे—ये उनकी कविता में स्मृतियों की तरह नहीं, बल्कि जीवित अनुभव की तरह दर्ज हैं। हिंदी में एमए करने के बाद उन्होंने मुक्तिबोध पर पीएचडी की थी। उच्च शिक्षा के बाद वे इंदौर, उज्जैन, रतलाम के साहित्यिक परिवेश से जुड़े। इंदौर के सरकारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय में प्राध्यापक रहते हुए उनका कक्ष-संबंध केवल विषय को पढ़ाने का नहीं था। वे विद्यार्थियों से पूछा करते 'किस बात की आग है तुम्हारे भीतर?' यह प्रश्न जीवन और मनुष्यता के प्रश्न थे। वे चाहते थे कि युवा अपने समय को सिर्फ देखकर नहीं, पहचानकर जिएँ।

हिंदी कविता के परिदृश्य में चंद्रकांत देवताले उन कवियों में गिने जाते हैं जिनके यहाँ कविता जीवन के यथार्थ से चली आती है। वह जीवन जिसमें भूख है, श्रम है, थकावट है, स्मृतियाँ हैं, प्रेम है और मनुष्य होने की अनिवार्य पीड़ा भी। वे कविता को सजावट नहीं, बल्कि जगह लेने वाला जीवन-सत्य मानते थे। इसलिए उनकी कविताएँ हमें सीधे भीतर संबोधित करती हैं, जैसे कोई शांत स्वर धीरे-से कहे– 'देखो, दुनिया को, जो छूट रही है।'

गाँव से आया वह स्वर, जो शहर में खोया नहीं– चंद्रकांत देवताले का जन्म 7 नवम्बर 1936 को मध्यप्रदेश के बैतूल जिले के जौलखेड़ा गाँव में हुआ। गाँव उनके लिए सिर्फ जन्मभूमि नहीं था; वह कविता की मिट्टी, उसकी गंध और उसकी सांस था। खेत, पगडंडियाँ, घरों की धुँधली रोशनियाँ और काम से थके श्रमिकों के चेहरे—ये उनकी कविता में स्मृतियों की तरह नहीं, बल्कि जीवित अनुभव की तरह दर्ज हैं।

हिंदी में एमए करने के बाद उन्होंने मुक्तिबोध पर पीएचडी की थी। उच्च शिक्षा के बाद वे इंदौर, उज्जैन, रतलाम के साहित्यिक परिवेश से जुड़े। इंदौर के सरकारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय में प्राध्यापक रहते हुए उनका कक्ष-संबंध केवल विषय को पढ़ाने का नहीं था। वे विद्यार्थियों से पूछा करते 'किस बात की आग है तुम्हारे भीतर?' यह प्रश्न जीवन और मनुष्यता के प्रश्न थे। वे चाहते थे कि युवा अपने समय को सिर्फ देखकर नहीं, पहचानकर जिएँ।

कविता और सामाजिक चेतना– देवतालेजी की कविता में एक सीधी, बिना लाग-लपेट की भाषा है।वे अलंकार, भारी शब्दावली या जटिल संरचना पर भरोसा नहीं करते। उनकी कविता में भूख आँकड़ा नहीं रहती, वह एक चेहरा, एक देह, एक न बोल सकने वाली करुण पुकार बन जाती है–'मैं उस सड़क पर चलता हूँ/जहाँ भूख अपने आँसू चाटती है।' यह केवल दृश्य का वर्णन नहीं, बल्कि जीवन का दाह है।

उनकी कविताओं में स्त्री भी आती है–पर वह किसी भाव-भक्ति की मूर्ति बनकर नहीं, बल्कि संघर्ष और थकान से भरी मनुष्य की देह के रूप में। उनकी काव्य-दृष्टि किसी पर दया नहीं करती; वह बराबरी का हाथ बढ़ाती है।

देवताले जी की संपूर्ण काव्य-यात्रा सामाजिक चेतना की यात्रा है। वे किसी भी रूप में अन्याय को स्वीकार करने वालों में नहीं थे। उनकी किताबें–'हड्डियों में छिपा ज्वर' (1973), 'दीवारों पर खून से' (1975), 'लकड़बग्घा हँस रहा है' (1980), 'रोशनी के मैदान की तरफ़' (1982), 'आग हर चीज़ में बताई गई थी' (1987), 'पत्थर की बैंच' (1996), और 'इतनी पत्थर रोशनी' (2002), 'पत्थर फेंक रहा हूँ मैं' (2010) और 'उजाड़ में संग्रहालय' (2003) जैसी रचनाएँ–सिर्फ साहित्यिक उपलब्धियाँ नहीं हैं, बल्कि हमारे समय के दस्तावेज़ भी हैं।

उनकी बहुचर्चित कविता 'आकाश की जात' हिंदी कविता में एक ऊँचा पड़ाव है। यह कविता दरअसल सत्ता, समाज और विश्वास के जड़ बनते ढाँचे पर तीखा सवाल है– आखिर आकाश की जात क्या है? किस वर्ग, किस धर्म, किस सत्ता ने इसे बाँट रखा है? यह प्रश्न डर पैदा करता है। आकाश यदि सबका है तो मनुष्य क्यों बँटा और बाँटा गया? यह प्रश्न कविता में उठाना ही प्रतिरोध का आरंभ है। और देवताले इसे इस तरह कहते हैं कि पाठक बचकर नहीं जा सकता।

व्यक्तित्व: शांत स्वर, भीतर बेचैनी– देवतालेजी बातचीत में हमेशा सरल और संयत रहते थे। उनके भीतर कोई शोर नहीं था, लेकिन अन्याय के विरुद्ध एक धीमी, सघन आग थी। मैंने देवतालेजी के अवसान पर अपने स्मृतिलेख में लिखा था 'वे जब भी मिलते थे, हमेशा कुछ खोजने और समझने की बेचैनी साथ लाते थे। उनका साथ स्थिरता नहीं बल्कि जिज्ञासा और बेचैनी देता था।' यही बेचैनी उनकी कविता की जान है। मेरा सौभाग्यं रहा कि मैं देवताले जी का लगभग दो दशक सान्निध्यय और आत्मी यमा प्राप्त हुई। इंदौर/ उज्जैन में कार्य के दौरान उनकी गहरी नजदीकियां मिली, परिवार का अगाध स्नेह मिला। आज उनकी सीखें हमें लेखन कर्म में लगातार प्रेरणा देती है।

देवतालेजी एक तरफ जन-समस्याओं के कवि रहे हैं, तो दूसरी ओर उनकी कविताओं में गहन निजी स्वप्न और स्मृतियाँ भी हैं। वे माँ को याद करते हैं, पिता की थकान देखते हैं, बेटी को आशीष देते है, प्रेम को छूते हैं, और फिर लौटकर दुनिया को देखते हैं। उनकी संवेदना कभी भी केवल निजी नहीं रहती–वह हमेशा विश्व में फैलती है।

युवाओं के साथ उनका संवाद खुला और आत्मीय था। उनका स्विभाव युवाओं के साथ अधिक जंचता था। इंदौर, उज्जैन, रतलाम में साहित्यिक वातावरण में उनके साथ रहने वाले कई युवाओं को सान्निध्य और स्नेह प्राप्ता हुआ। उनमें आशुतोष दुबे, रवींद्र व्यास, विनीत तिवारी, सुशोभित शक्ता वत, आशीष दशोत्तार, पंकज शुक्लो, अरूण आदित्यक, नीलोत्पल, कुमार अंबुज,पवनकरण, अनिल करमेले, आशीष त्रिपाठी जैसे नाम उल्लेखनीय है। कई अवसरों पर महसूस/ अनुभव हुआ कि उनके भीतर न्याय के लिए बेचैनी, अमानवीयता के प्रति क्रोध, और मनुष्य के लिए अथाह गर्माहट थी। अनेक साथी अक्सर कहते हैं कि उनके साथ बैठना स्थिरता नहीं, सोचने और बदलने की बेचैनी देता था।वे जीवन और कविता को अलग नहीं मानते थे। उनके लिए कविता मनुष्य के पक्ष में खड़े होने की ज़मीन थी।

देवताले की कविताओं ने हिंदी संसार में एक गहरी दस्तक दी। वे स्थूलता में विश्वास नहीं रखते थे। उनकी दृष्टि सदा उस बारीक धूल को पकड़ने का प्रयास करती रही, जो हमारे समय और समाज को चुपचाप ढँकती जाती है। डॉ. जयकुमार 'जलज', डॉ. हरीश पाठक, रमाकुमार तिवारी जैसे उनके स्नेही स्मरणों में भी यह बात बार-बार आती है कि देवताले जी न सिर्फ एक बड़े कवि थे बल्कि एक बेहद आत्मीय, संवेदनशील और सहज मनुष्य भी।

घर की स्मृतियों से दुनिया की ओर– देवतालेजी की कविताओं में माँ आती है, पिता आते हैं, बेटी आती है–लेकिन वे निजी स्मृति बनकर नहीं ठहरते। वे जीवन की सार्वभौमिक अनुभूति का हिस्सा बन जाते हैं। वे लिखते हैं–'कविता लिखते हुए/मैं पृथ्वी के सबसे दुखी मनुष्य के साथ खड़ा होता हूँ।' यह सिर्फ कवि का कथन नहीं, उनकी काव्य-नैतिकता है।

आज उन्हें याद करना क्यों महत्वपूर्ण है?

हम ऐसे समय में हैं–जहाँ संवेदना की जगह कम होती जा रही है,जहाँ मनुष्य की पीड़ा अक्सर अदृश्य कर दी जाती है,और जहाँ भाषा धीरे-धीरे बाजार और तमाशे में बदल रही है। ऐसे समय में चंद्रकांत देवताले की कविता हमें याद दिलाती है कि–कविता सिर्फ पढ़ने की चीज़ नहीं, जीने की चीज़ है। वे हमें अपनी चुप्पी पर संदेह करना सिखाते हैं। वे बताते हैं कि अगर हम मनुष्य की ओर नहीं हैं, तो हम जीवन की ओर नहीं हैं।

चंद्रकांत देवताले को याद करना केवल कवि को याद करना नहीं है। उन्हें याद करना उस मनुष्य को बचाना है, जो हमारे भीतर है और लगातार दबाया जा रहा है। उनकी कविता आज भी कहती है–आकाश सबका है/मनुष्य भी सबका होना चाहिए। और शायद, यही स्मरण आज सबसे आवश्यक है।

खंडवा एवं खरगोन का मुकाबला पहुंचा रोमांचक स्थिति में, अंतर जिला अंडर क्रिकेट 15 टूर्नामेंट

धार। इंदौर डिविजनल क्रिकेट एसोसिएशन के निर्देश पर धार जिला क्रिकेट एसोसिएशन द्वारा अंतर जिला अंडर 15 टूर्नामेंट में खंडवा व खरगोन के बीच पहला सेमीफाइनल मुकाबला रोमांचक हो गया। टॉस जीतकर खंडवा ने पहले

बल्लेबाजी 48.5 ओवर में 102 रन बनाए खरगोन के बालक प्रणय ने चार व आदित्य ने दो विकेट लिए । खरगोन ने बैटिंग करते हुए 8 विकेट पर 84 रन बनाए। खरगोन के दो विकेट शेष है और मैच रोमांचक हो गया । आज प्रतियोगिता के तीसरे दिवस में मुख्य अतिथि के रूप में राजीव यादव, पूर्व जिला अध्यक्ष भाजपा एवं पूर्व जिला अध्यक्ष को ऑपरेटिव बैंक धार एवं कार्यक्रम की अध्यक्षता मयंक म्हाले उपाध्यक्ष धार नगर पालिका ने की। दोनों अतिथियों ने सभी खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर उन्हें शुभकामनाएं दी

वंदे मातरम् 150वां स्मरणोत्सव समारोह अत्यंत उत्साह और गरिमा के साथ मनाया

धार। राष्ट्रभक्ति और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण का अद्भुत उदाहरण पेश करते हुए शासकीय पीजी कॉलेज में 'वंदे मातरम्' 150वां स्मरणोत्सव समारोह' अत्यंत उत्साह और गरिमा के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रगीत

वंदे मातरम् की ऐतिहासिक यात्रा, इसके रचनाकार बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय के योगदान और स्वतंत्रता आंदोलन में इसकी प्रेरणादायी भूमिका को नई पीढ़ी तक पहुँचाना रहा।

समारोह में विधायक नीना वर्मा, और कालूसिंह ठाकुर, कलेक्टर प्रियंक मिश्रा और पुलिस अधीक्षक मयंक अवस्थी, महंत नीलेश भारती सहित अनेक जनप्रतिनिधि व अधिकारीगण शामिल हुए। सभी अतिथि नई दिल्ली में आयोजित केंद्रीय कार्यक्रम में वर्चुअली जुड़कर राष्ट्रीय स्तर पर मनाए जा रहे स्मरणोत्सव का हिस्सा बने। यह वर्चुअल सहभागिता राष्ट्रगीत के प्रति सम्मान और देशभर में आयोजित कार्यक्रमों की एकजुटता का प्रतीक बनी। सभी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के उद्बोधन को लाइव सुना। कार्यक्रम में सामूहिक वंदे मातरम् गान हुआ।जिसने वातावरण को देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत कर दिया। कार्यक्रम में स्वदेशी उत्पादों के अपनाने संबंधी शपथ भी दिलाई गई।

प्रथम 14 दिवस बाद 4020 रूपये तय हुआ सोयाबीन का मॉडल रेट, अब रोजाना तय होगा रेट

किसानों को मॉडल रेट और समर्थन मूल्य के अंतर की मिलेगी राशि

बैतूल। भावांतर योजना के तहत शुक्रवार को मॉडल रेट सार्वजनिक किये गये। इसमें सोयाबीन का मॉडल रेट 4020 रूपये प्रति क्विंटल रहा। जिससे उन किसानों को फायदा हुआ, जिनकी सोयाबीन उपज 4501 रूपये प्रति क्विंटल बिकी, वहीं कुछ ऐसे भी किसान रहे, जिन्हे उपज के दाम 3620 रूपये प्रति क्विंटल मिले। दरअसल कृषि उपज मंडी बडोरा में सोयाबीन के दाम 3620 रूपये से 4501 रूपये क्विंटल थे। बताया गया कि जिन किसानों ने 4501 रूपये क्विंटल सोयाबीन बेची, उनके खाते में समर्थन मूल्य 5328 रूपये के अंतर की राशि यानि 827 रूपये प्रति क्विंटल सिंगल क्लिक के माध्यम से खाते में हस्तांतरित होगी, वहीं उन किसानों को नुकसान हुआ जिनकी उपज, मंडी में 3620 रूपये से लेकर 4020 रूपये के बीच बिकी, क्योंकि मॉडल रेट और समर्थन मूल्य के बीच की राशि ही किसानों को मिलेगी। कृषि विभाग के अनुसार, मॉडल भाव भोपाल से तय किये जाते है। मंडी प्रशासन के अनुसार प्रदेश स्तर पर मॉडल रेट प्रथम 14 दिन बाद जारी किये गये। अब रोजाना मॉडल रेट जारी किये जायेंगे और मॉडल रेट के अंतर की राशि किसानों को मिलेगी।

528 किसानों से खरीदी सोयाबीन– जिले में 24 अक्टूबर से भावांतर योजना में सोयाबीन की खरीदी शुरू हुई। जानकारी के अनुसार करीब 14 दिन में कृषि उपज मंडी बडोरा में 528 किसानों ने 13097 क्विंटल सोयाबीन की उपज बेची। जिसमें से 152 किसानों ने भावांतर योजना के तहत सोयाबीन बेची, वहीं 376 किसानों ने बिना भावांतर योजना के उपज बेची है। बता दे कि जिले में भावांतर योजना के तहत सोयाबीन बेचने के लिए 8237 किसानों ने पंजीयन करवाया है। जिसमें से अभी तक मात्र 152 किसानों ने ही भावांतर योजना के तहत सोयाबीन बेची है। अधिकारियों का कहना है कि बारिश के कारण फसल कटाई में देरी हुई है। अब जैसे-जैसे मौसम खुल रहा है, किसान फसल की कटाई कर रहे है। जल्द ही सोयाबीन की अच्छी आवक होने लगेगी।

कम दाम के बावजूद भी मंडी में उपज बेच रहे किसान– मंडियों में फिलहाल सोयाबीन के दाम समर्थन मूल्य 5328 रुपए प्रति क्विंटल से कम मिल रहे हैं, फिर भी कई किसान खुले बाजार में ही फसल इसलिए बेच रहे, क्योंकि यहां नकद भुगतान और कागजी झंझट भी कम है। बताया गया कि 152 पंजीकृत किसानों और 376 गैर-पंजीकृत किसानों ने 13097 क्विंटल सोयाबीन बेची है। मंडी में फिलहाल सोयाबीन लगभग 3675 रूपये से 4611 रुपए क्विंटल के बीच बिक रही है, जबकि समर्थन मूल्य 5328 रुपए प्रति क्विंटल तय है। किसानों के मुताबिक भावांतर में उपज बेचने पर कई दस्तावेज मांगे गये, जबकि मंडियों में सीधे नकद भुगतान मिल जाता है, वहीं योजना में पैसा आने में महीना लग जाता है, मंडी में तुरंत नकद मिल रहा है।

बारिश से सोयाबीन को हुआ नुकसान– इस बार बारिश से सोयाबीन की फसल को भारी नुकसान हुआ है। जब फसल पककर तैयार हुई और कई जगह कटाई भी शुरू हो गई थी। इसी बीच तेज बारिश हो गई। जिससे कई खेतों में पानी भर गया और फसल चौपट हो गई। किसानों ने बताया कि पहले पीला मोजेक से फसल पीली पड़ गई थी। जो थोड़ी बहुत फसल बची थी, वह बारिश ने खराब कर दी। खेतों में पानी भर गया था। जिससे कई दिन तक कटाई नहीं हो सकी। अधिक नमी के कारण फसलें खराब हो गई। सोयाबीन का दाना दागी हो गया। जिससे उन्हें फसलों का अच्छे दाम नहीं मिल पाये। कृषि विभाग से मिली जानकारी के अनुसार जिले में 93,300 हेक्टेयर सोयाबीन का रकबा था।

इनका कहना है –

किसानों के खाते में मॉडल रेट और समर्थन मूल्य के अंतर की राशि हस्तांतरित होगी। प्रथम 14 दिव के बाद अब मॉडल रेट रोज पोर्टल पर अपलोड होगा।

– डॉ. आनंद बडोनिया,
उप संचालक, कृषि विभाग बैतूल

मंडी में 528 किसानों से 13097 क्विंटल सोयाबीन की खरीदी की गई है। जिसमें 152 किसानों का भावांतर योजना में पंजीयन था। 7 नवंबर को सोयाबीन का मॉडल रेट 4020 रूपये तय हुआ है।

– प्रदीप उइके, एसआई,
कृषि उपज मंडी बडोरा बैतूल

राष्ट्र की चेतना है वंदे मातरम् गीत : श्री उईके

वंदे मातरम् की 150वीं वर्षगांठ पर भव्य आयोजन

बैतूल। राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम् की 150वीं वर्षगांठ के अवसर पर जिला मुख्यालय स्थित कलेक्ट्रेट परिसर में एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में केंद्रीय जनजातीय कार्य मंत्री दुर्गादास उईके मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों द्वारा मां सरस्वती की प्रतिमा पर दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। इसके बाद उपस्थित सभी लोगों ने सुमधुर और लयबद्ध स्वर में वंदे मातरम का सामूहिक गायन किया, जिससे वातावरण देशभक्ति से ओत-प्रोत हो उठा। इसके पश्चात नई दिल्ली में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मुख्य आतिथ्य में आयोजित कार्यक्रम का लाइव प्रसारण किया गया, जिसे सभी के द्वारा देखा गया। इस अवसर पर जन अभियान परिषद के

उपाध्यक्ष मोहन नागर, विधायक आमला डॉ. योगेश पंडाग्रे, सुधाकर पवार, नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती पार्वती बाई बारस्कर, उपाध्यक्ष जिला पंचायत हंसराज धुर्वे, कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी, पुलिस अधीक्षक वीरेंद्र जैन, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अक्षत जैन सहित सभी विभागों के अधिकारी, कर्मचारी और बड़ी संख्या में स्कूली छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे। केंद्रीय राज्य मंत्री श्री उइके ने समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि वंदे मातरम गीत नहीं अपितु राष्ट्र की चेतना को चैतन्य कराने वाला और मातृभूमि के प्रति श्रद्धा, भक्ति, आध्यात्मिकता की त्रिवेणी धारा प्रवाहित करने वाला यह महामंत्र है। उन्होंने बताया कि यह मंत्र जब लिखा गया तब भारत की जनसंख्या मात्र 9 करोड़ थी। आज भारत की जनसंख्या 140 करोड़ है। वंदे मातरम गीत ने सभी व्यक्ति में मातृभूमि के प्रति भक्ति भाव को बनाए रखा है। यह भूमि ऋषियों, साधकों, तपस्वियों की भूमि है। मातृभूमि के प्रति जो श्रद्धा का जागरण है, इसकी वजह से हमने गुलामी की दास्ता से मुक्ति पाकर राष्ट्र के रूप में हमारा अस्तित्व बना पाया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कुशल नेतृत्व में यह राष्ट्र लगातार विकास के पथ पर अग्रसर है। मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद के उपाध्यक्ष व राज्यमंत्री दर्जा मोहन नागर ने कहा कि वंदे मातरम केवल राष्ट्रगीत नहीं है, अपितु संपूर्ण राष्ट्र को एकात्मता और एक सूत्र में पिरोने वाला मंत्र है। राष्ट्रगीत वंदे मातरम ने देश की आजादी में महत्वपूर्ण योगदान दिया। हमारे क्रांतिकारियों ने वंदे मातरम गीत, नारों के बूते ही आंदोलन का बिगुल फूंका था और वंदे मातरम् कहते-कहते अपने प्राणों की आहुति दी थी। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के 2047 तक विकसित भारत संकल्प अभियान में राष्ट्रगीत वंदे मातरम का योगदान है। बैतूल कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी ने बताया कि 7 नवंबर को राष्ट्रगीत वंदे मातरम की 150 वां वर्षगांठ समारोह पूर्वक आयोजित किया गया।

राष्ट्रीय गीत 'वंदे मातरम्' के 150 गौरवशाली वर्ष पूर्ण होने पर भाजपा द्वारा आयोजित कार्यक्रम में सैकड़ों लोगों ने किया सामूहिक गान

वंदे मातरम् गीत भारत के हर एक राष्ट्रभक्त के दिलों में बसता है : विक्रम वर्मा

धार। राष्ट्रीय गीत वन्दे मातरम् के 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के आह्वान पर सम्पूर्ण देश में इसका स्मारणोत्सव मनाया जा रहा है यह कार्यक्रम तीन चरणों में पुरे वर्ष भर चलेगा। इसी तारतम्य में भारतीय जनता पार्टी धार द्वारा पूर्व केंद्रीय मंत्री वरिष्ठ नेता विक्रम वर्मा के मुख्य आतिथ्य, भाजपा जिला अध्यक्ष महंत निलेश भारती, विधायक नीना वर्मा की उपस्थिति में सामूहिक वन्दे मातरम सामूहिक गान का आयोजन भाजपा जिला कार्यालय के समीप किया गया। सामूहिक वन्दे मातरम् गान में बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकर्ताओ, मातृ शक्ति एवं युवा शामिल हुए। सर्वप्रथम अतिथियों द्वारा भारत माता के चित्र पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम आरंभ किया। वन्दे मातरम् जिला संयोजक राखी राय, सह संयोजक सुनील मोदी, डॉ बल बहादुर सिंह ने अतिथियों स्वागत किया। इस अवसर पर 'विकसित भारत-विकसित मध्यप्रदेश' के संकल्प को नई गति देने हेतु उपस्थित जनों को 'स्वदेशी' की शपथ दिलाई।

मुख्य अतिथि पूर्व केंद्रीय मंत्री विक्रम वर्मा ने कहा कि वंदे मातरम गीत भारत के हर एक राष्ट्रभक्त के दिलों में बसता है। वंदे मातरम् को आज 150 वर्ष पूर्ण हो रहे है, वन्दे मातरम, जो माँ भारती की आराधना का अमर गीत है, इस गीत ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के हर चरण में देशभक्ति की लौ प्रज्वलित की, हर भारतवासी के हृदय में एकता, साहस और समर्पण की शक्ति जगाई। इस राष्ट्रगीत के रचयिता बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय जी थे जिन्होनें 'भारत' की भावना को शब्दों में ढालकर पूरे देश में आत्मगौरव का संचार किया। 'वंदे मातरम्' भारत की भक्ति और शक्ति की सामूहिक शाश्वत अभिव्यक्ति का एक भावपूर्ण स्वरूप है।

भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ने बताया कि राष्ट्रीय गीत 'वंदे मातरम्' सामूहिक गान कार्यक्रम में भाजपा नगर मंडल अध्यक्ष विशाल निगम व जयराज देवड़ा, पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष ममता जोशी ,मनीष प्रधान, देवेंद्र सोनोने ,पूनमचन्द फकीरा ,अनिल जैन, नरेश राजपुरोहित ,शिव पटेल, दीपक बिडकर समेत भाजपा पदाधिकारी नगर कार्यकर्ता मौजूद रहे। संचालन राखी राय व आभार मीना दुबे ने माना।

खेल शरीर के साथ ही मन, मस्तिष्क और आत्मा को भी संतुलित रखते हैं : केंद्रीय कृषि मंत्री

ग्राम धामंदा में सांसद खेल महोत्सव के तहत खेल प्रतियोगिता आयोजित

सीहोर (निप्र)। जिले के ग्राम धामंदा में सांसद खेल महोत्सव 2025 के अंतर्गत खेल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान और राज्य मंत्री श्री करणसिंह वर्मा शामिल हुए। इस अवसर पर उन्होंने शहीद नायक श्री नितेश कुमार की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें नमन किया और पुष्पांजलि अर्पित की। कार्यक्रम में केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान ने कहा कि खेल जीवन का अभिन्न हिस्सा है। खेल केवल शरीर को स्वस्थ नहीं बनाते बल्कि मन, मस्तिष्क और आत्मा को भी संतुलित रखते हैं। उन्होंने कहा कि जब कोई युवा खेल मैदान में पसीना बहाता है, तो वह केवल अपनी जीत के लिए नहीं बल्कि अपने व्यक्तित्व के निर्माण के लिए संघर्ष करता है। खेलों से व्यक्ति में अनुशासन, संयम, परिश्रम और टीम भावना जैसे गुणों का विकास होता है, जो जीवन के हर क्षेत्र में सफलता का आधार बनते हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत आज 'फिट इंडिया मूवमेंट' और 'खेलो इंडिया' जैसे अभियानों के माध्यम से युवाओं को नई दिशा दे रहा है। देश भर में खेलों की नई संस्कृति विकसित हो रही है, जिसमें गांवों से लेकर शहरों तक हर प्रतिभा को आगे आने का अवसर मिल रहा है। उन्होंने कहा कि हमारा उद्देश्य है कि हर गांव से खिलाड़ी निकलें, हर बच्चा खेलों से जुड़े और भारत खेल के क्षेत्र में भी निरंतर आगे बढ़े। इस अवसर पर राज्य मंत्री श्री करणसिंह वर्मा ने कहा कि खेल जीवन का सबसे सुंदर अध्याय है। उन्होंने कहा कि खेल हमें सिखाते हैं कि जीत और हार दोनों को समान भाव से स्वीकार करना चाहिए। खेलों से न केवल शरीर मजबूत होता है बल्कि मन भी दृढ़ होता है। एक खिलाड़ी कभी निराश नहीं होता, वह हर हार से सीखता है और अगली बार और बेहतर प्रदर्शन करने का संकल्प लेता है। यही भावना समाज और राष्ट्र निर्माण की असली शक्ति है। राज्य मंत्री श्री वर्मा ने कहा कि खेल युवाओं को अनुशासन, एकता और परिश्रम की राह दिखाते हैं। उन्होंने कहा कि आज का युवा अगर मैदान में समय देगा तो कल वह किसी भी क्षेत्र में अवश्य चमकेगा। उन्होंने कहा कि हमारे देश के युवाओं में असीम ऊर्जा और प्रतिभा है, जरूरत केवल अवसर और दिशा की है। सांसद खेल महोत्सव जैसे आयोजन इसी दिशा में एक बड़ी

यह थे उपस्थित

कार्यक्रम में भाजपा जिला अध्यक्ष श्री नरेश मेवाड़ा, राजगढ़ भाजपा जिला अध्यक्ष श्री राकेश शर्मा, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती रचना सुरेंद्र मेवाड़ा, पूर्व विधायक श्री रघुनाथ सिंह, इछावर नगर परिषद अध्यक्ष श्री डॉक्टर वर्मा, श्री गौरव सन्नी महाजन, श्री रविराज सिंह, श्री कमल गुप्ता, खिलाड़ी एवं बड़ी संख्या में जनप्रतिनिधि, खिलाड़ी एवं ग्रामीण उपस्थित थे।

पहल है। केंद्रीय कृषि मंत्री एवं राज्य मंत्री ने इस अवसर पर विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को सम्मानित किया। उल्लेखनीय है कि भारत सरकार के फिट इंडिया मूवमेंट तथा खेल एवं युवा कल्याण विभाग, मध्यप्रदेश द्वारा सांसद खेल महोत्सव 2025 का आयोजन किया जा रहा है।

माता शबरी कन्या शिक्षा परिसर पवारखेड़ा में युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय की प्रमुख सचिव द्वारा किया गया पौधारोपण

नर्मदापुरम (निप्र)। नर्मदापुरम के माता शबरी कन्या शिक्षा परिसर पवारखेड़ा में सोमवार को मेरा युवा भारत का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय की प्रमुख सचिव डॉक्टर पल्लवी जैन गोविल उपस्थित थी। कार्यक्रम में डॉ. पल्लवी जैन गोविल ने एक पेड़ मां के नाम अभियान के अंतर्गत पौधा रोपण किया। उन्होंने छात्राओं से मेरा युवा भारत पोर्टल के बारे में संवाद किया और उनकी जिज्ञासा का समाधान किया। कार्यक्रम में विद्यालय की छात्राओं ने आदिवासी नृत्य और योग कला का प्रदर्शन किया तथा अतिथियों ने पुरस्कार और प्रशस्ति पत्र वितरित किए और पोस्टर विमोचन भी किया गया। इस अवसर पर मेरा युवा भारत मध्यप्रदेश की राज्य निदेशक सुश्री तारा शास्त्री, क्षेत्रीय निदेशक राष्ट्रीय सेवा योजना अशोक कुमार श्रोती, मेरा युवा भारत जिला युवा अधिकारी मोनिका चौधरी, जिला युवा खेल अधिकारी उमा पटेल, क्षेत्र संयोजक आदिवासी विकास विभाग, ज्ञान सागर येलकेकर सोशल एक्टिविस्ट नर्मदापुरम आश्रम शाला तिलोटिया, प्राचार्य कन्या शिक्षा परिसर एवं समस्त स्टाफ तथा युवा वालंटियर उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन चंद्रेश मालवीय शिक्षक द्वारा किया गया।

संक्षिप्त समाचार

ई-ऑफिस प्रक्रिया कार्य प्रणाली से प्रशिक्षण

विदिशा (निप्र)। ई-दक्ष प्रशिक्षण केंद्र विदिशा में यूनिकोड टाइपिंग, ई-ऑफिस डिशिंग साथ सीआरयू एवं डिजिलॉकर प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य शासकीय कार्यालयों में कार्यरत कर्मचारियों को डिजिटल कार्यप्रणाली में दक्ष बनाना है। प्रशिक्षण में प्रतिभागियों को यूनिकोड टाइपिंग, ई-ऑफिस में फाइलिंग एवं डिशिंग प्रक्रिया, तथा डिजिलॉकर के उपयोग संबंधी जानकारी व्यवहारिक रूप से दी गई। प्रशिक्षण का संचालन सी.आर.यू. (सेंट्रलाइज्ड यूनिट) टीम द्वारा किया गया। कार्यक्रम में प्रशिक्षकों ने बताया कि डिजिलॉकर के माध्यम से शासन के विभिन्न दस्तावेजों को सुरक्षित रूप से डिजिटल स्वरूप में रखा जा सकता है, वहीं ई-ऑफिस प्रणाली से फाइल प्रक्रिया अधिक पारदर्शी एवं समयबद्ध बनती है। प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण को उपयोगी एवं कार्य-संवर्धक बताया।

ग्राम स्वास्थ्य एवं पोषण दिवस पर किया गया 638 बच्चों का टीकाकरण

सीहोर (निप्र)। स्वास्थ्य विभाग द्वारा ग्राम स्वास्थ्य पोषण दिवस के तहत जिलेभर में विभिन्न स्वास्थ्य संस्थाओं में शिविर लगाकर गर्भवती महिलाओं एवं बच्चों के विभिन्न बीमारियों से बचाव के लिए टीकाकरण किया गया। जिले में 04 नवंबर को आयोजित शिविरों में शून्य से एक वर्ष की आयु के 470 बच्चों तथा एक वर्ष से अधिक आयु के 168 बच्चों का टीकाकरण किया गया। इसके साथ ही 65 गर्भवती महिलाओं का स्वास्थ्य परीक्षण भी किया गया। स्वास्थ्य विभाग द्वारा प्रत्येक मंगलवार एवं शुक्रवार को ग्राम स्वास्थ्य एवं पोषण दिवस के रूप में मनाया जाता है, जिसके तहत शिविर लगाकर बच्चों के टीकाकरण के साथ ही बच्चों एवं गर्भवती महिलाओं को अन्य स्वास्थ्य सेवाएं भी उपलब्ध कराई जाती हैं।

एनक्यूएएस की टीम द्वारा किया गया जिला चिकित्सालय सहित अन्य स्वास्थ्य संस्थाओं का एनक्यूएएस आंकलन

सीहोर (निप्र)। राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्रणाली संसाधन केंद्र (एनएचएसआरसी) दिल्ली की टीम द्वारा सीहोर जिला चिकित्सालय और ग्राम उलझावन एवं खामलीखेड़ा के आयुष्मान आरोग्य मंदिरों का निरीक्षण कर एनक्यूएएस आंकलन किया गया है। निरीक्षण के दौरान एनएचएसआरसी की टीम के सदस्यों द्वारा एनक्यूएएस प्रमाणन के लिए अस्पतालों में संचालित सेवाओं एवं संपूर्ण केंद्रों की मानक जांच की गई तथा सेवाओं और सुविधाओं की गुणवत्ता का परीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान सिविल सर्जन डॉ उमेश श्रीवास्तव एवं प्रबंधक श्रीमती रीना पाटीदार सहित स्टॉफ के सदस्य उपस्थित थे।

जलाशयों से जुड़ी नहरों की सफाई और मरम्मत का हो रहा कार्य

बैतूल (निप्र)। जल संसाधन संभाग मुलताई एवं बैतूल के अंतर्गत आने वाले जलाशयों से जुड़ी नहरों की सफाई और मरम्मत का कार्य युद्ध स्तर पर किया जा रहा है। विभागीय अधिकारियों से प्राप्त जानकारी के अनुसार लगभग 95 प्रतिशत कार्य पूर्ण हो चुका है और शेष कार्य भी शीघ्र पूर्ण कर लिया जाएगा। रबी सीजन में सिंचाई के लिए निर्मित जलाशयों की नहरों से संबंधित कमांड क्षेत्रों में किसानों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए मांग आधारित एवं संयुक्त बैठकों के माध्यम से पानी छोड़ा जाने का निर्णय लिया जाएगा। इससे लाभान्वित किसानों को सिंचाई के लिए समय पर पानी उपलब्ध कराया जाएगा।

कलेक्टर ने एक मुश्त जांच कराई पेट्रोल पंपों की

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता ने मंगलवार को विदिशा जिले की भौगोलिक सीमाओं में संचालित सभी प्रकार के पेट्रोल पंपों का औचक निरीक्षण राजस्व अधिकारियों से एक साथ कराया गया है। सभी एसडीएम, तहसीलदार और नायब तहसीलदारों ने अपने अपने कार्यक्षेत्रों में संचालित पेट्रोल पंपों पर प्रदाय सुविधाओं की मौके पर जांच की गई है और पालन प्रतिवेदन जिला कार्यालय को उपलब्ध कराया गया है। जिसके अनुसार सिर्फ चार पेट्रोल पंपों में नियमानुसार तमाम प्रबंध ओके पाए गए हैं।

महिला सशक्तिकरण के तहत छात्राओं ने निकाली जागरूकता रैली

बैतूल (निप्र)। शासकीय पॉलीटेक्निक महाविद्यालय में बुधवार को महिला सशक्तिकरण के तहत विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम भारतीय महिला क्रिकेट टीम द्वारा वर्ष 2025 महिला वर्ल्ड कप जीतने की ऐतिहासिक उपलब्धि की खुशी में आयोजित किया गया।

बदलता दौर - गोबर से सृजन, स्वावलंबन की ओर

विदिशा (निप्र)। मध्यप्रदेश के 70वें स्थापना दिवस 'अभ्युदय मध्यप्रदेश' के अवसर पर विदिशा जिले ने नवाचार और स्वावलंबन का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया है।

कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता के मार्गदर्शन में जिले की 4पी विजन - प्रोडक्शन, प्रोसेसिंग, पैकेजिंग एवं प्रमोशन की अवधारणा को मूर्त रूप देते हुए 'गोमयशाला' पहल ने प्रदेश स्तर पर अपनी विशेष पहचान बनाई है। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता के प्रेरक मार्गदर्शन में आत्मनिर्भरता की दिशा में एक सशक्त कदम इस पहल के अंतर्गत कुआंखेड़ी, जिला विदिशा की संचालिका एवं गोमयशिल्पी श्रीमती सोनम नामदेव द्वारा लाल परेड ग्राउंड, भोपाल में गोमयशिल्प की भव्य प्रदर्शनी लगाई गई। यह प्रदर्शनी स्थापना दिवस के आकर्षण का केंद्र बनी रही। गोबर से निर्मित पर्यावरण-अनुकूल कलाकृतियाँ, दीप, मूर्तियाँ और घरेलू उपयोगी सामग्री ने न केवल आगंतुकों को आकर्षित किया, बल्कि राज्य स्तर पर विदिशा जिले की सृजनशीलता की छाप भी छोड़ी।

प्रदेश के विभिन्न जिलों से आए आगंतुकों एवं अधिकारियों ने इस प्रदर्शनी की सराहना करते हुए इसे 'बदलते दौर का प्रतीक' बताया। यह पहल ग्रामीण महिला सशक्तिकरण, अपशिष्ट प्रबंधन और सतत विकास की दिशा में एक प्रेरक कदम सिद्ध हो रही है।

निर्वाचन आयोग के निर्देशों के अनुरूप एसआईआर के मैपिंग कार्य को पूर्ण कराएं

कलेक्टर तथा जिला निर्वाचन अधिकारी श्री विश्वकर्मा ने एसआईआर प्रक्रिया के संबंध में बीएलओ को दिए निर्देश

रायसेन (निप्र)। जिले में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण- 2025 एसआईआर की प्रक्रिया प्रारंभ हो गई है। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री अरूण कुमार विश्वकर्मा द्वारा तहसील कार्यालय रायसेन में बीएलओ के साथ एसआईआर की कार्यवाही के संबंध में विस्तृत चर्चा करते हुए उन्हें एसआईआर के मैपिंग कार्य को निर्वाचन आयोग के निर्देशों के अनुरूप पूरी गंभीरता से सम्पन्न कराने के लिए निर्देशित किया। उन्होंने बीएलओ से कहा कि मतदाताओं को एसआईआर प्रक्रिया की जानकारी देते हुए उनसे निर्धारित गणना फार्म भरवाया जाए। उल्लेखनीय है कि जिले में एसआईआर की प्रारंभ हो गई है तथा बीएलओ द्वारा 04 नवम्बर से मतदाताओं के घर-घर जाकर सर्वे किया जा रहा है। यह प्रक्रिया 04 दिसम्बर तक जारी रहेगी। विशेष गहन पुनरीक्षण के दौरान तीन बार बीएलओ द्वारा घर-घर जाकर सर्वे किया जाएगा। बीएलओ द्वारा मतदाता को गणना पत्रक प्रदान किया जाएगा जिसमें मतदाता को अपना नाम या अपने परिजन का नाम पिछले एसआईआर में मिलान या लिंक करने में मदद करेगा। मतदाता या बीएलओ मिलान/लिंकिंग के लिए पिछले एसआईआर के ऑल इंडिया डाटाबेस की सहायता ले सकते हैं। सर्वे उपरांत मतदाता सूची के प्रारूप का प्रकाशन 9 दिसंबर को किया जाएगा। ऐसे निर्वाचकों को नोटिस जारी किए जाएंगे जिनके नामों का पिछले एसआईआर से मिलान/लिंकिंग नहीं हो सका है। इसके लिए दावा आपत्तियों के आवेदन 9 दिसंबर से 9 जनवरी 2026 तक लिए जाएंगे। उनकी मतदाता के रूप में पात्रता सुनिश्चित करने के लिए संबंधित दस्तावेजों का सत्यापन 9 दिसंबर से 31 जनवरी 2026 तक किया जाएगा। पिछले एसआईआर से पहले उनकी स्थिति जानने के लिए सुनवाई की जाएगी। कोई भी मतदाता या मान्यता प्राप्त राजनैतिक दल का बीएलए दावा या आपत्ति प्रस्तुत कर सकता है। दस्तावेजों के सत्यापन के उपरांत 07 फरवरी 2026 को फाइनल मतदाता सूची का प्रकाशन होगा।

पीएम आवास योजना में संतोषजनक प्रगति नही होने पर एक आवास कलस्टर प्रभारी निलंबित

एक आवास प्रभारी ब्लॉक समन्वयक सहित तीन आवास कलस्टर प्रभारियों का वेतन काटने के निर्देश

कलेक्टर श्री विश्वकर्मा की अध्यक्षता में पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग की समीक्षा बैठक सम्पन्न

रायसेन (निप्र)। कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में आयोजित बैठक में कलेक्टर श्री अरूण कुमार विश्वकर्मा द्वारा पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग के कार्यों तथा योजनाओं के क्रियान्वयन की विस्तृत समीक्षा की गई। उन्होंने प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण 2024-25 की किश्तवार और आवास निर्माण प्रगति की कलस्टरवार और जनपदवार समीक्षा करते हुए औबेदुल्लागंज जनपद क्षेत्र अंतर्गत प्रगति संतोषजनक नहीं होने पर पीसीओ को निलंबित कर दिया है तथा सिलवानी क्षेत्र के चार पीसीओ को नोटिस जारी किया है। बैठक में कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण 2024-25, प्रधानमंत्री आवास योजना समग्र सीडिंग की जानकारी, स्वच्छ भारत मिशन, सामुदायिक स्वच्छता परिसर की निर्माण की जानकारी, नवीन पंचायत भवन, अटल ग्राम सेवा सदन, आंगनवाड़ी भवन, शौचालय निर्माण की प्रगति, मनरेगा के एक बगिया मां के नाम परि योजना की हितग्राहीवार समीक्षा करने के साथ ही जल गंगा संवर्धन अभियान के द्वारा किए गए कार्यों की सीसी की प्रगति की भी जानकारी ली। कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने प्रधानमंत्री आवास में जनपद पंचायत औबेदुल्लागंज में आवास प्रभारी ब्लॉक समन्वयक के कार्य प्रगति निम्न होने के कारण सात दिवस का वेतन काटने के निर्देश दिए। इसी प्रकार औबेदुल्लागंज आवास क्लस्टर प्रभारी चिकलोद, उमरावगंज बारसपुर की एक-एक वेतन वृद्धि रोकने के नोटिस जारी करने के निर्देश दिए एक माह में कार्य में प्रगति न होने पर वेतन वृद्धि रोकने की कार्यवाई की जाएगी। बैठक में सिलवानी में आवास प्रभारी की सात दिवस का वेतन रोकने एवं कलस्टर प्रभारी प्रतापगढ़ की प्रगति कम होने के कारण निलम्बन की कार्यवाई की गई। सियरमऊ आवास कलस्टर प्रभारी की प्रगति निम्न होने के कारण आवास कलस्टर प्रभारी को भी नोटिस जारी किया गया। जनपद पंचायत उदयपुरा के मुख्य कार्यपालन अधिकारी की योजनाओं में प्रगति कम होने के कारण एक वेतन वृद्धि रोकने का नोटिस जारी किया गया, तो वहीं केवलाझिर ग्राम पंचायत में निर्माण कार्यों में की गई लापरवाही पर नाराजगी व्यक्त कर निर्माण कार्यों की जांच के निर्देश जारी किए गए। कलेक्टर श्री विश्वकर्मा के निर्देश पर प्रभारी जिला पंचायत सीईओ श्री मनोज उपाध्याय द्वारा संबंधितों को नोटिस जारी किए जा रहे हैं। कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने प्रधानमंत्री आवास योजना की पहली, दूसरी तथा तीसरी किश्त के भुगतान की जानकारी लेते हुए सभी जनपद सीईओ तथा संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि आवास निर्माण कार्य को समयावधि में पूर्ण कराया जाए। साथ ही जनपदवार समग्र सीडिंग के कार्य की समीक्षा कर तीव्रता से कार्य पूर्ण कराने के निर्देश दिए। उन्होंने जनमन योजना में निर्माणाधीन प्रधानमंत्री आवासों को पूर्ण कराने के लिए भी कहा। कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने ''एक बगिया मां के नाम'' परि योजना की जनपदवार समीक्षा करते हुए पौधे लगाने में मजदूरी कार्य और जियो टैग फोटो के कार्य में सौ प्रतिशत प्रगति पूर्ण कार्य कराने हेतु जनपद सीईओ को निर्देशित किया। उन्होंने कहा की सभी जनपद सीईओ इस कार्य को गंभीरता से सम्पादित कराएं। बैठक में प्रभारी जिला पंचायत सीईओ श्री मनोज उपाध्याय, सहायक कलेक्टर श्री अंकित कुमार जैन तथा श्री कुलदीप पटेल, कार्यपालन यंत्री ग्रामीण यंत्री की सेवा परियोजना अधिकारी मनरेगा, जनपद सीईओ, लेखा अधिकारी मनरेगा, डीसी एसबीएम, जिला आवास प्रभारी, डीपीएम एनआरएलएम जनपद स्तर से बीसी एसबीएम आवास बीपीएम एनआरएलएम के साथ सहायक यंत्री, उप यंत्री, अतिरिक्त कार्यक्रम अधिकारी मनरेगा तथा सहायक लेखा अधिकारी उपस्थित रहे।

लम्पी वायरस से बचाव के लिए पशुओं का कराएं टीकाकरण

सीहोर (निप्र)। प्रदेश के झाबुआ, रतलाम, बैतूल, बड़वानी, सिवनी, सागर एवं भोपाल जिलों से पशुओं में लम्पी स्किन डिसीज की जानकारी मिली है। इस संबंध में पशुपालन विभाग द्वारा लम्पी वायरस से बचाव एवं रोगग्रस्त पशुओं के उपचार के संबंध में एडवाइजरी जारी की है। संचालक पशुपालन एवं डेयरी डॉ. पी. एस. पटेल ने बताया कि इस रोग से बचाव के लिए पशुओं को प्रतिबंधात्मक टीका अवश्य लगवाएं। पशुपालक अपने पशुओं में लम्पी स्किन डिसीज के लक्षण दिखाई देने पर निकटतम पशु औषधालय/पशु चिकित्सालय से तत्काल संपर्क कर बीमार पशुओं का उपचार कराएं।

स्वस्थ पशुओं को बीमार पशुओं से अलग रखें। स्वस्थ पशुओं का टीकाकरण कराएं। पशु रखने के स्थान की सफाई रखें एवं पशुओं के शरीर पर परजीवी जैसे किल्ली, मक्खी, मच्छर आदि को नियंत्रित करने के उपाय करें। डॉ. पटेल ने बताया कि पशुपालन विभाग द्वारा लम्पी वायरस की चुनौती से निपटने के लिए हर संभव उपाय किए जा रहे हैं। संक्रमण से बचाव के लिए टीकों की पर्याप्त व्यवस्था की गई है, मुफ्त टीकाकरण किया जा रहा है एवं पशु पालकों को रोग से बचाव के संबंध में आवश्यक परामर्श दिया जा रहा है। प्रदेश में पशुपालन एवं डेयरी विभाग द्वारा माह अप्रैल 2025 से कुल 41.5 लाख पशुओं को एल.एस.डी. रोग प्रतिबंधात्मक टीका लगाया जा चुका है। मुफ्त टीकाकरण कार्य निरंतर जारी है।

लम्पी स्किन डिसीज : लम्पी पशुओं में होने वाली एक वायरस जनित बीमारी है, जो कि संक्रामक होती है। यह बीमारी मुख्यतः गोवंशीय पशुओं में वर्षा के दिनों में फैलती है। इस रोग की शुरूआत में हल्का बुखार दो से तीन दिन के लिये रहता है, उसके बाद पूरे शरीर की चमड़ी में गठानें निकल आती हैं। ये गठानें गोल उभरी हुई आकृति की होती हैं। इस बीमारी के लक्षण मुंह, गले, श्वास नली तक फैल जाते हैं, साथ ही पैरों में सूजन, दुग्ध उत्पादकता में कमी, गर्भपात, बांझपन और कभी-कभी मृत्यु भी हो जाती है। यह रोग मच्छर, काटने वाली मक्खी एवं किल्ली आदि से एक पशु से दूसरे पशुओं में फैलती है। अधिकतर संक्रमित पशु 2-3 सप्ताह में ठीक हो जाते हैं, किन्तु दूध की उत्पादकता में कमी कुछ समय बनी रह सकती है। पशुपालन विभाग द्वारा लम्पी स्किन बीमारी की रोकथाम एवं निगरानी हेतु भोपाल में राज्य स्तरीय कंट्रोल रूम की स्थापना की गई है, जिसका दूरभाष नंबर - 0755-2767583 है।

केंद्रीय राज्यमंत्री श्री उईके आकाशवाणी के लोकप्रिय कार्यक्रम 'हमारा बैतूल' में हुए शामिल

10 नवंबर 2025 को रात्रि 8.15 बजे जनजातीय गौरव दिवस के संदेश का होगा प्रसारण

बैतूल (निप्र)। जिले में जनहितकारी योजनाओं की जानकारी अब लोगों तक सीधे उनके जनप्रतिनिधि की जुबानी पहुंचेगी। केंद्रीय राज्यमंत्री एवं बैतूल-हरदा-हरसूद लोकसभा क्षेत्र के सांसद श्री दुर्गादास उइके ने आकाशवाणी बैतूल के स्टूडियो में 4 नवम्बर 2025 को आकाशवाणी के लोकप्रिय कार्यक्रम 'हमारा बैतूल' के लिए जनजातीय गौरव दिवस के विषय में रिकॉर्डिंग दी है। इस विशेष प्रसारण को श्रोता 10 नवम्बर 2025 को एफएम 103.1 मेगाहर्ट्ज तथा न्यूज़ऑनएयर ऐप पर रात्रि 8:15 से 8:45 बजे तक सुन सकेंगे। कार्यक्रम में श्री उइके ने जनजातीय उत्थान और आगामी योजनाओं पर विस्तार से चर्चा की है। इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री श्री उइके ने केंद्र सरकार की विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं, विशेष रूप से जनजातीय कार्य मंत्रालय की योजनाओं, जनजातीय गौरव दिवस तथा बैतूल जिले के सर्वांगीण विकास पर विस्तारपूर्वक चर्चा की।

उन्होंने कहा कि यह हम सभी के लिए गर्व का विषय है कि 15 नवम्बर 2024 से 15 नवम्बर 2025 तक भगवान बिरसा मुंडाजी की 150वीं जयंती वर्ष को पूरे देश में जनजातीय गौरव वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। इस भेंटवार्ता के दौरान केंद्रीय मंत्री श्री उइके ने जनजातीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के योगदान को जन-जन तक पहुंचाने के प्रयास, जनजातीय संस्कृति, कला, परंपरा और खेलों के संरक्षण व प्रोत्साहन, जनजातीय महिलाओं के नेतृत्व व उद्यमिता विकास के लिए योजनाएं, भारतीय ज्ञान परंपरा, औषधीय पौधों और योग की दिशा में कार्य, सिकल सेल एनीमिया उन्मूलन के लिए चल रहे प्रयास, जनजातीय पर्यटन सर्किट और होम स्टे की संभावनाएं, जनजातीय युवाओं को रोजगार और प्रशिक्षण से जोड़ने की पहल, जनजातीय कला एवं बुनाई को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहुंचाने की योजनाएं, बैतूल जिले के कोरकू और गोंड जनजातियों के उत्थान के लिए विकास योजनाओं पर आवश्यक जानकारी दी।

कार्यालय परिसर का निरीक्षण कर किया पौधारोपण

कार्यक्रम के अंत में केंद्रीय मंत्री श्री उइके ने अपनी मातृभाषा गोंडी में लोकगीत की पंक्तियां भी प्रस्तुत कीं, जिससे वातावरण आत्मीय हो उठा। इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री श्री उइके ने कार्यालय परिसर की स्वच्छता का निरीक्षण किया। इसके बाद उन्होंने परिसर में पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। इस अवसर पर केंद्र के नोडल अधिकारी श्री भूमरकर, कार्यक्रम प्रमुख सचिन भागवत, प्रशासन अधिकारी प्रशांत नारनवरे, प्रवीण वीर सहित आकाशवाणी बैतूल के समस्त अधिकारी एवं कर्मचारी एवं कार्यक्रम प्रस्तुतकर्ता उपस्थित रहे।

जनपद पंचायत के आदेश से 'लाड़लियों' से जबरन वसूली!

मकान नंबर प्लेट लगाने के नाम पर ग्रामीणों से मांगे जा रहे पैसे

भोपाल। मध्य प्रदेश के उमरिया जिले के करकेली और पाली जनपद पंचायत से चौंकाने वाला मामला सामने आया है। यहां की लाड़ली बहनें ठगों के निशाने पर आ गई हैं। ठग युवक ग्रामीणों के घर-घर जाकर सर्वे और नंबर प्लेट लगाने के नाम पर वसूली कर रहे हैं। जनपद पंचायत के सीईओ ने दूसरे प्रदेशों से आए युवकों को काम सौंपने के साथ अथॉर्टी लेटर भी दिया है। मामले का खुलासा होने के बाद उमरिया के सीनियर अधिकारी जांच करने और उचित कार्रवाई की बात कर रहे हैं। दरअसल, पाली जनपद पंचायत और करकेली जनपद पंचायत में आने वाले गांवों में वसूली का खेल जारी है। आदिवासी इलाके के हर घर से युवक ग्रामीणों से 50-50 रुपए लेकर मकान नंबर प्लेट लगा रहे हैं। मामूली सी टीन की पत्ती पर केन्द्र और प्रदेश

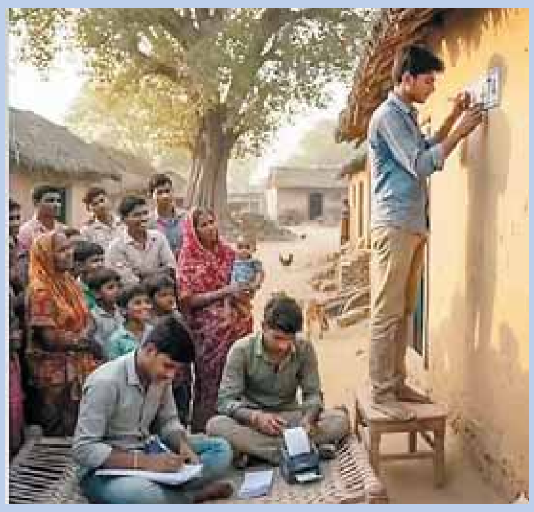

सरकार के तरफ से चलाई जा रही समस्त सरकारी योजनाओं की जानकारी है। इस वसूली की शिकायतें जिला प्रशासन और जिला पंचायत सीईओ तक पहुंच गई हैं। वहीं, ग्रामीणों ने युवकों से पूछताछ की तो उन्होंने सीईओ का जारी लेटर दिखाया।

कलेक्टर तक को सूचना

जनपद सीईओ के जारी किए लेटर की जानकारी कलेक्टर, सीईओ जिला पंचायत, थाना प्रभारी, परियोजना अधिकारी महिला एवं बाल विकास, बीएमओ, एसडीएम को दी गई है। ताकि सभी अधिकारी सूचित हो सकें। वहीं, दूसरे प्रदेश से आने वाले जिस वेंडर को अधिकृत किया गया, वह दबंगई के साथ ग्रामीणों के घर-घर जाकर प्रति व्यक्ति 50/- की राशि वसूल कर जबरन घरों में नंबर प्लेट लगा रहे हैं।

युवकों की इस दबंगई पर कुछ जगरूक ग्रामीण विवाद शुरू कर दिये और कहने लगे कि हमारा घर, मतदाता सूची मे नाम सभी कुछ पुराना है। अभी दो साल पहले भी हम लोगों के घरों में नंबर प्लेट जबरन लगाया गया था तो क्या अब फिर से मकान नंबर बदल गया। जनपद पंचायत करकेली के धवइझर गांव में पंचायत की मदद से 20-25 मकानों में यह प्लेट लगाई गई। यहां प्रति लाड़ली बहना हितग्राही से यह शुल्क वसूली की गई है। मामला तूल पकड़ने पर ये लोग सीईओ का एक पत्र दिखाकर लोगों को भ्रमित कर रहे हैं। पत्र में दावा किया गया है कि इस नंबर प्लेट से हितग्राही को शासकीय योजना का लाभ मिलने में सुविधा होगी। दूसरी तरफ कांग्रेस नेता इसे जनता के अधिकारों पर कुठाराघात करार दे रहे हैं। एक से अधिक पहचान पत्र के बाद भी शुल्क लेकर नंबर प्लेट लगाना विधि विरुद्ध कहा जा रहा है। सीनियर अधिकारियों से जांच करवाते हुए कार्रवाई की मांग कर रहे हैं।

जनपद सीईओ ने कही जांच की बात

वहीं, लेटर की बात सामने आने पर जिला पंचायत सीईओ अभय सिंह ओहरिया ने कहा कि अभी लाड़ली बहना का कोई सर्वे नहीं चल रहा है। ना ही ऐसा कोई आदेश दिया गया है, जो भी लोग गांव में एक्टिविटी कर रहे हैं वो गलत है। यह बात मेरे संज्ञान में आई है और इसका पता लगा रहा हूं। जो भी भ्रम फैला रहे हैं उनके खिलाफ एक्शन लिया जाएगा। उन्होंने जनपद सीईओ के जारी लेटर के भी जांच की बात कही है। नंबर प्लेट लगाने के लिए दूसरे प्रदेश के कुछ लोगों का एक गिरोह जिले में घूम रहा है। ये लोग मुख्यालय से दूरदराज के गांवों को चुनकर इस काम को अंजाम दे रहे हैं। धवइझर जैसे आदिवासी बहुल पिछड़े गांवों में अधिकतर लोग कम जागरूक हैं। ऐसे में ये लोग शासकीय योजनाओं का लालच देकर अवैध उगाही कर रहे हैं। करकेली जनपद में 110 ग्राम पंचायतें और 353 गांव हैं। इन गांवों में लगभग 41,517 से अधिक हितग्राही लाड़ली बहना के हैं। यदि समय पर इस सर्वे की सत्यता सामने नहीं आई तो 2075850 रुपए जनपद की लाड़ली बहनों को चुकाना पड़ सकता है। ग्रामीणों के घरों मे जो मकान नंबर प्लेट लगाई जा रही है, उनमें एमपी सरकार की स्वच्छ गांव, स्वस्थ गांव, वृक्ष लगाएं-जल बचाए, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ और लाड़ली बहना योजना आई है, घर-घर में खुशियां लाई हैं, जैसे स्लोगन लिखे हुए हैं।

10 लाख स्ट्रीट डॉग्स, इंदौर में सबसे ज्यादा हमले

भोपाल में जिस जगह से पकड़े, वापस वहीं छोड़े, हर रोज 50 नसबंदी

भोपाल। मध्यप्रदेश में 10 लाख से ज्यादा स्ट्रीट डॉग्स हैं। अकेले इंदौर, भोपाल, उज्जैन, ग्वालियर और जबलपुर में ही इनकी संख्या 6 लाख से अधिक है। इन्हीं शहरों में आवारा कुत्तों के हमले भी सबसे ज्यादा हुए हैं। नेशनल हेल्थ मिशन की रिपोर्ट में ये बात सामने आ चुकी है। दरअसल, सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को आवारा पशुओं को लेकर महत्वपूर्ण निर्णय सुनाया। इसमें आवारा कुत्तों से जुड़े एक मामले में कहा कि राजस्थान हाईकोर्ट का फैसला पूरे देश में लागू होगा। सभी स्टेट और नेशनल हाईवे से आवारा पशु हटाए जाएं।

आवारा कुत्तों से निपटने के लिए अस्पतालों, स्कूलों और कॉलेज कैंपस में बाड़ लगाएं। सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले के बाद मध्यप्रदेश में स्ट्रीट डॉग्स को लेकर पड़ताल की गई। जिसमें कई बातें सामने आईं। आंकड़ों पर नजर दौड़ाए तो साल 2022 में एमपी में स्ट्रीट डॉग्स की संख्या 10 लाख 9 हजार आंकी गई थी। भोपाल में डेढ़ लाख से ज्यादा डॉग्स हैं। साल 2024 में यहां 19 हजार 285 लोगों को कुत्तों ने काटा था। वहीं,

इस साल जनवरी से जून के बीच 10 हजार 795 लोग कुत्तों का शिकार बने।

इंदौर में 30 हजार 304, ग्वालियर में 11 हजार 902, जबलपुर में 13 हजार 619, उज्जैन में 10 हजार 296 और उज्जैन में 1131 लोग शिकार हुए थे। दरअसल, नेशनल हेल्थ मिशन ने राष्ट्रीय रैबीज नियंत्रण कार्यक्रम के तहत मध्यप्रदेश के 6 शहरों को शामिल किया है। वहीं, वर्ष 2030 तक रैबीज फ्री शहर बनाने के लिए विस्तृत कार्य योजना मांगी गई थी। इसमें डॉग बाइट के मामले सामने आए थे।

हकीकत...अस्पताल, स्कूल-कॉलेज में भी स्ट्रीट डॉग्स

सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद जब भोपाल के कुछ इलाकों में नजर दौड़ाई गई। जेपी जिला अस्पताल में ही 20 से ज्यादा आवारा कुत्ते नजर आए। ऐसे में मरीज व उनके परिजनों के लिए यह खतरनाक साबित हो सकते हैं। भोपाल नगर निगम शहर में 3 एबीसी सेंटर्स संचालित कर रहा है, जो कजलीखेड़ा, आदमपुर और अरवलिया में है। वहीं, हर साल 22 हजार नसबंदी भी की जाती है, लेकिन नसबंदी के बाद आवारा कुत्तों को उसी जगह छोड़ दिया जाता है, जहां से वे पकड़े गए हो। हर रोज एवरेज 50 नसबंदी रोज हो रही है।

ठंड में ब्रीडिंग का समय, इसलिए बढ़ जाते हैं मामले

भोपाल के पूर्व उप संचालक पशु चिकित्सा डॉ. अजय रामटेके ने बताया कि ज्यादा ठंड और गर्मी में कुत्ते बेचैन हो जाते हैं। ठंड में ब्रीडिंग का समय रहता है। वे अपने बच्चों को बचाने के लिए राह चलते लोगों को काटने दौड़ पड़ते हैं। वहीं, गर्मी में कुत्ते अपने शरीर का टेम्प्रेचर मेंटेन नहीं कर पाते हैं। इसलिए वे सांस के जरिए अपने शरीर का टेम्प्रेचर सामान्य रखते हैं। यदि खाने-पीने में कोई कमी है तो उनकी बेचैनी और भी बढ़ जाती है। इससे वे आक्रामक व्यवहार करने लगते हैं।

निगम में डेप्युटेशन पर आए अफसरों की बन रही सूची

मीटिंग में मुद्दा उठने के बाद अपर आयुक्त रिलीव, अब दूसरे अधिकारी भी रडार पर

भोपाल। भोपाल नगर निगम में डेप्युटेशन यानी, प्रतिनियुक्ति पर आए अधिकारियों की लिस्ट तैयार की जा रही है। हाल ही में निगम परिषद की मीटिंग में यह मुद्दा उठा था। इसके बाद अपर आयुक्त देवेंद्र सिंह चौहान को रिलीव भी कर

दिया गया। अब दूसरे अधिकारी रडार पर हैं। उन्हें भी उनके मूल विभाग में भेजने की तैयारी है। बता दें कि 30 अक्टूबर को नगर निगम परिषद की बैठक में हुई थी। इसमें डेप्युटेशन अधिकारियों के मुद्दे पर कांग्रेस और बीजेपी के पार्षद एकजुट नजर आए थे। कांग्रेस पार्षद अजीज उद्दीन ने अपर आयुक्त चौहान और एकता अग्रवाल के रिलीव न होने पर आपत्ति जताई थी। उन्होंने कहा था कि इनका ट्रांसफर तीन महीने पहले हो चुका है, फिर भी उन्हें रिलीव नहीं किया गया, जो गलत है। एमआईसी मेंबर जितेंद्र शुक्ला ने भी अजीज उद्दीन की बात का समर्थन किया। इसके बाद सभी कांग्रेस और बीजेपी पार्षद सहमत हो गए और कहा, भोपाल नगर निगम क्या धर्मशाला है? हर कोई यहां आना चाहता है। जरूरत से ज्यादा अपर आयुक्त हो गए हैं। पार्षदों ने सुझाव दिया कि निगम में प्रतिनियुक्ति प्रथा को खत्म किया जाए। इसके बाद अध्यक्ष किशन सूर्यवंशी ने कमिश्नर संस्कृति जैन को व्यवस्था बनाने का निर्देश दिया। अध्यक्ष ने कहा था कि सदन की इच्छा है कि तत्काल रिलीव किया जाए। इसके बाद अपर आयुक्त चौहान को रिलीव कर दिया गया। वहीं, अग्रवाल को लेकर प्रक्रिया की जा रही है।

पशुपालन विभाग के अधिकारी की भी शिकायत- इसी बीच निगम में प्रतिनियुक्ति पर आए पशुपालन विभाग के अधिकारी डॉ. पीपी सिंह को लेकर भी शिकायत हुई है। शिकायत के मुताबिक, डॉ. सिंह की मूल पदस्थापना पशु रोग प्रयोगशाला (पशुपालन विभाग) में है। उन्हें कुछ समय के लिए नसबंदी सत्यापन कार्यक्रम हेतु अस्थायी रूप से नगर निगम में ड्यूटी दी गई थी।

एमपी के पुलिस ट्रेनिंग स्कूलों में पढ़ाई जाएगी गीता

एडीजी ट्रेनिंग के निर्देश-भगवद गीता पाठ सेशन शुरू करें

कहा-इससे नेक-अनुशासित जीवन जीने की सीख मिलेगी

भोपाल। मध्य प्रदेश के पुलिस ट्रेनिंग स्कूलों में प्रशिक्षण ले रहे नए आरक्षकों को अब भगवद गीता का पाठ भी पढ़ाया जाएगा। पुलिस की ट्रेनिंग विंग ने राज्य के आठों ट्रेनिंग सेंटरों को निर्देश दिया है कि रंगरूटों के लिए गीता पाठ सेशन आयोजित किए जाएं, ताकि उन्हें 'नेक और अनुशासित जीवन' जीने की सीख मिल सके। यह आदेश एडिशनल डायरेक्टर जनरल ऑफ पुलिस (ट्रेनिंग) राजा बाबू सिंह ने 3 नवंबर को जारी किया है। राज्य के इन ट्रेनिंग स्कूलों में जुलाई से लगभग 4,000 युवक-युवतियां नौ महीने की कांस्टेबल ट्रेनिंग ले रहे हैं। जुलाई में ट्रेनिंग सेशन की शुरुआत के समय एडीजी सिंह ने रामचरितमानस का पाठ कराने के निर्देश दिए थे। उनका कहना था कि इससे रंगरूटों में अनुशासन और

चरित्र निर्माण की भावना विकसित होगी। एडीजी ने आदेश में कहा कि- भगवद गीता हमारा शाश्वत ग्रंथ है। इसका नियमित पाठ निश्चित रूप से हमारे ट्रेनी को एक नेक जीवन जीने में मार्गदर्शन करेगा और उनका जीवन बेहतर होगा। बताया जाता है कि एडीजी राजा बाबू सिंह ने 2019 में ग्वालियर रेंज के पुलिस प्रमुख रहते हुए भी इसी तरह का अभियान चलाया था और स्थानीय जेलों में बंद कैदियों सहित अन्य लोगों को गीता की प्रतियां वितरित की थीं। मध्यप्रदेश पुलिस भर्ती में नए कॉन्स्टेबल ट्रेनिंग के दौरान रामायण पाठ करेंगे। ये सलाह पुलिस मुख्यालय के एडीजी (प्रशिक्षण) राजाबाबू सिंह ने दी है। पुलिस में सिलेक्ट होकर आए नए जवान इस सुझाव को अच्छा मान रहे हैं।

आजीविका के नये मौके और राजस्व संग्रहण बढ़ा

● देवड़ा बोले-जीएसटी सुधारों का मप्र में हुआ व्यापक प्रभाव ● उत्पादों की कीमतें 10 प्रतिशत तक कम हुई

भोपाल। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में लागू किए गए नए जीएसटी सुधारों का मध्यप्रदेश के व्यापार, उद्योग और एमएसएमई सेक्टर पर व्यापक सकारात्मक प्रभाव नजर आने लगा है। इन सुधारों से राज्य के विभिन्न उत्पादों में 6 से 10 प्रतिशत तक कीमतों की कमी दर्ज की गई है। इससे न केवल उद्योगों की लागत घटी है, बल्कि रोजगार, विकास और आजीविका के नए अवसर भी तेजी से बढ़े हैं। राज्य ने वित्तीय वर्ष 2025-26 के सितम्बर माह तक निर्धारित लक्ष्य रू. 8,212 करोड़ के विरुद्ध रू. 8,293.01 करोड़ का राजस्व प्राप्त किया, जो लक्ष्य से 0.99 प्रतिशत अधिक है। वर्तमान वर्ष में सितम्बर 2025 तक प्राप्त राजस्व, गत वर्ष की तुलना में 16.88 प्रतिशत अधिक है। यह संकेत है कि जीएसटी सुधारों ने राज्य की आर्थिक गतिविधियों को गति दी है। उप मुख्यमंत्री एवं वित्त मंत्री श्री जगदीश देवड़ा ने कहा कि- 'प्रधानमंत्री श्री मोदी के मार्गदर्शन में किए गए जीएसटी सुधारों ने व्यापार जगत, उद्योगों और कारीगरों के लिए नई ऊर्जा दी है। कर दरों में की गई कमी से उत्पाद सस्ते हुए हैं, जिससे उपभोक्ताओं को राहत और व्यापारियों को प्रतिस्पर्धात्मक लाभ मिला है। इन सुधारों से आत्मनिर्भर भारत और विकसित भारत 2047 के लक्ष्य की दिशा में मध्यप्रदेश अग्रसर हो रहा है।'

उद्योग, हस्तशिल्प और कारीगरी पर जीएसटी सुधारों का प्रभाव- इंदौर सेंव, लौंग सेंव, मिक्सचर और चिवड़ा जैसे उत्पादों का जीआई टैग प्राप्त केंद्र इंदौर, लगभग 1 लाख प्रत्यक्ष और 2.5 लाख अप्रत्यक्ष रोजगार देता है। इसका निर्यात मध्य पूर्व, ब्रिटेन और अमेरिका तक होता है। नमकीन पर जीएसटी 12 प्रतिशत से घटाकर 5 प्रतिशत करने से उत्पादों में 6-7 प्रतिशत तक सस्ती होने की प्रवृत्ति देखी गई है। इससे घरेलू बिक्री में वृद्धि और निर्यात की प्रतिस्पर्धात्मकता में सुधार हुआ है। मध्यप्रदेश, भारत का दूसरा सबसे बड़ा सोयाबीन उत्पादक राज्य होने के साथ कृषि-मशीनीकरण का प्रमुख केंद्र भी है। इंदौर, भोपाल, देवास, ग्वालियर, उज्जैन और विदिशा में एमएसएमई क्लस्टर द्वारा सीड ड्रिल, थ्रेशर, हार्वेस्टर और सिंचाई पंप बनाए जाते हैं।

लाख के बर्तन और बेल धातु शिल्प

टीकमगढ़, झाबुआ और अलीराजपुर में 5,000-6,000 कारीगर लाख के बर्तन और बेल धातु की वस्तुएं बनाते हैं। बेल धातु पर जीएसटी 28 प्रतिशत से घटाकर 18 प्रतिशत और लाख के बर्तनों पर 12 प्रतिशत से घटाकर 5 प्रतिशत करने से कीमतों में 6-10 प्रतिशत की कमी आई है, जिससे घरेलू मेलों में बिक्री और निर्यात दोनों में बढ़ोतरी हुई है। बालाघाट, मंडला और डिंडोरी में हजारों जनजातीय परिवार बांस-बेंत के शिल्प में लगे हैं। लगभग 12,000 प्रत्यक्ष और 25,000 अप्रत्यक्ष महिला कारीगरों को काम मिला है। जीएसटी 12 प्रतिशत से घटाकर 5 प्रतिशत करने से इन उत्पादों में 6 प्रतिशत की कीमत कमी आई है, जिससे इको-फ्रेंडली उत्पादों के निर्यात को प्रोत्साहन मिला है।

लकड़ी, लाख के खिलौने, टेराकोटा और मिट्टी के शिल्प

मुख्य रूप से बुधनी (सीहोर), उज्जैन और ग्वालियर में तैयार यह पारंपरिक शिल्प 2000-2500 कारीगरों को रोजगार देता है। जीएसटी 12 प्रतिशत से घटाकर 5 प्रतिशत करने से कीमतों में 6 प्रतिशत तक कमी आई है, जिससे ये पर्यावरण-अनुकूल खिलौने प्लास्टिक के विकल्प के रूप में लोकप्रिय हो रहे हैं। जापान और यूरोप जैसे निर्यात बाजारों में इनकी मांग बढ़ी है। मंडला, बैतूल, उज्जैन और टीकमगढ़ में 5,000-6,000 ग्रामीण कारीगर, ज्यादातर महिलाएं, टेराकोटा खिलौनों और सजावटी वस्तुओं का निर्माण करती हैं। जीएसटी 12 प्रतिशत से घटाकर 5 प्रतिशत करने से ये उत्पाद लगभग 6 प्रतिशत सस्ते हुए हैं, जिससे त्योहारी सीजन में बिक्री में वृद्धि हुई है। बैतूल और बालाघाट के आदिवासी क्षेत्रों में 5,000 कारीगर डोकरा कला में कार्यरत हैं। जीएसटी 12 प्रतिशत से घटाकर 5 प्रतिशत करने से उत्पादों की कीमत में 6 प्रतिशत की कमी आई है, जिससे मशीन निर्मित मूर्तियों के मुकाबले यह शिल्प फिर से लोकप्रिय हुआ है।

तगड़ी सिक्योरिटी, कदमताल करते मंत्री और खास श्वान

पांच साल से बिना अन्न के जीवित हैं दादा गुरु, विज्ञान के लिए है अचंभा

भोपाल। विज्ञान के लिए अचंभा माने जाने वाले दादा गुरु की नर्मदा परिक्रमा खरगोन जिले में प्रवेश कर गई। इस परिक्रमा का मूल उद्देश्य नर्मदा नदी के संरक्षण के लिए लोगों में जागरूकता फैलाना और पर्यावरण की रक्षा करना है। समर्थ भैया जी सरकार या अवधूत समर्थ दादा गुरु नर्मदा नदी के संरक्षण और संवर्धन के लिए जाने जाते हैं। दावा है कि वह पिछले कई सालों से केवल नर्मदा जल पर रहकर अन्न का सेवन किए बिना नर्मदा परिक्रमा करते हैं। उनका मानना है कि प्रकृति और नर्मदा का जल उन्हें आध्यात्मिक और शारीरिक ऊर्जा प्रदान करते हैं । उनका जन्म क्षेत्र मध्य प्रदेश का जबलपुर एरिया बताया जाता है। उनके शिष्यों में मध्य प्रदेश के कैबिनेट मंत्री प्रहलाद पटेल कैलाश विजयवर्गीय, राजेंद्र शुक्ला और अभिनेता आशुतोष राणा भी

शामिल हैं।

पांच साल से निराहर हैं दादा गुरु- दादा गुरु पांच साल से निराहर हैं। उन्होंने इस दौरान अन्न का एक दाना भी ग्रहण नहीं किया है। इसके बावजूद वह फिट हैं। साथ ही अधिकांश समय वह पदयात्रा ही करते रहते हैं। नर्मदा नदी के क्षेत्रों में बड़ी संख्या में उनके अनुयायी हैं। वह लगातार नर्मदा के संरक्षण के लिए काम कर रहे हैं। नर्मदा के किनारों पर पेड़ों को लगाना। गांव के लोगों को जागरूक करना। साथ ही गांव में नर्मदा मां की महिमा को सुनाते हैं।

नर्मदा जल पीकर हैं जीवित- दादा गुरु पांच सालों से सिर्फ नर्मदा जल पीकर जीवित हैं। वह प्रवचन के दौरान एक घूंट भी पानी नहीं पीते हैं। पूरे दिन में सिर्फ नर्मदा नदी का एक लीटर शुद्ध जल पीते हैं। इस जल को पीकर वह पूरी तरह से फिट हैं। नर्मदा जल पर कोई कैसे जीवित रह सकता है। इसे लेकर इन पर शोध भी हुआ है। मध्य प्रदेश सरकार ने उनकी असाधारण शारीरिक सहनशक्ति पर वैज्ञानिक शोध को भी मंजूरी दी थी। नेताजी सुभाष चंद्र बोस मेडिकल कॉलेज जबलपुर की विशेषज्ञ टीम ने उन पर 22 से 29 मई 2024 के बीच रिसर्च कर 124 पन्नों की रिपोर्ट भी प्रस्तुत की थी। रिपोर्ट में उपवास संबंधी मामूली बदलाव पाया गया। साथ ही दादा गुरु की अद्वितीय प्रतिक्रिया, शारीरिक अनुकूलन और अत्यधिक सहनशक्ति को इसकी वजह बताया गया। वहीं, दादा गुरु चौथी बार नर्मदा परिक्रमा कर रहे हैं। वह तीन बार कर चुके हैं। इस दौरान उनके साथ एक कुत्ता सिद्धु भी साथ रहता है।

लाखों किलोमीटर चल चुके हैं पैदल

दादा गुरु अधिकांश समय पैदल ही चलते हैं । उनके शरीर पर वस्त्र भी नहीं होता है । वह सिर्फ लंगोट में होते हैं । बताया जाता है कि पांच लाख किलोमीटर से अधिक वह पैदल चल चुके हैं । नर्मदा परिक्रमा के दौरान भी वह पैदल ही चलेंगे । इसके साथ ही दादा गुरु संबंधी यह मुद्दा कैबिनेट की बैठक में चर्चा हेतु भी आया था । कैबिनेट मंत्री प्रहलाद पटेल के मुताबिक रिपोर्ट को देश-विदेश के शोधकर्ताओं और संस्थाओं को भेजा जायेगा ताकि दादा गुरु की प्रकृति आधारित जीवन पर वैज्ञानिक अध्ययन कराया जा सके । वहीं, उपमुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ल ने कहा कि इस शोध को आगे बढ़ना चाहिए ताकि यह समझा जा सके कि कोई मनुष्य इतने लंबे समय तक बिना भोजन के भी रहकर सामान्य रूप से कैसे कार्य कर सकता है ।

4 लाख 45 हजार से अधिक स्मार्ट मीटर स्थापित

भोपाल सहित पूरे कंपनी कार्यक्षेत्र में अभियान जारी

भोपाल। केन्द्र सरकार की रिवेम्प्ड डिस्ट्रीब्यूशन सेक्टर स्कीम (आरडीएसएस) योजना के अंतर्गत मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा कंपनी कार्यक्षेत्र में स्मार्ट मीटर लगाने का काम त्वरित गति से चल रहा है। जहां स्मार्ट मीटर लगाए जा चुके हैं, वहां पर समय पर बिलिंग तथा रीडिंग हो रही है। साथ ही दिन के टैरिफ में 20 प्रतिशत की छूट भी मिलनी शुरू हो गई है। कंपनी कार्यक्षेत्र के भोपाल, नर्मदापुरम, ग्वालियर एवं चंबल संभाग के जिलों में अब तक 4 लाख 45 हजार 644 स्मार्ट मीटर स्थापित किए जा चुके हैं। इनमें सर्वाधिक भोपाल शहर वृत्त में 2 लाख, 52 हजार 772 स्मार्ट मीटर स्थापित किए जा चुके हैं। कंपनी ने कहा है कि स्मार्ट मीटर लगने से उपभोक्ताओं को बेहतर सेवाएं, सटीक बिलिंग और ऊर्जा दक्षता में सुधार हो रहा है। स्मार्ट मीटर लगाने का काम समय-सीमा में पूर्ण करने के लिए कंपनी की टीमें लगातार कार्य में जुटी हुई हैं। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी ने स्मार्ट मीटर के फायदे बताते हुए कहा है कि स्मार्ट मीटर से रियल टाइम डेटा प्राप्त किया जा सकता है, जिससे उपभोक्ताओं को सटीक और समय पर बिलिंग सुनिश्चित की जा रही है। कंपनी ने बताया कि जहां-जहां भी स्मार्ट मीटर स्थापित किए जा चुके हैं वहां पर बिलिंग तथा रीडिंग निर्धारित समय पर हो रही है, इससे सभी उपभोक्ता संतुष्ट हैं। नए टैरिफ आर्डर के अनुसार स्मार्ट मीटर उपभोक्ताओं को अब खपत के आधार पर दिन के टैरिफ में 20 प्रतिशत की छूट भी दी जा रही है। अक्टूबर माह का बिल जो कि नवंबर माह में जारी हुआ है।